

Vol. I
No. 16



Tuesday
16th March, 1951

HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES Official Report

PART II—PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS AND ANSWERS

CONTENTS

| | Page |
|---|-----------------|
| General Budget—Demands for Grants | 975 |
| Demand No. 8—Charges on account of Motor Vehicles | Rs. 10,22,000 |
| Demand No. 16—Elections | Rs. 5,85,500 |
| Demand No. 18—Administration of Justice | Rs. 43,94,000 |
| Demand No. 19—Jails and Convict Settlements | Rs. 25,82,000 |
| Demand No. 20—Police | Rs. 2,28,89,000 |
| Demand No. 61—Road Transport Dept. | Rs. 2,58,88,000 |
| Demand No. 75—Evacuee Department | Rs. 1,58,500 |
| Demand No. 80—Grant for Rehabilitation of Displaced Persons | Rs. 2,50,000 |
| Demand No. 81—Welfare of Ex-Criminal Tribes | Rs. 55,000 |
| Demand No. 98—Capital Outlay on Road Transport Scheme | Rs. 86,22,000 |

Note: *at the beginning of the speech denotes conformation not received.

THE HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY

Tuesday, the 16th March, 1954.

The House met at Half Past Two of the Clock.

[MR. SPEAKER IN THE CHAIR]

PART II

Questions and Answers

(See Part I)

General—Budget Demands for Grants

شری جی۔ راجہ رام (آرمور)۔ مسٹر اسپیکر سر۔ قبل اسکے کہ ڈیمانڈس پر چرچا شروع کیجائے میں ایوان کے ملاحظہ میں ایک چیز لانا چاہتا ہوں۔ وہ یہ کہ ہم ایوان میں اس وقت پولس کے ڈیمانڈس پر بحث کر رہے ہیں۔ پولس کا عوام کے ساتھ جو رویہ ہے اور پولس کی کیا کارگزاریاں ہیں اس بارے میں کئی آنرہبل ممبرس نے وضاحت کی ہے۔ اسکے باوجود ہم کل سے دیکھ رہے ہیں کہ اب تک تین مرتبہ پولس نے معصوم امن سے رہنے والوں پر

Mr. Speaker : What is it that the hon. Member is speaking about ?

Shri G. Rajaram : I am speaking about the police lathi charge.

Mr. Speaker : How is it relevant here ? Is the hon. Member speaking on the Demands concerned ?

Shri G. Rajaram : I want just to place before the hon. Minister certain matters.

کل رات کے 11 بجے سے دو مرتبہ لٹھی چارج ہوا۔ کئی ورکرس گرفتار کئے گئے . . .

Shri Ratanlal Kotecha (Patoda) : Is the hon. Member speaking on the demands ?

مسٹر اسپیکر۔ کیا آپ ڈیمانڈس پر تقریر کر رہے ہیں ؟

شری جی - راجہ رام - میں تقریر نہیں کر رہا ہوں - میں یہ کہہ رہا ہوں کہ چونکہ ہم پولس ڈیمانڈس پر بحث کر رہے تھے اسلئے ہمارے لئے کوئی موقع نہیں تھا کہ ہم ایوان میں پولس اور پولس کے ڈیمانڈس پر بحث کیجائے اور دوسری طرف پولس اپنا اتیاچار جاری رکھے - اسمبلی سے ۳۰ گز یا ۱۰۰ گز پر مسلسل لائھی چارج ہوتا رہا اور جو ورکرس اپنے حقوق کیلئے پیسفل (Peaceful) جدوجہد کر رہے تھے انہیں گرفتار کر کے لگئے - اور یہ پتہ نہیں کہ انہیں کہاں رکھا گیا - کیونکہ پوچھنے پر بھی نہیں بتایا جاتا - ہاؤس کے آرنیبل ممبرس کو یہ واقعات معلوم ہونے چاہئیں - اور یہ بتایا جانا چاہئے کہ آخر انہیں کہاں رکھا گیا ہے

مسٹر اسپیکر - منسٹر اسکا جواب دینگے -

شری جی - راجہ رام - منسٹر صاحب تو جواب دینگے - لیکن ہم خاص طور پر یہاں پولس پر بحث کر رہے ہیں اور گورنمنٹ کی اس پالیسی سے متعلق کرٹسزم (Criticism) کر رہے ہیں - اگر پولس اسی طرح کا اتیاچار جاری رکھے اور آنکھوں کے سامنے مارتی رہے تو ہم اسکو کبھی برداشت نہیں کریں گے - اسلئے میری پارٹی اس عمل کی پرزور مذمت کرتی ہے اور احتجاج کے طور پر ایوان سے واک اوٹ کرتی ہے -

(Members of the U.P.P. then left the Assembly Chamber).

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے (اچپاگڈا) :—میسٹر سپیکر سر، کل مینے ایس چیج کو ہاؤس کے سامنے رکھا تھا اور میں خود جا کر آنرےبل ہوم مینسٹر سے ملا تھا اور ان سے کہا تھا کہ آج کل بعض اریسٹس (Arrests) ہونے کے ایمکانات ہیں، انکو روکا جائے۔ ایسکے باوجود پورانی میل کے پاس جو شلٹس بھلے ہڈتال کر رہے ہیں انکو گیرفتار کرنے کی کوشش کی گئی ہے اور باقی جو ہڈتال کرنے والے ہیں انمیں سے کئی دس وکرس کو گیرفتار کیا گیا ہے۔ وہاں پر لاٹی چارج کیا گیا۔ ایسکے باء سیکریٹریٹ پر بھی لوگ پروسیشن لے کر گئے اور وہ پر انہوں نے مانگ کی کہ جو لوگ گیرفتار کیے گئے ہیں انکو رلیڈا کیا جائے تو سیکریٹریٹ کے پاس بھی لوگوں پر لاٹی چارج کیا گیا۔ مینے سنا ہے کہ لوگ وہاں پر دیکر بیٹھے ہوئے ہیں، ایسی بے وقت پہلے میں جیلتلا میلی ہے۔ جس طرح کا برتاؤ اور لاٹی چارج ہماری آؤٹوں کے سامنے کیا جا رہا ہے ایسکے پروٹیسٹ (Protest) میں میں اپنی پارٹی کی طرف سے واک اوٹ (Walk out) کرتا ہوں۔

(Members of the P. D. F. Party then left the Assembly Chamber.)

شری جی - بی - متیال راؤ (سکندر آباد - محفوظ) - اس بارے میں میں کچھ ثبوت پیش کرنا چاہتا ہوں - جیسا کہ آرنیبل لیڈر آف دی اپوزیشن نے کہا ہے میں بھی

सिकरिट्रीट गिया तेहा - वहाँ वर करस पोलस पर हमले कर रहे थे मीन ने अपनी आंखेहों से दिकेहा
हे - कसृच वु

मसृर असिकर - असका वुवव तु मसृर सववव दनकरे -

शरी हे - बी - मसृरल रव - लिकन मीन ने वहाँ वु दिकेहा हे वु हावुस के सवमने
बतलाना वववव वु - वसृर वुवव वुसरे अतुरीबल मसृरस कु सुवव दया वववव करेवव करे वुवव
वुवु सुवव दया ववव -

मसृर असिकर - अड डीमनड के ससृले मीन असिवव दिये -

श्री. रतनलाल कोटेचा :—मिस्टर स्पीकर सर, आर. टी. डी. (R.T.D.)
के वकवग के ववरे में मै अपने वववव ववववुस के सवमने ररखना ववववव वुं। ववव के वनररल डिसकशन
(General discussion) के वकवत मनेने अस डिववार्टमेंट के ववरे में वववव
थुडे से वववव ववववदन कया थव। अव वु ववसृरवपूर्वक कववना ववववव वुं। अवकु मवलूम हे
कवत करीबन हमवव रुड ड्रान्सवुवर्ट डिववार्टमेंट (Road Transport Department)
नेशनलववज (Nationalise) वुवव हे। वववत में हेदरववव रयवसत वववव
रयवसत हे कव ववसने अस रुड ड्रान्सवुवर्ट डिववार्टमेंट कु नेशनलववज कया हे। नेशनलववजेशन
के तीन वुसुल वुते हे और वुवुव के अडर ववव वुवव नेशनलववजेशन वुवव हे। कुववसे ने वुवु अपने
ववववव वननीफेसुवुव (Election manifesto) में वरुव कया हे
कव ववतने वुवु रुड ड्रान्सवुवर्ट डिववार्टमेंटस वुवुगे वे सव नेशनलववज वुवु, लेकन ववव वुवु रयवसत ने
वुससे वुवु वववव असकव नेशनलववजेशन कया हे। नेशनलववजेशन के लयने मनेने कवव कव तीन वुसुल
सुववु हे। अक वव कव ववसमें अफीशिवनसी (Efficiency) वुवु, दूसरव वव कव
अकनवमी वुवु और तीसरव वव कव सववस टु वव ववववक (Service to the public)
वव ववसकव अुदुव वुवु। अस कसुटी वर में वव दखनव वववव वुं कव हमवव वुवु अकसुवरीमेंट
(Experiment) वववव तीस सवल से वुवु रवव हे वव वववववी
वुवव हे वव नही। रुड ड्रान्सवुवर्ट डिववार्टमेंट कव वववववव वववव वववव वुवु। वुसकु तरफ में
अवववकव वववव वववव वववव करनव ववववव वुं। वव डिववार्टमेंट हमवव रयवसत में वुन १९३२ में वुवु
वुवव। वुस वकव ववसके ववस सवव २७ वसेस थी। १९३९ में डिववार्टमेंट वुडस लवरीज
(Goods lorries) कव कव वुवु ववव स लयव ववव। अब हम दखते
हे कव ववस डिववार्टमेंट कव कवव १९५ॡ में कवतनव वव ववव हे। अब वुनके ववस ववसेजर ववववववव
(Passenger vehicles) ६३२ हे और लवरीज ३३ हे। ववसेजर
वुने वववी वुवुवरे ६९ॡ हे और लवरीज १ॡ हे। वववी तरव से वुवस (Routes)
कु तरफ दखेगे तु मवलूम वुवव कव १९३२ में ९ वुवस थे और अब १९५ॡ में १७० वुवस वुववगे हे।
वववी तरव से ववस डिववार्टमेंट कव वुवव वुवु वुवु १९३२ में वुवव १६१ थव और अव
वकरीबन वव सवडे ववव ववव कव वुवु ववव। आर. टी. डी. कव कवववव (Capital)
अव वकरीबन २ करुड ७५ लख हे। ववस डिववार्टमेंट के वववकव (Income) और
अकसुवरीवव सववव (Expenditure side) कु तरफ वुवु में

हाबुस का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। जिस डिपार्टमेंट को तकरीबन २ करोड़ ७४ लाख का अिनकम (Income) होता है, लेकिन १९५३-५४ के रिवाजिड अिनकम (Revised Income) के लिहाज से २८ लाख का अिनकम बताया गया है जिस तरह से यह अिनकम कम क्यों हुआ है? अेक्सप्लनेटरी मेमोरेण्डम (Explanatory Memorandum) में बताया गया है कि कीमतें घट गयी हैं, स्लम्प (Slump) आ गया है और स्ट्राइक (Strike) हुआ था जिसलिये यह २८ लाख का घाटा हुआ है। मैं समझता हूं यह कारण ठीक नहीं हैं। हम देखते हैं कि कीमतें बराबर बढ़ती गयी हैं। पिछले साल फायनान्स मिनिस्टर ने अपने भाषण में कहा था कि कीमतें बढ़ती गयी हैं, लेकिन यह जो कारण बताया गया है कि स्लम्प आया है और डिप्रीसिएशन (Depreciation) की वजह से जिसमें घाटा आया है वह कारण मुझे ठीक नहीं मालूम होता। दूसरा कारण यह है कि स्ट्राइक की वजह से अिनकम घट गया है। मैं समझता हूं कि स्ट्राइक में गव्हर्नमेंट ने अंसा माकुल अिन्तजाम किया था कि अुसकी वजह से कोअी अिनकम घटने की वजह नहीं मालूम होती। असली वजह तो यह मालूम होती है कि डिस्ट्रिक्ट के अंदर कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स के अुपर जिस डिपार्टमेंट का बहुत कम चेकिंग (Checking) होता है। मैं अैसे जिले का रहीवासी हूं जहां हम बसेस के सिवा कहीं नहीं जा सकते। रेलवे का प्रवास बिल्कुल नहीं है और मुझे तो हमेशा घूमना पडता है। मैं देखता हूं कि २५ फीसद नहीं बल्कि ५० फीसद अिनकम ड्रायव्हर्स और कंडक्टर्स अपने जेब में डालते हैं। चेकिंग बहुत कम है, हालांकि जिसके लिये करीब करीब चार या पांच लाख रुपया बजट में रखा गया है। चेकिंग करनेवाले ही कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स से मिल जाते हैं। जिससे हमारा बहुत बडा घाटा होता है। मैं बंबयी के बस डिपार्टमेंट की तरफ देखता हूं तो वहां हर बस का चेकिंग होता है हर बस में चेकर रहता है। बस स्टार्ट होते ही वहां चेकिंग होता है और रास्तों में भी चेकिंग होता है, जिसलिये बंबयी स्टेट की आमदनी बढ़ती जा रही है। हमारे यहां पूरे स्टेट में मोनापली (Monopoly) होते हुअे भी अिनकम घटता जा रहा है जिसके बारे में होम मिनिस्टर साहब को अच्छी तरह सोचना पडेगा।

मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि अुर्स और जत्राओं में बस डिपार्टमेंट का जो अिनकम होता है वह भी घटता जा रहा है। १९५२-५३ में ३ लाख ४ हजार का जो अुत्पन्न था वह १९५४ में १ लाख ९६ हजार का हुआ है। क्या लोगों की अुर्स और जत्राओं पर से या अीश्वर और अल्ला पर से अड्डा कम हो गयी है? हमारे यहां कअी अुर्स और देवस्थान हैं जहां लाखों लोग दर्शन के लिये जाते हैं, लेकिन अुसीका फायदा लेकर कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स काफी पैसा जेब में डालते हैं। बीड के पास पंढरपूर और पैठण की जत्राओं होती हैं। लाखों लोग वहां जाते हैं लेकिन गव्हर्नमेंट की तरफ से कोअी खास अिन्तजाम नहीं किया जाता। जिस तरह के भौकों से फायदा अुठाकर अेक अेक कंडक्टर और ड्रायव्हर हजार दो हजार रुपये जेबमें डालते हैं। गव्हर्नमेंट को जिसकी तरफ काफी ध्यान देना चाहिये।

लगेज (Luggage) का अुत्पन्न भी कम है। अुसमें भी कोअी खास फायदा नहीं है। अेक अुत्पन्न १ हजार का जिसका अुत्पन्न है। पूरे स्टेट की मोनापली होने पर दो करोड अिनकम में सिर्फ १ लाख ९ हजार का अुत्पन्न हो रहा है। यह अुत्पन्न १५-२० लाख तक जाना चाहिये।

कंडक्टर्स लगेज बुक नहीं करते, अगर करते हैं तो बहुत कम करते हैं, जिसलिये लगेज का अत्यन्त बहुत कम हो रहा है। माल लॉरीज का सेक्शन तकरीबन घाटे में है क्योंकि इसका अत्यन्त कम है और खर्चा ज्यादा हो रहा है। गव्हर्नमेंट को या तो जिस डिपार्टमेंट को बंद करना पड़ेगा या बंबडी स्टेट की तरह जिसका पूरा नेशनलायजेशन (Nationalisation) करना पड़ेगा जिसके बारे में बंबडी गव्हर्नमेंट अभी सोच रही है और वे ज्यादा लॉरीज (Lorries) मंगवा रहे हैं। मालवाहतुक का सारा काम वहां की गवर्नमेंट अपने हाथ में लेनेवाली है। अुसी तरह से यहां भी लेना पड़ेगा या प्रॉयवेट (Private) लोगों के हाथ में देना पड़ेगा। जिस तरीके पर बंबडी स्टेट का ट्रंसपोर्ट डिपार्टमेंट काम कर रहा है अुसी तरीके पर हम भी सोचें और हमारे ट्रान्सपोर्ट डिपार्टमेंट का उत्पादन बढ़ायें।

अेक्सपेंडीचर साइड (Expenditure side) में चार मद हैं। अेक अेडमिनिस्ट्रेशन (Administration) दूसरा रिपेअर्स (Repairs) और मेन्टेनेन्स (Maintenance), तीसरा ऑपरेशनल (Operational) और चौथा रिप्लेसमेंट (Replacement)। इसका रेशो (Ratio) देखेंगे तो अेडमिनिस्ट्रेशन पर १२ परसेंट खर्च होता है। यह बहुत भारी है। अेकाध प्रायवेट आदमी सर्व्हीस चलाये तो अितना खर्च नहीं होगा। रिपेअर्स और मेन्टेनेन्स का खर्च ३५ परसेंट है और रिप्लेसमेंट का खर्च ७ परसेंट है। दूसरी चीज यह है कि यहां के स्टाफ को बहुत ज्यादा फॅसिलिटीज (Facilities) दी गयी है। दूसरे विभागों के कर्मचारियों को अितनी फॅसिलिटीज नहीं हैं अितनी की यहां के स्टाफ को हैं। कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स को क्या फॅसिलिटीज दी गयी हैं अुनको में हाअुस के सामने रखना चाहता हूं। अुनके लिये रेलवे पासेस अँड कन्सेशन्स (Concessions) फ्री मेडीकल फॅसिलिटीज (Free medical facilities)

ग्रेन कन्सेशन्स (Grain concessions) स्टाफ बेनिफिट फंड (Staff benefit fund) कोआपरेटिव क्रेडिट सोसायटी रिक्रिअेशन फॅसिलिटीज (Recreation facilities) फुड (Food) की सबसिडी (Subsidy) अितनी फॅसिलिटीज हैं। अितनी फॅसिलिटीज होने पर भी हमारे कम्युनिस्ट दोस्तों ने अुनको भडकाकर स्ट्राइक करवाया। अिन ड्रायव्हर्स और कंडक्टर्स के साथ मुझे कोअी सिंपथी (Sympathy) नहीं है, क्योंकि अुनको हमारी रियासतों दूसरी रियासतों के मुकाबले में ज्यादा तनख्वाह मिलती है और साथ साथ अुनका जो दीगर गैर कानूनी अिनकम है वह करीब करीब दुगना है। अैसे जो देश को नुकसान पहुंचानेवाले लोग हैं जो अपने जब में पैसे डालते हैं अुनके बारे में मुझे कोअी सिंपथी नहीं है। तो भी हमारे कम्युनिस्ट दोस्तों ने अुनको भडकाया और स्ट्राइक कराया। लेकिन हुकूमत ने बड़े अच्छे ढंग से अुसको असफल बनाया जिसके लिये मैं हुकूमत को धन्यवाद देता हूं —————

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—आप पुलिस डिपार्टमेंट जॉइन (Join) कीजिये।

श्री. रतनलाल कोटेचा :—हां, जरूर जॉइन करूंगा, कम से कम आपके लिये तो जरूर करूंगा। साथ साथ अुनको फुड सबसिडी दी जाती है। मैं समझता हूं कि जब कंट्रोल अुठाया गया है तो सबसिडी देने की जरूरत नहीं है।

अब कुछ सजेसन्स (Suggestions) जिस डिपार्टमेंट के वर्किंग (Working) के बारे में देना चाहता हूँ। मैं देखता हूँ कि हमारी बसेस में काफी ओव्हर लोडिंग (Overloading) होता है और उसकी वजह से पैसेंजर्स को बहुत तकलीफ होती है। हमारे सामने जो फायनान्शियल बजट अेस्टीमेट रखा गया है उसमें हम देखते हैं कि हैदराबाद और सिकंदराबाद में काफी बसेस हैं और डिस्ट्रिक्ट्स में बहुत कम हैं। ज्यादा वक्त न होने से मैं उसके तफसीलात में नहीं जा सकता, लेकिन मैं अितना कहूंगा कि हैदराबाद और सिकंदराबाद में ९८ बसेस और अुनके अिनकम अुनकी तादाद) की लिहाज से बहुत कम है। शहर से डिस्ट्रिक्ट्स में जो बसेस जाती है अुनकी तादाद कम है लेकिन तादाद के लिहाज से अुत्पन्न ज्यादा है। तादाद कम है जिसीलिये अंव्हर लोडिंग होता है। साथ साथ गाडियों के टायमिंग (Timings) का लिहाज बराबर नहीं होता। बीड से जालना आने के लिये जो साडेतीन घंटे का समय रखा गया है उसके लिये पांच घंटे लगते हैं। तीसरी चीज यह है कि पैसेंजर्स को अमीनिटीज (Amenities) देने के लिहाज से जिस डिपार्टमेंट ने कोअी खास तरक्की नहीं की है। डिस्ट्रिक्ट्स में कहीं भी बस स्टेशन्स नहीं हैं, पीने के पानी का अिन्तजाम नहीं है, लेवेटरी (Lavatory) और ल्याटरिन की सङ्कलियत नहीं है। जिससे औरतों और बूढ़े लोगों को बहुत तकलीफ होती है। बंबअी स्टेट में हर जिले और तालुके में अैसे बस स्टेशन्स बने हैं कि हर जिले के स्थान पर अेक लाख रुपये कीमत का स्टेशन, तालुके की जगह ४० हजार का और जहां मामूली जंकशन्स हैं वहां ६ हजार का स्टेशन बनाया गया है। चार साल की लाइफ (Life) में अुनके यहां अितना प्रोग्रेस (Progress) हुआ है।

जिसके बाद हमारे यहां जो टाइम टेबल प्रकाशित किया जाता है वह अंग्रेजी में होता है हालांकि डिस्ट्रिक्ट के बहुत कम लोग अंग्रेजी जानते हैं। दूसरी बात यह है कि ये जो टायमिंग फिक्स (Fix) किये जाते हैं वे हैदराबाद में बैठकर किये जाते हैं जिसलिये स्वाभाविक है कि डिस्ट्रिक्ट के लोगों का अुसमें ख्याल नहीं किया जाता। साथ साथ मैंने यह भी देखा है कि हमारे बस डिपार्टमेंट में रिजर्वेशन (Reservation) की कोअी खास सङ्कलियत नहीं है। मैंने मिनिस्टर साहब से बंबअी की फीगर्स पूछा था लेकिन वे मिल नहीं सके। यहां सिर्फ दो हजार का अिनकम रिजर्वेशन के सिलसिले में होता है, यानी सिर्फ चार हजार लोगोंने ही जिसका फायदा अुठाया है और ये रिजर्वेशन चार्जस भी 'हाय' (High) हैं। यहां रिजर्वेशन के लिये आठ आने चार्ज है। बंबअी में आठ आने से कम की टिकट के लिये १ आना रिजर्वेशन चार्ज है, आठ आने से अेक रुपये तक दो आने और अेक रुपये के अुपर कि टिकट पर ४ आने जिस तरह के चार्जस हैं। जिस वजह से वहां लोग ज्यादा फायदा अुठाते हैं और वहां की हुकूमत की आमदनी बढती है। यहां तो रिजर्वेशन किया गया तो भी सीट मिलेगी या नहीं जिसकी शंका होती है।

[MR. DEPUTY SPEAKER IN THE CHAIR]

जिसके बारे में गवर्नमेंट को सोचना चाहिये। मैं यह भी देखता हूँ कि कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स का लोडिंग के साथ ठीक बर्ताव नहीं रहता। जिस लिहाज से अुनमें सुधार करने की आवश्यकता है।

मैं यह भी देखता हूँ कि डिस्ट्रिक्ट की बसेस की मुश्किलत को अगर कहना हो तो हमको हैदराबाद में आना पड़ता है। जिसके बजाय अगर हर डिस्ट्रिक्ट में एक एक अडवायजरी बोर्ड (Advisory Board) कायम किया जाय, जैसे कि बंबयी स्टेट में किया गया है, तो मैं समझता हूँ कि आज जो मुश्किलत पायी जाती है वह कम हो जायेंगी। साथ साथ मेरे डिस्ट्रिक्ट में एक दो लाइन्स (Lines) अभी काम कर रही हैं उनको भी गवर्नमेंट अगर अपने कबजे में ले लें तो गवर्नमेंट का अिनकम काफी बढ जायगा। जिसके बारे में मैंने एक दो खत भी लिखे थे लेकिन मालूम होता है अुनकी तरफ कोअी खास तवज्जह नहीं दी गयी। अंमलनेर का जो रूट है वहाँ हमारी बसेस नहीं चलतीं। वहाँ एस. टी. मोटर्स चलती थी अुसको अगर आर. टी. डी. अपने कब्जे में ले लें तो अुसका अिनकम बढ जायगा। अिन चंद सजेशन्स के साथ जो कि मैंने हाअस के सामने रखी हैं और जिन पर मैं अुम्मीद करता हूँ कि गवर्नमेंट सोंचेगी, मैं अपना भाषण समाप्त करता हूँ।

مسٹر ڈبئی اسپیکر - آنریبل ممبر دس منٹ میں تقریر ختم کریں کیونکہ بہت سے ممبرس تقریر کرنا چاہتے ہیں -

شری جی - سری راملو (متھنی) - میں نے ایسا سنا تھا کہ کٹ موشنس دینے پر ٹائم ملتا ہے - لیکن کٹ موشنس دینے پر یہی ٹائم نہیں مل سکا - نہ وہ اصول باقی ہے اور نہ یہ اصول -

شریمتی شاننا بائی (مکتھل آتما کور - عام) - اسپیکر سر - لیڈیز کو بھی موقع دیا جائے -

శ్రీ కె. రామచంద్రారెడ్డి (రామన్నపేట) :

మిస్టర్ స్పీకర్ సర్,

పోలీసు డిమాండు 3,29,39,000 రూపాయలకు సేను క్రోత్త తీర్మానము ప్రవేశ పెట్టాను. ఆ క్రోత్త తీర్మానం గురించి మాట్లాడుతున్నాను. ప్రధానంగా ఈ డిమాండును చూసినట్లయితే యీ సంవత్సరం పోలీసుకు తక్కువ ఖర్చు చేయాలని చూపెట్టడం జరిగింది. గత సంవత్సరం కంటే ఈ సంవత్సరం బడ్జెటులో పోలీసుకు ఖర్చు 90 లక్షల 30 వేలు తక్కువ చూపెట్టారు. ఇది ఎక్స్ మేటు బడ్జెటు మాత్రమే. రివెన్యూ బడ్జెటులో అంతా ఖర్చుపెట్టడం జరుగుతుంది. ఈ 90 లక్షల 30 వేలు కూడ రివెన్యూ బడ్జెటులో ఖర్చు పెడతారు. అందుచేత ఇప్పుడు యీ పోలీసుపై ఖర్చు తక్కువ అయ్యే సమస్య తోడు. క్రోత్తగా ఏర్పడిన ఆంధ్రరాష్ట్రములో పోలీసు కీంద 2 కోట్ల 13 లక్షలు మాత్రమే బడ్జెటులో ఖర్చుపెట్టడం జరుగుతోంది. అక్కడ జనాభా ఎక్కువ. ఆ రాష్ట్రం పైశాల్యం ఎక్కువ వుంది. కానీ, హైదరాబాదు స్టేటులో 920 లక్షల జనాభా మాత్రమే ఉంది. ఆంధ్రరాష్ట్రంకంటే దీని పైశాల్యముకూడ తక్కువ అయినా యీ స్టేటు బడ్జెటు చూచినట్లయితే 3 కోట్ల 29 లక్షల 39 వేలు పోలీసుకు ఖర్చు చేయడం జరుగుతోందంటే, ఆంధ్ర స్టేటుకంటే హైదరాబాదు స్టేటులో 11 లక్షల 39 వేలు పోలీసుకు ఎక్కువ ఖర్చు చేయబడుతోంది. ఫరంగల్, నల్లగొండ, కరీంనగర్ జిల్లాలో చూసి

నట్లయితే పోలీసుకు ఎంత ఖర్చు పెడుతున్నారో తెలుస్తుంది. పోలీసుకు తక్కువ ఖర్చు చేస్తున్నామని చెప్పడం తప్పితే ఆచరణలో మాత్రం పోలీసుకు తక్కువ ఖర్చు చేయడమనేది జరగడంలేదు. ౧౯౫౩-౫౪ వ సంవత్సరంలో ౧౨,౧౮,౬౦౩ రూ. నల్లగొండ జిల్లాలో పోలీసుకు ఖర్చుపెట్టింది. నల్లగొండ జిల్లాలో ౩౯ స్టేషన్లు, ౯ మంది సి. ఐ. లు, ౪౮ మంది యస్. ఐ. లు, హెచ్. సి. లు ౧౩౦ మంది, పోలీసులు ౧౩౫౫ మంది ఉన్నారు.

కరీంనగర్ జిల్లాలో ౬,౮౯,౬౯౫ రూ. పోలీసుకు ఖర్చు చేయబడుతోంది. ఆ జిల్లాలో ౨౮ స్టేషన్లు, ౯ మంది సి. ఐ. లు, ౪౩ మంది యస్.ఐ.లు, ౧౨౭ మంది హెచ్.సి.లు, ౧౦౫౨ మంది పోలీసులు వున్నారు. ఉత్తర దక్షిణ వరంగల్ జిల్లాలో ౧౮,౨౨,౯౬౭ రూ. పోలీసుకు ఖర్చు చేస్తున్నారు. అక్కడ ౬౦ స్టేషన్లు, ౧౫ మంది సి. ఐ. లు, ౭౬ మంది యస్. ఐ. లు, ౨౫౫ మంది హెచ్. సి. లు, పి. సి. లు ౨౦౨౪ మంది వున్నారు. ఎందుకు ఈ విధంగా యీ మూడు జిల్లాలలో పోలీసుకు ఎక్కువ డబ్బు ఖర్చు పెడుతున్నారు? మొత్తం పోలీసు ఖర్చులో ౭ వంతుల డబ్బు యీ మూడు జిల్లాలలో ఖర్చుపెట్టడం జరుగుతోంది. మొత్తం ౩౭ లక్షల ౩౧ వేల ౨౬౫ రూపాయలు యీ మూడు జిల్లాలలో ఖర్చు పెడుతున్నారు. ప్రభుత్వము ౫,౧౪౩ మంది పోలీసులను యీ మూడు జిల్లాలలో కేంద్రీకరింపజేసి ఆ విధంగా ఎక్కువ డబ్బును పోలీసుకు ఖర్చు చేస్తున్నారు. ఈ మూడు జిల్లాలలోను ఇతరమంది పోలీసులను ఉంచి, పోలీసుకు ఎందుకు ఎక్కువ ఖర్చు పెడుతున్నారని ఆలోచిస్తే, యీ జిల్లాలలో కమ్యూనిస్టుపార్టీ, రైతు సంఘం, సి. డి. యఫ్ మొదలైన సంస్థలను అణచడానికి, ప్రజా ఉద్యమాలను అణచడానికి ఆ జిల్లాలలో ఎక్కువ మంది పోలీసులను పెట్టి వాళ్ళకు ఎక్కువ ఖర్చు పెడుతున్నారనే విషయం స్పష్టమౌతుంది. ప్రభుత్వము ప్రజా ఉద్యమాలను అణచడానికి అంత డబ్బు ఖర్చు చేస్తుందేగాని ప్రజల ఆవసరాల కొరకు, ప్రజలకు మేలు చేసే పనులకు ఏమాత్రము డబ్బు ఖర్చు పెట్టదు. ప్రజలకు ఆవసరమయ్యే చెరువులకు ౧౯౫౨-౫౩ వ సంవత్సరంలో నల్లగొండ జిల్లాలో ౩ లక్షల ౩౪ వేల రూపాయలు మాత్రమే ఖర్చుపెట్టారు. ౧౫,౪౩,౯౭౫ మంది జనాభావుండే జిల్లాలో పోలీసు పైన ౧౨,౧౮,౬౦౩ రూ. ఖర్చు చేస్తున్నారు. కాని ప్రజల ఆవసరమైన చెరువులు మొదలైన వాటి మరమ్మతుల కొరకు ౩ లక్షల ౩౪ వేలు మాత్రమే ఖర్చు చేస్తున్నారు. కరీంనగర్ జిల్లాలో చెరువు మరమ్మతులకు ఒక లక్ష, ౬౯ వేలు మాత్రమే ఖర్చు చేస్తున్నారు. కాని పోలీసులకు ౬ లక్షలు ౮౯ వేల ౬౯౫ మాత్రమే ఖర్చు చేస్తున్నారు. అదే విధంగా హెల్త్ డిపార్టుమెంటుకు కూడా తక్కువ ఖర్చు పెడుతున్నారు. నల్లగొండ జిల్లాలో మందులకొరకు ౯౯,౮౮౯ రూ. మాత్రం ఖర్చు చేస్తున్నారు. వరంగల్ జిల్లాలో ౧,౫౩,౯౭౨ రూ. కరీంనగర్ జిల్లాలో ౧,౦౧,౨౨౪ రూపాయలు మందులకేండ్ ఆరోగ్య శాఖకు ఖర్చు చేస్తున్నారు. దీనిని బట్టి చూస్తే, యీ ప్రభుత్వం ప్రజలకొరకుగాని, ప్రజల శ్రేయస్సుకొరకుగాని ఏవేన్ బిల్డింగ్ ప్లాన్స్ (Nation Building Plans) కార్యాలకోసంగాని ఏవిధంగా ఖర్చు పెడుతోందో అర్థం అవుతుంది. అదేవిధంగా, పోలీసు ఆఫీసర్ల టి. ఎ ల విషయం చూస్తే, ౧౯౫౨ వ సంవత్సరంలో ౧౭ వేల రూపాయలు అయితే, ౧౯౫౩ లో ౪౦ వేల రూపాయలు అయింది. దీనిని బట్టి ౫౨ కం.పె ౫౩ లో పోలీసు ఖర్చు ఎక్కువ చేసిందేగాని తక్కువ ఏమీ చేయలేదు. పోలీసుపై తక్కువ ఖర్చు చేస్తున్నట్లు ఆచరణలో కనపించడం లేదు. ఇప్పుడు ప్రధానంగా పోలీసు ప్రజా ఉద్యమాలను అణచడానికి ప్రయత్నం చేస్తుంది. ఇందుకు ఉదాహరణగా పెద్ద ముఠాల నియోజక వర్గానికి జరిగిన కేసు—ఎలక్షన్స్

పందర్బంతో రావి నారాయణరెడ్డి, సుందరయ్యగార్లను దేబ్బలు కొట్టడంవల్ల కాంగ్రెస్ పై ఎలాంటి చర్యలు తీసుకోకపోగా, పైగా వారికి పోలీసులు అండగా వుండి ప్రజా ఉద్యమాలను అణచడానికి ప్రయత్నిస్తోంది. ధర్మసాగర్ లో డోరేగింపు జరుగుతూంటే పోలీసులు కాల్పులు కాల్చారు. ఇద్దరు మరణించారు. పానుగోడులో పోలీసులు కాల్పుగా అనేక మందికి దేబ్బలు తగిలాయి. అదేవిధంగా హుజూర్ నగర్, బలపాల గ్రామాలలో పోలీసులు అత్యాచారాలు జరిపారు. హుజూర్ నగర్ మున్సిపల్ ఎన్నికల సందర్బంలో గండరగోళం జరిగింది. కాంగ్రెసువారు కమ్యూనిస్టులపై దాడులు చేశారు. వారి ఆఫీసులను లూటీ చేశారు. పోలీసులు వారికి అండగా వుండి, వారి పెంట ఉండి ఇతా అత్యాచారాలు చేయించారు. పోలీసులు కాంగ్రెసునాయకులు కలసి, ప్రజా ఉద్యమాలు ముందుకు రాకుండా ప్రత్యక్షంగా దాడులు చేస్తున్నారు. దీనిని గురించి హాం మంత్రిగారిని ప్రార్థించడం జరిగింది. కాని ఏమీ శ్రద్ధ తీసుకోలేదు. ప్రత్యక్షంగాను, పరోక్షంగాను కూడా పోలీసులు కాంగ్రెసువారి అండలో అత్యాచారాలు చేస్తున్నారు. కాంగ్రెసు వాయకులు, కాంగ్రెసు బురఖా పేసుకాని పోలీసుల అండలో దాడులు చేయడం జరుగుతోంది. జిల్లాలో నిర్బంధ విధానాలు పెట్టారు. నల్లగొండ జిల్లాలో ౧౧౦, వ నెక్స్ ౧౦౭, ౧౧౧, ౧౧౨, మొదలైన నెక్స్ పెట్టి మొత్తం ఆ జిల్లాలో ౧౫౦ మంది కార్యకర్తలమీద కేసులు పెట్టి కోర్టులచుట్టూ త్రిప్పిస్తున్నారు. రైతులు భూములనుండి బేదఖలు కాకుండా ఖానాన్ ప్రకారము హక్కులను కాపాడుకోవడానికి ప్రయత్నిస్తుంటే జమీందార్లు పోలీసులను అండగా పెట్టుకొని ౩౫౦ మంది రైతులపై కేసులు పెట్టారు. ఆ కేసులు ఇప్పుడు కోర్టులలో నడుస్తున్నాయి. ఈ విధంగా పోలీసులు జమీందార్లకు అండగా ఉండి, జమీందార్ల పైపు ఉండి, రైతులను అణచివేస్తున్నారనీ స్పష్టమౌతోంది. ౧౯౫౩వ సంవత్సరం డిశంబరు వరకు జిల్లాలోపల ౧౫౫ కేసులు కొట్టివేయబడ్డాయి. ఒక్కొక్కరిపైనా ౧౦, ౧౧ కేసులు మోపి, తోనిపోని కేసులు పెట్టి జైళ్ళలో పెట్టడం జరుగుతోంది. ఒక్కొక్కరిపైనా ౧౦, ౧౧ కేసులు ఎందుకు మోపు తున్నారంటే ఒక కేసు కొట్టివేయబడినా ఇంకొక కేసులో నయనా శిక్ష పొంది వాళ్ళు జైళ్ళలోకి వెడతారుగాదా అనే ఉద్దేశంతో ౧౦, ౧౧ కేసులు మోపుతున్నారు. ఆ విధంగా ప్రజా కార్యకర్తలపై తోనిపోని కేసులు పెట్టి బయటకు రాకుండా వారిని అణచుతున్నారు. సంగపపు మొదలైన ౧౭ మందిపైన కేసులు నడిచి ౫ సంవత్సరాల తరువాత వాళ్ళకేసులు కొట్టివేశారు. ఈ ౫ సంవత్సరాలు యీ ౧౭ గురించి జైళ్ళలోనే పెట్టింది. ప్రభుత్వం కావాలని తోనిపోని కేసులు మోపి కార్యకర్తలను బయటకు రానియకుండా ప్రజలకు సహాయం చేయనివ్వకుండా జైళ్ళలో పెడుతున్నారు. ప్రభుత్వం మొత్తని పాలనీ అవలంబిస్తోంది. కత్తికి తోనిపూనే పాలనీ అవలంబిస్తోంది. జైళ్ళలో ఏడనిమిడిమంది జబ్బులలో పడి వున్నారు. వారిని విడుదల చేయాలని రిపజెంటు చేసినా విడుదల చేయడం లేదు. రజాకారు కాలంపాటి కేసులు కూడా ఇంకా నడుస్తూనే ఉన్నాయి. నల్లగొండ జిల్లాలో ౩౫ కేసులు నడుస్తున్నాయి. ఒక్కొక్కరిమీద ౬, ౭ కేసులు వరకు నడుస్తున్నాయి. నూటికి ఎన్నోమందిని F.I.R. లో పేరు రాయకుండా ఉంచుతున్నారు. ఆ విధంగా F.I.R. లో పేరు రాయకుండా ఉంచి వారిని అనానా (unknown) కమ్యూనిస్టులని, ఔరీస్టు కమ్యూనిస్టులని పేరులు పెట్టివీలున్నప్పుడలా వారిని జైళ్ళలో పెడుతున్నారు. ప్రభుత్వం బుద్ధి పూర్వకంగా యీ పనులు చేస్తున్నారు. ఇదే ఈనాటి పాలనగా ఉన్నది. తిరుమలరావు, భీమిరెడ్డి నరసింహారెడ్డి, అండ్రిడ్డి పెంకలరెడ్డి మొదలైన వారిపైన

कार्यवाही कर रही है। जब किसी अफसर की अनिक्वायरी डिपार्टमेंट के दूसरे अफसर करते हैं तो वह सब अेक दूसरे से मिले होते हैं, जिस लिये बराबर अनिक्वायरी नहीं होती है। जिस तरह से अनिसाफ होना चाहिये वैसे नहीं होता।

जिस तरह कभी वाक्यात में यहां पर रख सकता हूं। कंठेश्वर नामी अेक मौजे में वहां के सर्कल अनिसपेक्टर बसमत और पूर्णा के सब-अनिसपेक्टर के खिलाफ डी. वाय. अेस. पी. के पास कभी बार शिकायतों की गयी, तहकिकात का वचन दिया गया लेकिन कुछ अॅक्शन (Action) नहीं लिया गया, अैसा नहीं होना चाहिये। हम गव्हर्नमेंट को अपनी गव्हर्नमेंट समझते हैं और अैसी चीजे होती हैं तो उनका अनिसाफ गव्हर्नमेंट को करना चाहिये। पब्लिक की भलायी के लिये यह डिपार्टमेंट है और जिसका काम पब्लिक की भलायी करना है। पब्लिक को तकलीफ होती है तो अुन्हे दूर करना चाहिये।

अिसके साथ साथ आज जो करप्शन सब जगह दिखायी देता है। वैसे ही अिस डिपार्टमेंट में भी काफी करप्शन है। अिसको बंद करने का मसला हमारे सामने है। करप्शन बंद करने का काम सिर्फ गव्हर्नमेंट का है अैसा तो मैं नहीं कहूंगा। अिसके लिये यदि जरूरत हो तो कोभी बिल भी हाअुसमे लाया जाना चाहिये। लेकिन आज सिर्फ बिल लाकर यह मसला हल होनेवाला नहीं है। यह कोभी पार्टि पॉलिटिक्स का काम नहीं। अिसके लिये सब पार्टि के लोगों का अिस काम में हाथ बटाना चाहिये और गव्हर्नमेंट को भी सब लोगों की अिसमें मदद लेनी चाहिये। यह नॉन पार्टि (Non-party) मसला है। हमारे सारे समाज को ही यह मर्ज लगा है। अुसमे हर पार्टि के लोगों ने अिसे दूर करने के लिये कदम अुठाना चाहिये, यह अुनका फर्ज है। हम यदि कोभी काम करने जाते हैं तो आपकी सी. आय. डी. डिपार्टमेंट के लोग हमारे खिलाफ शिकायत करते हैं और अुनके पास हमारे खिलाफ रिपोर्ट करते हैं। हमारी कितनी ही कंप्लेंट होगीं लेकिन अुस तरफ कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता, और अुसमे अनिसाफ नहीं मिलता, लेकिन हमारे खिलाफ जरासी शिकायत आने पर फौरन सरकार की तरफ से कदम अुठाय़ा जाता ह। मेरा कहना यह है कि यह जो करप्शन का मसला है अुसके खिलाफ तो सबको मिलकर मुव्हमेंट (Movement) चलाने की जरूरत है। यह अेक बहुत सिरियस प्रॉब्लेम (Serious problem) है अैसा समझकर अिसको हल करने की कोशिश की जानी चाहिये।

में और अेक सजेसन (Suggestion) आपके सामने रखना चाहता हूं, वह यह है किजो रिपोर्ट्स अिस डिपार्टमेंट के बारे में गव्हर्नमेंट के पास आते हैं और जो कंप्लेंट्स आती हैं, अुनको देखने के लिये और अुनकी जांच करने के लिये सिर्फ गव्हर्नमेंट मशिनरी ही नहीं बल्कि गव्हर्नमेंट को अिसके बारे में सलाह देने के लिये और अनिक्वायरी करने के लिये अेक नॉन ऑफिशियल आडवायरी कमिटी अपॉइंट (Apoint) करनी चाहिये और अुस कमेटी में यह तमाम मसले पेश होने चाहिये। जमहूरियत में अिस तरह पब्लिक का कोऑपरेशन (Co operation) लेना बहुत लाजमी है। गव्हर्नमेंट आखरी डिसिजन (Decision) अपने हाथ में रख सकती है, लेकिन अिस तरह की अेक अडवायरी कमेटी रखना बहुत जरूरी है, जिनको अन्वाम का अेतमाद हासिल है। अिस तरह से यदि गव्हर्नमेंट स्टेप (Step) लेगी तो हमारे यहा से करप्शन बहुत कम होगा। यह मर्ज हमारे सारे समाज में है। हमारे चीफ मिनिस्टर साहब कहते हैं

का यह असा मर्ज है कि हम जिसे पूरी तरह नहीं निकाल सकते आप यदि यहां से ही जिसे नहीं निकाल सकते तो सारे हिंदुस्तान से यह मर्ज कैसे दूर होगा ? हैदराबाद गव्हर्नमेंट को अपनी पूरी ताकद लगाकर जिसे दूर करना चाहिये । इसके लिये कानूनी स्टेप्स लेने की जरूरत हो तो वह भी लिये जाने चाहिये, इसके बारे में मैंने इसके पहले ही हाउस के सामने एक रेजोल्यूशन लाया था, कि इसके बारे में हमें एक कानून बनाना चाहिये । गव्हर्नमेंट सर्वन्ट को अपनी मुव्हेबल (Movable) और इम्युव्हेबल (Immovable) प्रॉपर्टी की पूरी फेरिश्त गव्हर्नमेंट को देनी चाहिये, जितनाही नहीं बल्कि अपने जो करीब के रिलेटिव्हज (Relatives) हैं उनकि प्रॉपर्टी की भी लिस्ट गव्हर्नमेंट को देनी चाहिये । यह यदि किया जाय तो करप्शन कम हो सकता है और इससे शायद उसे रोकने में मदद होगी ।

डिपार्टमेंटल इनक्वायरी (Departmental enquiry) के बारे में तो मैंने पहले ही कहा कि यह तरीका ठीक नहीं है । अगर किसी अफसर के खिलाफ किसी ने कोअी दरखास्त दी है तो थुसपर क्या अॅक्शन लिया जा रहा है यह उस आदमी को समझने का कोअी रास्ता नहीं है । किसी के खिलाफ क्या कार्यवाही की गयी जिसकी अित्तला उस कंप्लेंट करने वाले को नहीं मिलती । उस-आदमी को नौकरी पर से निकाल भी दिया तो उस दरखास्त देनेवाले को मालूम नहीं होता कि यदि डिपार्टमेंटल इनक्वायरी किसी बात में होकर कुछ शिकायत साबित हुअी और उस अफसर क तबादला थुसी कारण दूसरी जगह किया गया तो उस कंप्लेंट करनेवाले को कुछ मालूम नहीं होता । अफसर भी वह बात छिपाकर रखता है और यदि किसी ने पूछा कि आपका तबादला कैसे हुवा तो कहता है कि यह तो रूटिन मॅटर (Routine matter) है, तबादला होना चाहिये था जिस लिये हुवा । यदि ऐसे अफसरों को क्या सजा दी जाती है यह अगर अब्बाम को मालूम हो तो थुसका असर अब्बाम में अच्छा होता है और वे समझते हैं कि हम शिकायत करते हैं तो थुसपर मुनासिब अॅक्शन लिया जाता है, और जिसके खिलाफ अॅक्शन लिया जाता है उसे भी एक तरह का अब्बाम का डर रहता है और थुसपर एक तरह का मॉरल चेक (Moral check) रहता है ।

अब पुलिस ट्रेनिंग के बारे में मैं कुछ कहना चाहता हूं । आज पुलिस के ट्रेनिंग का जो मेयार है थुसे बढ़ाने की जरूरत है । खास कर जब हमारे यहां जमहूरी हुकूमत आअी है तो जमहूरित में पुलिस को कैसा बर्ताव रखना चाहिये इसके लिये थुन्हें खास ट्रेनिंग की जरूरत है और दूसरे डिसिप्लिन (Discipline) की ट्रेनिंग भी हमारे यहां देने की जरूरत है । जिस तरह बांबे में पुलिस को नअी ट्रेनिंग देने के लिये और थुनकी अॅफीशियन्सी बढ़ाने के लिये काफी कोशिश की जाती है वैसे हमारे यहां भी होनी चाहिये । बांबे में वहां के पुलिस अफसरों को खास ट्रेनिंग के लिये स्कॉटलैंड याई में भेजा जाता है और वहां के अफसरों को भी यहां बुलाकर थुनसे ट्रेनिंग दिलवाने का अितेजाम किया जाता है । जिस तरह का तरीका हमारे यहां अभी तक नहीं है । यह तरीका हमारे यहां भी शुरू करना चाहिये, जिससे पुलिस की अॅफिशियन्सी बढेगी ।

मेरा सुझाव है कि इसके लिये एक ऑल पार्टी कॉन्फरन्स (Conference) बुलाअी जानी चाहिये ताकि सब लोग एक जगह बैठकर हमारे पुलिस डिपार्टमें में अॅफिशियन्सी बढ़ाने के लिये क्या किया जाना चाहिये इसके बारे में सोच सकें आज हमारे अफसर डी. सी. और डी. अॅस. पब्लि की जो रिपोर्ट आया करती है थुस पर डिपेंड (Depend) रहते हैं लेकिन

یہ तरीکا ٹیک نہیں ہے۔ آپ کو کچھ ایسی مشینری تیار کرنی چاہیے کہ بیل افسروں کے بلوا وہاں کے محکامی لوگوں کے پاس سے ہی آپ کے پاس رپورٹس آتے رہنے چاہیے۔ ایک ہی رپورٹ پر آپ کو ڈیپنڈ رہنا نہیں چاہیے۔ اس طرح کیا جاسے تو آپ سہی مالومات حاصل نہیں کر سکتے۔ کرپشن کے لیے گورنمنٹ ہی ذمہ دار ہے ایسا تو میں نہیں کہتا ہوں، گورنمنٹ کے ساتھ ساتھ اس ادارے میں جو ممبر بیٹھے ہیں وہ بھی کرپشن کے لیے ذمہ دار ہیں۔ اس لیے دونوں کو ملکر اس کرپشن کو روکنے کی کوشش کرنی چاہیے۔

مسٹر ڈپٹی اسپیکر۔ ڈسکشن چھ بجے تک جاری رہیگا اسکے بعد چھ بجے سے منسٹر صاحب متعلقہ جوابی تقریر کریں گے۔

شری کے۔ وینکٹ رام راؤ (چنا کونڈور)۔ منسٹر صاحب کیلئے ایک گھنٹہ کافی ہے۔

مسٹر ڈپٹی اسپیکر۔ وہ کم از کم دیکھ گھنٹہ چاہتے ہیں اور ووٹنگ (Voting) کیلئے آدھے گھنٹہ کی ضرورت ہوگی اسلئے چھ بجے ڈسکشن ختم ہونا چاہئے۔

منسٹر فار ہوم، لا اینڈ ری ہیبیلیٹیشن (شری دگبیر راؤ بندو)۔ میں سمجھتا ہوں کہ ووٹنگ اور جوابی اسپیچ (Speech) کیلئے دو گھنٹہ کی ضرورت ہوگی۔

مسٹر ڈپٹی اسپیکر۔ اس لحاظ سے چھ بجے ڈسکشن ختم کرنا ہوگا۔ آریبل ممبرس پانچ پانچ منٹ میں اپنے خیالات کا اظہار کریں تو سب کو اظہار خیال کا موقع ملیگا۔

Shri G. Sreeramulu: Persons who have given cut-omtions should be allowed to speak, whether for one minute or five minutes. There should be democratisation.

شری بی۔ ڈی۔ دیشمکھ (بھوکردن۔ عام)۔ اگر آج ساڑھے آٹھ بجے تک بیٹھیں تو اچھا ہوگا۔

مسٹر ڈپٹی اسپیکر۔ نہیں۔ چھ بجے تک ڈسکشن ہوگا اور دو گھنٹے جوابی تقریر اور ووٹنگ کیلئے کافی ہونگے۔

شری بی۔ ڈی۔ دیشمکھ۔ مسٹر اسپیکر سر۔ ڈیمانڈ نمبر ۱۸ کے بارے میں جو کٹ موشن میں نے پیش کیا ہے اس بارے میں زیادہ گہرائیوں میں نہ جاتے ہوئے میں صرف ڈیمانڈ نمبر ۱۸ کے بارے میں اپنے خیالات کا اظہار کرونگا۔ ایڈمنسٹریشن آف جسٹس (Administration of Justice) کے بارے میں مجھے یہ کہنا ہے کہ اس جمہوری دور میں عدالتوں کے بارے میں حکومت کا یہ نظریہ رہے تو مناسب نہیں ہے۔ کئی لوگوں نے اس بارے میں اظہار خیال کیا ہے کہ عوام کیلئے انصاف زیادہ سے زیادہ مستحق ہونا چاہئے بلکہ اگر ہوسکے تو عوام کیلئے انصاف مفت ہونا چاہئے۔ ہم دیکھتے ہیں کہ اس جمہوری دور میں عدالتوں کے بارے میں جو تبدیلی لائی جاتی چاہئے وہ نظر نہیں آ رہی ہے۔ رسوم عدالت و طلبانہ میں کافی اضافہ کیا گیا ہے۔ حیدر آباد میں

پہلے ۶ فیصد رسوم عدالت لیا جانا تھا۔ سنہ ۱۹۵۱ء سے رسوم عدالت میں دو گونہ اضافہ ہو گیا ہے۔ ملک کے جو غرب طبقات ہیں انکو انصاف کے حاصل کرنے میں اس کی وجہ سے دشواری ہو رہی ہے۔ اور انکے لئے انصاف سہنگا ہو گیا ہے۔ وہ رسوم عدالت اس قدر زیادہ مقدار میں داخل نہیں کر سکے اسلئے انصاف سے محروم ہونا پڑتا ہے۔

یہ ایسے مسائل ہیں کہ اسطرف حکومت کو نوجہ کرنی چاہئے۔ میں جوانان طلبانہ کے متعلق عرض کرونگا کہ ایک طرف تو حکومت حقیقت پسندی اور انصاف پسندی کا دعویٰ کرتی ہے اور دوسری طرف عدم مساوات کا بہ حال ہے۔ جوانان طلبانہ کا مسئلہ جبکہ سابقہ حکومت کے پینس نظر رہا ایسی صورت میں آج کی وزارت اسکو اپنی نظر سے کیسے اوجھل کر سکتی ہے۔ کریمنگر کے جوانان طلبانہ نے ۱۹۔ جولائی کو ایک درخواست دی تھی۔ جوانان طلبانہ ایسے لوگ ہوتے ہیں جن پر عدالت کی کارکردگی کا دارو مدار ہوتا ہے۔ مقدمات کے دوران کو کم کرنے میں انکی کارگزاری کو زیادہ دخل ہوتا ہے اگر انکے گریوننس (Grievances) کو نظر انداز کیا جائے تو اس سے عدالتی نظام متاثر ہوگا۔ اور اس سے بدنامی کا اندیشہ ہے کہ یہ گورنمنٹ ایسی ہے کہ جو لوگ بیس بیس میل دیہاتوں میں جاتے ہیں اور جنکو سفر کی مصیبتیں برداشت کرنا پڑتا ہے اور جو مقدمات کے بعجلت تصنیف میں ممد دیتے ہیں انکو وہ مراعات بھی نہیں دئے جاتے جو مستقل ملازمین کو دئے جاتے ہیں۔ کئی مرتبہ یہ مسئلہ ہائیکورٹ کے زیر غور رہا ہے۔ ہمارے سابق چیف جسٹس شری راجندر نائک نے بھی وعدہ کیا تھا کہ وہ اس مسئلہ پر سنجیدگی کے ساتھ غور کریں گے اور انکو دوسرے ہم مرتبہ ملازمین کے مائل بیسک پے ٹی۔ اے اور ڈی۔ اے۔ ڈریس۔ چھتیاں بیاج وغیرہ دئے جائیں گے لیکن افسوس کہ عدالت کی جانب سے انصاف کا دعویٰ تو کیا جاتا ہے لیکن ان بیچاروں کے معاملہ میں کوئی توجہ نہیں کی گئی اور اس قسم کی ناانصافی ہو رہی ہے۔ مجھے امید ہے کہ اس بارے میں ضرور کوئی ایسا اقدام کیا جائیگا جو اس دیرینہ شکایت کو رفع کر سکے۔

نقل نویساں۔ نقل نویسوں کی عدالتوں میں کیا حالت ہے انکو ماہانہ ۱۰ یا ۱۵ روپیہ اجرت ملتی ہے۔ ہائیکورٹ نے متعدد گشتیات جاری کئے کہ نقل نویسوں کی تعداد ۱۰۔۱۵ سے زیادہ نہ ہونی چاہئے۔ لیکن آج عدالتوں میں دو ہزار سے زیادہ نقل نویس ہیں جو مصیبت میں مبتلا ہیں۔ اگر آپ انکی تعداد کو کم کرنا چاہتے ہیں۔ انکو ریگولرائز (Regularise) کرنا چاہتے ہیں اور ان سے زیادہ کام لینا چاہتے ہیں تو ضرور لیجئے لیکن انکو ایک ملازم کی حیثیت سے زندہ رہنے کیلئے جو معمولی پے (Pay) دینی چاہئے وہ تو دیجئے۔ میرا خیال یہ ہے کہ انکا معیار تنخواہ ایک میٹر کیولیٹ کلرک سے کم نہ ہونا چاہئے۔ اور وہ جملہ مراعات جو دوسرے اہلکاروں کو دئے جاتے ہیں انہیں بھی دئے جانے چاہئیں۔ ۵۰ تاہ ۱۲ کا تھرڈ گریڈ انہیں دیا جانا چاہئے۔

دوسری چیز لینگویجس (Languages) کے بارے میں میں عرض کرونگا کہ حال میں جو اعلان کیا گیا ہے وہ لائق ستائش ہے۔ یہ کوئی نئی بات نہیں ہے۔ بمبئی

اور سی۔ پی۔ اسٹٹس میں یہ عملدرآمد پہلے سے چلا آ رہا ہے۔ ہمارے ہاں عوامی حکومت آنے کے بعد تین سال گزرنے پر آج یہ اعلان کیا گیا ہے تو کوئی تعجب کی بات نہیں ہے۔ یہ تو بہت پہلے ہی ہو جانا چاہئے تھا۔ خیر میں اسکا خیر مقدم کرتا ہوں۔ عدالتی نظام کی حد تک دیہاتوں میں ولج یونٹ (Village unit) بنا کر یا تعلقہ بندی کے ذریعہ جو زبان وہاں رائج ہے اسکو رائج کیا جاسکتا ہے دونوں زبانیں رائج کرنے میں عدالتوں کو دشواری ہوگی۔ اسلئے ڈسٹریبیوشن آف تعلقاز آن لنگوسٹک بیسس (Distribution of Taluqs on linguistic Basis) عدالتی کام کے تعلق سے کیا جائے تو آسانی ہوگی۔ یہ کام مشکل نہ ہوگا۔

تیسری چیز میں ہاؤس کے سامنے یہ رکھنا چاہتا ہوں کہ عدالت میں گشتی نشان ۳ جاری ہے اور حال میں متعدد گشتیات اجراء کی گئی ہیں۔ لیکن افسوس کا مقام ہے کہ خود ہائیکورٹ میں کئی مقدمات ملتویات میں پڑے ہوئے ہیں۔ ہزاروں مثلیں تصفیہ طلب ہیں۔ سات سات سال کے مقدمات زیر دوران ہیں جو فیصلہ نہیں ہوئے ہیں۔ چیف جسٹس اپنے ماتحت عہدہ داروں کے کام کی نگرانی کرتے ہیں اور انہیں ہدایت کرتے ہیں کہ مقدمات ملنوی نہ رہیں۔ زیادہ عرصے تک مقدمے کا دوران نہ بڑھنے پائے لیکن خود ہائیکورٹ کی یہ حالت ہے کہ ہزاروں مقدمات زیر دوران ہیں۔ یہاں کوئی توجہ نہیں کیجاتی۔ پولس کے بارے میں بہت کچھ کہا گیا ہے لیکن میں صرف اتنا کہوں گا کہ پولس کے اڈمنسٹریشن میں ایسی بنیادی تبدیلیوں کی ضرورت ہے جس سے افسینسی (Efficiency) میں اضافہ ہو اور بجٹ میں دس فیصد کمی ہو سکے۔ اس بارے میں ایک سرجیشن ایک آئریبل ممبر نے رکھا تھا کہ آئی۔ جی۔ پی کی جو اسپیشل برانچ ہے اسکو ختم کر دینا چاہئے اور تین برانچس کی بجائے دو رکھ کر کام لیا جاسکتا ہے۔ پولس ٹریننگ اسکول بیدر اور عنبر پیٹھ لائینس کے بارے میں بھی ہم غور کر سکتے ہیں کہ انکو کسطرح ری آرگنائیز (Reorganise) کرنا چاہئے۔ ۱۰ نمپری کلرکس آئی۔ جی۔ پی کے دفتر میں رکھے گئے ہیں انکی ضرورت نہیں ہے۔ اور اس طرح آڈٹ پارٹی کو بھی ختم کرنا چاہئے۔ سٹی پولس کے بارے میں بھی سوچا جاسکتا ہے کہ اسکو ڈسٹرکٹ پولس سے ملا کر کسطرح ری آرگنائیز کیا جاسکتا ہے۔ ایچ۔ ایس۔ آر۔ پی کی پولس میں تخفیف کے ذریعہ ہمارے مالیہ میں کمی ہو سکتی ہے۔ تین بٹالینس (Battalions) کو گھٹا کر دو کو ایک جا کیا جاسکتا ہے۔ اگر اس طرح کیا جائے تو بہتر ہوگا اور حیدرآباد و سکندرآباد کی پولس کو ملا کر ری آرگنائیز کیا جاسکتا ہے تو ایسا کیا جانا چاہئے۔ اور ایک چیز مجھے یہ کہنا ہے کہ ٹرانسپورٹ کا اسپیشل سکشن (Special Section) جو ہے اس بارے میں بھی حکومت کو توجہ کرنی چاہئے۔ میں سمجھتا ہوں کہ وقت کے لحاظ سے مجھے تفصیلات میں جانے کا موقع نہیں ہے۔ آر۔ ٹی۔ ڈی کے بارے میں میں اپنے خیالات مختصراً ہاؤس کے سامنے رکھتا ہوں۔ کہا جاتا ہے کہ آر۔ ٹی۔ ڈی کی جانب سے شلٹرس (Shelters) بنائے جا رہے ہیں۔ لیکن جو مراعات آر۔ ٹی۔ ڈی کی جانب سے حیدرآباد سٹی میں رکھے گئے ہیں وہ تعلقات میں نہیں ہیں۔ مجھے

حیرت ہوتی ہے جب یہ کہا جاتا ہے کہ مراعات دئے جا رہے ہیں سکندر آباد اسٹیشن پر میں نے دیکھا ہے کہ جو بس رات میں نائٹ اوٹ (Night out) پر جاتے ہیں انکے ڈرائیورس اور کنڈکٹرس بس ہی میں سوتے ہیں۔ ایسے ۲۰-۲۵ لوگ سورہ تھے۔ آنریبل ممبرس چاہیں تو جا کر دیکھ سکتے ہیں۔ ان لوگوں کو سردی گرمی کا اسطرح مقابلہ کرنا پڑتا ہے۔ بورے اضلاع میں نائٹ اوٹ پر جانے والوں کے لئے کوئی انتظام نہیں ہے۔ محض بجٹ میں تو انکے لئے مراعات کیلئے رقم رکھی جاتی ہے۔ لیکن وہ بجائز عمل میں نہیں آتیں۔ آنریبل ممبرس ڈسٹرکٹ کے اوقات سے اچھی طرح واقف ہیں۔ آنریبل ممبرس کو معلوم ہے کہ پانسجرس کیلئے بھی کوئی اسٹانڈ نہیں بنائے جاتے۔ انکے لئے کوئی شلٹر نہیں ہے میں اپنی اورنگ آباد سٹی کا ذکر کرتا ہوں۔ وہاں پانسجرس کیلئے کوئی شلٹر نہیں ہے۔ نہ لیٹرن نہ کوئی اور سہولت۔ پانسجرس کو کہیں ایک منٹ ٹکنے کی گنجائش نہیں ہے۔ جس طرح عربستان میں قافلہ ریت اور دھوپ میں ٹھہرتا ہے۔ اس طرح پانسجرس کو دھوپ اور پانی میں ٹھہرنا پڑتا ہے۔ کہیں کوئی جھاڑ کا سایہ مل جاتا ہے۔ تعلقوں میں کوئی شلٹر نہیں بنائے گئے ہیں۔ بسوں پر ہیوی رش (Heavy rush) رہتا ہے لیکن اسکا کوئی بندوبست نہیں کیا جاتا۔ میں کہوں گا کہ جس طرح ریلوے کے بارے میں سنٹرل اڈوائیزری کمیٹی ہے آرٹی۔ ڈی۔ کے بارے میں بھی عوام کی مشکلات کو حل کرنے کے لئے ایک مرکزی اڈوائیزری کمیٹی بنائی جائے۔ اور اس کے لئے عوام کا تعاون حاصل ہو۔ ان چند خیالات کے ساتھ میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں۔

مسٹر ڈپٹی اسپیکر۔ اس سے پیشتر کہ دوسری تقریر شروع ہو میں یہ واضح کرنا چاہتا ہوں کہ ہمارے پاس صرف دیڑھ گھنٹہ ہے۔ اور ۱۰-۲۰ آنریبل ممبرس تقریر کرنا چاہتے ہیں۔ میرا یہ سچیشن ہے کہ آئندہ ہر ممبر کو ۵-۱۰ منٹ دے جائیں۔ اس سے کچھ زیادہ ممبرس کو موقع مل سکیگا۔ اگر سب ممبرس اس سے متفق ہوں تو اس طریقہ کو اڈاپٹ (Adopt) کیا جائے گا۔

شری جی۔ سری راملو۔ آئندہ ڈیمانڈ سے اس طرح کا عمل کیا جا سکتا ہے۔
مسٹر ڈپٹی اسپیکر۔ بہر حال ممبرس کم سے کم وقت لیں۔

* شری جی۔ سری راملو۔ مسٹر اسپیکر۔ پولیس کے ڈیمانڈ پر میرا کٹ موشن ہے اور آنریبل ہوم منسٹر کے ڈیمانڈس سب سے زیادہ رقم کے ڈیمانڈس کے لحاظ سے دوسرے درجہ پر ہیں۔ ان کا ڈیمانڈ ۷ کروڑ ۱۹ لاکھ کا ہے۔ ان کے ڈیمانڈس کے ہیڈس (Heads) بھی امپارٹنٹ ہیں۔ اور اس کا تعلق دیش کے حالات کو سدھارنے اور حکومت کے رویہ کے بارے میں ہے۔ اس لحاظ سے یہ اہم مسائل ہیں۔ اور ان کے بارے میں ضروری باتوں کو کانگریسی حکومت کے علم میں لانا ضروری ہو جاتا ہے۔ میرا کٹ موشن الیکشن کے سلسلے پر ہے۔ اس پر میں اپنے خیالات کا اظہار کروں گا۔

گنشتہ سال بائی الیکشن پر ۲۷- ہزار کا خرچہ بنا یا گیا ہے اور اس سال بھی اس کے لئے ۲۵ ہزار روپے رکھے گئے ہیں۔ مجھے نہیں معلوم کہ کونسی جگہ حالی

ہوگی اور وہاں پر الکشن لڑنے کی نوبت آئیگی۔ اگر کانگریس پارٹی اکامی کو ملحوظ رکھتے ہوئے پہلے ہی دور اندیشی سے کام لے اور پہلے ہی سے نوجوانوں کا انتخاب کرے تو اس کی نوبت ہی نہیں آتی۔ اور ٹریزری پر اس کا بار نہیں پڑتا میں ایشور سے یہ پرار تھنا کروں گا کہ اس کی نوبت ہی نہ آنا چاہیے۔

اس سلسلے میں یونین سے قابل واپسی رقم دو لاکھ ساڑھے چہتر ہزار روپے بتلائی گئی ہے۔ یہ کونسے مد کی بابتہ ہے اور کب سے قابل واپسی ہے آنریبل ہوم منسٹر اس کا جواب دیں۔

کنٹریبوشن ٹو میونسپالٹیز (Contribution to Municipalities) کے لئے تقریباً (۲۰۵۷۲) روپے ہوتے ہیں۔ ممکن ہے یہ الکتھورل رولس کی تیاری کے بارے میں ہوں۔ مجھے صحیح پتہ نہیں ملا۔ اس کی بھی وضاحت ہونی چاہیے۔ ٹاؤن کمیٹیز وغیرہ کے لئے جو الکتھورل رول تیار ہوتے ہیں یا جو دیگر اخراجات ہوتے ہیں اگر وہ واپس دئے گئے ہیں تو الکشن کے مد میں کوئی ایٹم مل سکتا ہے۔ میں اس کی وضاحت چاہتا ہوں۔ جہاں کہیں بھی الکشن ہوئے ہیں ان میں رولنگ پارٹی کا رویہ ایسا رہا کہ اس سے آئندہ آنے والوں کے لئے رولنگ پارٹی نے بری مثال قائم کی ہے۔ وہاں ان دنوں منسٹرس خواہ مخواہ دورہ نکال کر پہنچ جاتے ہیں۔ اور وہاں اپنے اثرات۔ حکومت کی مشینری۔ کلکٹر۔ ڈپٹی کلکٹر۔ پولیس۔ پٹیل اور سوٹر یہ سب استعمال کئے جاتے ہیں۔ رولنگ پارٹی کے لئے یہ عمل نازیبا اور ناموزوں ہے۔ ہم امید کرتے ہیں کہ آئندہ الکشن میں رولنگ پارٹی اس امر کو ملحوظ رکھیگی کہ وہاں منسٹرس نہ جائیں۔ اور اگر جائیں تو اپنی سوٹر کار اور جھنڈا چھوڑ کر ایک آرگنائیزر کی طرح جیسے کہ وہ پہلے تھے ویسے ہی جانا چاہیے۔ چیف منسٹر نے کہا ہے کہ

“ A Minister is 24 hours a Minister ”

میں مانتا ہوں۔ لیکن انہیں عوام کے سامنے اپنی غیر جانبداری کی مثال چھوڑ جانا چاہیے۔ میں نہیں سمجھتا کہ ہمارے منسٹرس جو ایسے سچیشنس سنکر اثر نہ لینے کے عادی ہو چکے ہیں وہ ان باتوں کا بھی خیال کر سکتے ہیں۔ لیکن پھر بھی میری پرار تھنا ہے کہ الکشن کے زمانے میں وہ الکشنس کے مقاموں پر سرٹیفیکیشن تقسیم کرنے پر ریڈ دیکھنے یا زراعت وغیرہ کا انسپکشن کرنے یا گوداموں کا معائنہ کرنے یا اسی قسم کے کام نکال کر وہاں نہ پہنچ جائیں۔ وہاں اس طرح پہنچ جاتے ہیں اور جب ان کی آویہگت کے لئے عوام جمع ہوتے ہیں یا ان کے پاس کوئی رپورٹیشن آتا ہے تو برس موقع انہیں فوراً پبلک میٹنگ میں تبدیل کر لیا جاتا ہے۔ وہاں سے منسٹر کی پوزیشن چینج ہو جاتی ہے اور وہ تحصیل کچھری کے سامنے تقریر شروع کر دیتے ہیں۔ وہاں اس طرح کام نکالے جاتے ہیں۔ سیت سینڈھیوں کو بلایا جاتا ہے اور پبلک میٹنگ کی جاتی ہے۔ یہ ہیں آپ کے کرتوت۔ یہ کام ہوگا تو اس کا لازمی نتیجہ یہ ہوگا کہ عوام اس سے متاثر ہوں گے۔ میں کہوں گا کہ اس سے وہاں سوٹروں میں جا کر اثر استعمال کرنے سے کوئی تبدیلی ہونے

والی نہیں ہے۔ عوام کی بہلائی کے لئے کچھ کیجئے۔ الکشن کے بارے میں میں آج ہی کا واقعہ بنلاتا ہوں۔ آج لینڈ امپروومنٹ بورڈ کے انتخاب کے سلسلے میں مجھے آنے میں دیر ہوگئی اور میں صرف آدھا منٹ پہلے یہاں آسکا۔ اس کے برخلاف رولنگ پارٹی کے ممبرس کو لینے کے لئے جیب کار۔ میں نمبر کوٹ کر سکتا ہوں۔ ایم ایل ایز کوارٹرس سے انہیں جمع کر کے لایا گیا۔ رولنگ پارٹی عوام کے پیسے کا مصرف اس طرح کرتی ہے۔ لیکن عوام کا پیسہ اس طرح خرچ نہیں کیا جاسکتا۔ آج آپ کے ہاتھ میں اقتدار ہے اس لئے اب اسے اس طرح استعمال کر رہے ہیں۔ جھنڈے کو باندھ کر نہیں رکھے جیسا کر کے سوتوں کو جگا کر ان کے دروازے کھٹکھا کر ووٹ دینے کے لئے لایا جاتا ہے۔ اس پر میں سخت احتجاج کرتا ہوں۔ اسی لئے میں کہتا ہوں کہ حکومت کی مشنری کا اثر اس قسم کے کاموں سے ہونے والا نہیں ہے۔ یہ گاندھی جی کا نام لینے والوں پر دہبہ ہے۔ دور دراز مقامات پر رہنے والوں کو بھی یہ سہولت دیجئے اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ الکشنس میں رولنگ پارٹی کا رویہ کیا رہتا ہے۔ اس طرح کے عمل سے الکشن کا مطلب ہی فوت ہو جاتا ہے۔ اور آپ پر طرفداری کے کلنک کا جو ٹیکہ لگ چکا ہے وہ ہمیشہ کے لئے رہیگا۔ میں امید کرتا ہوں کہ آنریبل ہوم منسٹر جو ان واقعات سے اچھی طرح واقف ہیں۔ اس بارے میں اقدامات کریں گے۔

مجھے پولس کے بارے میں یہ کہنا ہے کہ

The police should be the custodians of the honour, life and property of the people.

مگر پولس جس گاؤں میں جاتی ہے تو وہاں لوگ یہ سمجھتے ہیں کہ بلا نازل ہوگئی۔ خطرہ آگیا۔ ان لوگوں کو ۲۰۔ روپے تنخواہ دیجاتی ہے۔ الونسس ملا کر جملہ ۴۰ روپے دئے جاتے ہیں۔ وہ ایسی حرکت کرنے پر مجبور ہو جاتے ہیں جس سے ان کا پیٹ بھرے۔ اس لئے جو لوگ بڑی بڑی تنخواہیں پارہے ہیں ان کی تنخواہیں کم کر کے چھوٹی تنخواہیں پانے والوں کی تنخواہ کو بڑھانا چاہئے۔ لیکن رولنگ پارٹی تو اس پر سوچنے کے لئے تیار ہی نہیں ہے۔ ان لوگوں کی معاشی حالت اس قدر پست ہے۔ انہیں کوئی خاص ٹریننگ نہیں دیجاتی۔ اس طرح انہیں رکروٹ کرنے سے کوئی کام ہونے والا نہیں ہے۔ وہ موضع میں پہنچتے ہیں تو پہلے پیٹ بھرنے کے لئے مرغی مانگتے ہیں ساہوکار سے اچار۔ املی بغیر پیسے دئے حاصل کر لیتے ہیں۔ بٹی چاکری تو اب تک چل رہی ہے۔ ان کے خلاف رپورٹ کرتے ہیں تو کہا جاتا ہے کہ کچھ نہیں ہو سکتا۔ اوپر کے آفیسر کے پاس شکایت کی جاتی ہے تو ان کا یہ رویہ رہتا ہے کہ وہ اپنے ماتحت کو بچا لینا چاہتے ہیں اگر کوئی شکایت کرتا ہے تو کہا جاتا ہے :-

“ I welcome your complaints and shall see that something is done in the matter.”

ایسا کہنے والے کئی آفیسر ہیں۔ آنریبل ہوم منسٹر اس پر توجہ کریں۔

آنریبل ہوم منسٹر کی ہمدردی کی وجہ سے انہوں نے کچھ کیسز کی انکوائری

का आर्डर दिया जिस की وجه से ३-०-०० लोग मिरے تعلقه میں دشمن ہو گئے ہیں - میں یہ نہیں کہہ سکتا کہ ہر تعلقہ میں ایسا ہوتا ہے لیکن اس کے باوجود اس بارے میں ()
Fact-finding committees
جو لوگ شکایتیں کرتے ہیں - راز میں رپورٹ کرتے ہیں تو انکو انٹیری کے لئے کیس اسی کے پاس جاتا ہے جس کے خلاف شکایت کی گئی ہے - اس کے فیکٹس انڈیکیشن کے لئے نان آفیشیلس کا کمیشن رکھا جائے تو بہت اچھا ہوگا - ان کو ٹی - اے وغیرہ دینا چاہیے تاکہ وہ وہاں جا کر کام کر سکیں - آج پورے ہاؤس کے مباحث کا اقتباس یہی ہے کہ پولس برابر وہی کام کرتے جارہی ہے جس کے خلاف عوام کو شکایت ہے - اس سے صاف ظاہر ہوتا ہے کہ پولس کے رویہ میں کوئی تبدیلی نہیں ہوئی - اس نکتہ چینی سے بھی اس کے رویہ میں کوئی فرق نہیں ہوتا تو یہ باعث تعجب ہے -

श्रीमती आशाताजी वाघमारे (वैजापूर) :—अध्यक्ष महोदय, मी माननीय गृहमंत्र्यांचे लक्ष दोन तीन मुद्द्यांकडे वेधू अिच्छिते. प्रथम महत्वाची गोष्ट अशी कीं रस्ता वाहतुकीसाठी शहरांतून जी व्यवस्था आहे, ती सर्व जिल्ह्याच्या ठिकाणी व्हावयास पाहिजे. कारण खेड्यातून चार पांच मैल चालत येऊन लोकांना बस स्टँडवर झाडाखाली बसावे लागते. तसेच स्त्रियांनाहि झाडा-खालीच बसावे लागते. जर त्या स्त्रीजवळ लहान मूल असले, आणि बस भरून आली तर, जेथे दूध मिळत नाही व पाणी मिळत नाही अशा ठिकाणी, त्या स्त्रीला अजुन्हांत झाडाखाली बसावे लागते. म्हणून बस स्टँडवर लोकांना बसण्यास व आश्रय घेण्यास जागा असणे अत्यंत महत्वाचे आहे. या कडे गृहमंत्री लक्ष देतील अशी मी अपेक्षा करते.

दुसरी महत्वाची गोष्ट म्हणजे अशी आहे, आणि ती मोठ्या दुःखाने सांगावी लागते, कीं पोलीस आमच्या संरक्षणासाठी असतात, पण जर कुंपणानेच शेत खाऊन टाकले तर त्याला काय अुपाय ? अशी पोलीस संरक्षकांची गोष्ट आहे. मला असे म्हणावयाचे आहे कीं, आज तुमचे कुंपणच शेत खात आहे. या दोन वर्षांच्या काळांत पोलीस खात्यावरील खर्च निम्नाने कमी झालेला आहे. आज पोलीसावरील खर्च तीन कोटी चौवीस लक्ष आहे. हा खर्च होणारच, कारण तो समाजाच्या संरक्षणासाठी होत आहे, आणि पोलीस हे समाजाचे संरक्षक आहेत. पण ही गोष्ट पोलीसांना अद्याप शिकवली गेली नाही असें मोठ्या दुःखाने म्हणावे लागते. कोणत्याहि ठिकाणी मग ती अेखादी यात्रा असो किंवा अेखादा समारंभ असो, तेथे व्यवस्थेसाठी पोलीस असतात. आमच्या येथे मुंबजी प्रांताप्रमाणे दारूबंदी नाही. तेव्हां पोलीस अशा प्रसंगी दारू पिऊन अुभे असतात. मला मोठ्या खेदाने म्हणावे लागते कीं अशा ठिकाणी जेव्हां स्त्रिया येतात, तेव्हां त्यांची सम्यतेची वागणूक नसते. कारण आपण त्या ठिकाणी आलेल्या महिलांच्या संरक्षणासाठी आलो आहोत ही जाणीव पोलीस अधिकाऱ्यांना नसते. मी विधान सभेत बोलत आहे, तेव्हां त्यांच्या वागणुकी आणि वर्तनाचे वर्णन करणे योग्य होणार नाही. पण मला अेवढेच सांगावयाचे आहे कीं त्यांची वागणूक अत्यंत असम्यतेची असते. याकडेहि गृहमंत्र्यांनी लक्ष द्यावे अशी माझी त्यांना आग्रहाची विनंती आहे.

طبقہ و کلا سے ہے۔ انٹلکچوئیس سے ہے پبلک پراسیکیوٹرس ایڈوکیٹ جنرل سے لیکر اضلاع کی عدالتوں میں تک کام کرتے ہیں۔ لیکن ان کی زندگی تین تین سال کیلئے بڑھائی جاتی ہے۔ تو سرویس کے تعلق سے جو انسٹنٹی خاصکر نیچے کی عدالتوں کے تعلق سے ہے وہ غور مکرر کے قابل ہے۔ ابھی ابھی مجھے یہ معلوم ہوا ہے کہ ایڈوکیٹ جنرل کے تحت جو پبلک پراسیکیوٹرس کام کرتے ہیں وہ ۱۰-۱۲ سال کا تجربہ رکھتے ہیں۔ لیکن انکو نوٹس دی گئی ہے۔ ان لوگوں کے بارے میں پولس ایکشن سے پہلے یہ اطمینان دلایا گیا تھا کہ انفارمیٹی ہی سہی یہ وثوق دلایا گیا تھا کہ ہر ایک کے تو انکو بیچ میں رکروٹ کیا جائے گا۔ لیکن اس کے باوجود بھی یہ ان سرٹنٹی ویسی ہی قائم ہے۔ اور آج حیدرآباد میں خود جو شخص بارہ سال تک کام کرچکا ہے اسکو نوٹس دی جاتی ہے۔ ایسا حکم عدالت کی جانب سے دیا جاتا ہے یا آئریبل منسٹر غور و خوض کے بعد دیتے ہیں مجھے علم نہیں ہے۔ لیکن اس چیز کو میں پرزور طریقہ پر ایوان کے سامنے رکھنا چاہتا ہوں جن لوگوں کو بار کے اہم ممبر ہونے کی وجہ سے سرویس میں لیا گیا ہے ان کے ساتھ یہ برتاؤ قابل اعتراض ہے اور اس سلسلے میں حکومت کی پالیسی غور مکرر کی محتاج ہے۔ اس کے بعد ایک معمولی چیز کورٹس (Courts) کے تعلق سے کہتا ہوں۔ یہاں ہائیکورٹ کے اونچی اونچی عمارتیں موجود ہیں لیکن جو لیٹگیٹس آتے ہیں ان کے لئے کیا فسیلیٹیز ہیں۔ جس طرح نئے پل پر فٹ پاتھ ہے ویسا ہی فٹ پاتھ انکے لئے بھی ہے۔ انکے لئے فسیلیٹیز کچھ بھی نہیں ہیں۔ جب کورٹ فیس کے نام سے لیٹگیٹس آپکے خزانے میں پیسہ جمع کرتے ہیں تو انکو فسیلیٹیز بھی ملنا چاہئے۔

اسکے ساتھ ساتھ ایس۔ پی۔ اوز۔ (S.P.Os.) کے سلسلے میں یہ کہنا ہے کہ وہ ایڈوکیٹ جنرل کے تحت نہیں ہوتے۔ ایک خوددار آدمی پہلے تو یہ نہیں تسلیم کرتا کہ وہ ڈی۔ ایس۔ پی کے تحت کام کرے۔ ایسے لوگ جن کی وکالت اچھی نہیں چلتی وہ ۲۰ روپے کیلئے ایس۔ پی۔ اوز کے تحت کام کرتے ہیں۔ لیکن انکے ساتھ ڈی۔ ایس۔ پی کا کس قدر نازیبا سلوک ہوتا ہے کہنے کیلئے وقت نہیں ہے۔ میں صرف اتنا ہی کہتا ہوں کہ جس طرح ڈی۔ ایس۔ پی ہیڈ کانسٹیبل کے ساتھ سلوک کرتے ہیں ویسا ہی انکے ساتھ بھی سلوک کرتے ہیں۔ یہ ناقابل برداشت ہے۔ اسلئے وہ چاہتے ہیں ایڈوکیٹ جنرل کے تحت ہی انکو رکھا جائے۔ اور اس پر بھی یہ حالت ہے کہ تین تین سال کیلئے تقررات ہوتے ہیں۔ تو میں یہ عرض کر رہا تھا کہ پولس ڈپارٹمنٹ کے تحت انہیں رکھنے کی ضرورت نہیں ہے۔ کیونکہ جب مستقل سرکاری ملازمین کی طرح ان پر آپ فرائض عائد کرتے ہیں تو حکومت پر یہ لازم آجاتا ہے کہ انکو فسیلیٹیز بھی ویسی ہی ملنا چاہئے جیسی کہ دیگر ملازمین کو دی جاتی ہیں۔

اس کے بعد میں پولیس کے طرز عمل اور رویہ سے متعلق کہتا ہوں۔ اس کے متعلق ہم کو بولنے کی اور آپ کو سننے کی عادت ہو گئی ہے۔ سوالات کے موقع پر بھی یہی کہا جاتا ہے یہ ”بھی صحیح نہیں ہے۔ یہ بھی صحیح نہیں ہے“۔ اس سلسلے میں

بنیادی وجوہات پر غور کرنے کی ضرورت ہے۔ میں ۷۰ روپیٹے ہانے والے پولیس کانسٹیبل کو ذمہ دار نہیں گردانتا۔ لیکن حکومت کی جو پالیسی ہے اس پر توجہ دلانا چاہتا ہوں۔ عوام اور حکومت کے ناتے سے جو پالیسی ہے اس سلسلہ میں مجھے زیادہ تفصیلات بتلانے کی ضرورت نہیں ہے۔ میں اس بجٹ ہی کو لیتے ہوئے یہ کہوں گا کہ ہوم ڈپارٹمنٹ نے اٹی کمیونسٹ ورک کے لئے ۲۰۰ تا ۳۰۰ کا ایک کلرک اور عملہ رکھا ہے۔ جو ڈیموکریٹک پارٹیز ہیں ان کے خلاف کام کرنے کے لئے خاص طور پر ایک سکشن رکھنے کی کیا ضرورت ہے۔ کیا اس طریقہ سے ڈیموکریسی کے بیل بوئے بڑھنے والے ہیں۔ کیا ان طریقوں سے ڈیموکریسی کی بیخ کنی نہیں ہوتی۔ اس کے علاوہ اضلاع میں کیا ہوتا ہے میں وہ بھی بتلانا چاہتا ہوں۔ وہاں معمولی خطوط بھی وقت پر نہیں ملتے۔ ہمیں ہمارے اخبارات تک نہیں ملتے۔ تو پھر یہ کس کا شکار ہوتے ہیں۔ یہ آپ کے پولیس ڈپارٹمنٹ میں سنسر کا شکار ہوتے ہیں۔ میں خود اپنا تجربہ بتلاتا ہوں کہ پولیس کے سنسر کا شکار ہو کر میرے خطوط مجھ تک نہیں پہنچتے۔ اپوزیشن کے ساتھ حکومت کی کیا پالیسی ہوئی چاہیے اس پر غور کیا جانا چاہیے کیونکہ اپوزیشن پارٹیز کے ساتھ حکومت کی جو پالیسی ہوتی ہے وہی عوام کے ساتھ بھی ہوگی۔ آج حکومت کے جو وزراء ہیں ان کے آنکھ۔ کان اور ناک ہے۔ اخبارات میں یہ تمام چیزیں لائی جاتی ہیں لیکن پھر اپوزیشن پارٹیز کے سلسلہ میں دیہات میں جس قسم کی ذہنیت کا بیج بویا گیا ہے اسی کو میں اس کی جڑ بنیاد قرار دیتا ہوں کیونکہ حکومت کی اس پالیسی کی وجہ سے ہی پولیس پارٹی ایسی ہوگئی ہے۔ اور یہ رویہ اختیار کیا ہے۔ اس سلسلہ میں اس طرف کے بعض آئریبل ممبرس نے تقریریں فرمائیں اور یہ کہا کہ آپ یہ تو کہتے آئے ہیں اس کے بجائے کچھ کنسٹرکٹیو سجیشنس (Constructive Suggestions) دیجیئے۔ بہت سے کنسٹرکٹیو سجیشنس ہیں بشرطیکہ سننے کے لئے کان ہوں۔ میں یہ کہوں گا کہ یہاں جو قانون بنایا جاتا ہے ممبروں (Number one) محکمہ جو اس کی خلاف ورزی کرتا ہے وہ پولیس ہے۔ اس پر توجہ کریں تو بہت سی شکایات خود بخود کم ہو جائیں گی۔

اس کے بعد میں یہ عرض کروں گا کہ ضابطہ فوجداری جس کو انگریزوں نے اپنی غیر مستحکم حکومت چلانے کے لئے عوام پر لادنے کی کوشش کی وہ ویسا ہی قائم ہے۔ اگر آج کوئی حکومت کا ذمہ دار ہے تو سب سے پہلے چیف منسٹر۔ اس کے بعد کلکٹر اور اس کے بعد سب انسپکٹر کیونکہ انہیں اس قسم کے وسیع اختیارات ہوتے ہیں کہ وہ کیا نہیں کر سکتے۔ انہیں وسیع اختیارات ضابطہ فوجداری کے تحت دئے گئے ہیں۔ اسی کا نتیجہ ہے کہ وہ ان اختیارات کا مس یوز (Misuse) کرتے ہیں۔ اپوزیشن پارٹیز کو دبانے کی کوشش کی جاتی ہے لیکن ساتھ ساتھ اس کا رفلکشن (Reflection) عوام پر بھی پڑتا ہے۔ اور اشانتی (अशान्ति) میں جانے والے افراد اس سے اپنی جیب گرم کرنے کی کوشش کرتے ہیں۔ یہ تمام چیزیں اس کی جڑ بنیاد ہیں۔ اس طرح سے انہیں آج غیر معمولی اختیارات حاصل ہیں

جس شخص کو چاہے گرفتار کر سکتے ہیں۔ اور اس کے ساتھ جو چاہے کر سکتے ہیں۔ یہ اختیارات جو پولیس کو دئے گئے ہیں ان میں تبدیلی کی ضرورت ہے۔ اس کے ساتھ ساتھ جب پولیس کی جانب سے کوئی مقدمہ دائر ہو اور وہ ناکام ہو جائے تو ان لوگوں کے خلاف ایکشن لینا چاہیئے جو اس قسم کے جھوٹے مقدمات پیش کرتے ہیں۔ پولیس کے حکامان کی یہ عادت ہو گئی ہے کہ جس کسی پر چاہیں مقدمہ دائر کر دیں اور اس کو عدالت کی کشاکشی میں پھنسائیں۔ اس کے ساتھ ساتھ رولنگ پارٹی اور پولیس میں کیا نعلق ہے اس کو بھی میں ایوان کے ملاحظہ میں لانا چاہتا ہوں۔ نہ روزمرہ کی عام نسکایت ہے۔ جہاں پولیس گڑبڑ کرتی ہے اس کے ساتھ ساتھ وہاں کانگریس والے بھی رہتے ہیں۔ میں ہر کس و ناکس پر اس کا الزام عائد نہیں کرتا بلکہ بعض راکشپ ہوتے ہیں اون کی حد تک میرا یہ کہنا ہے۔ میں جنگوں کا ایک واقعہ ایوان کے ملاحظہ میں لانا چاہتا ہوں۔ ایک پنچایت کمیٹی مقرر ہوئی تھی اور مشترکہ زراعت کر کے وہاں کے چنے کی پیداوار کو فروخت کیا اور اس رقم سے وہ لوگ ایک اسکول اور ایک دیول تعمیر کرتے ہیں وہاں اسکول بلڈنگ کے ساتھ ساتھ ایک مڈل اسکول کا قیام بھی عمل میں لایا گیا۔ بد قسمتی سے وہاں کوئی کانگریسی ورکر نہیں ہے وہاں کا دیشمکھ کانگریس کا صدر ہے اور وہاں کا پروہت کانگریس کا سکرٹری ہے۔ یہ دونوں مل کر پولیس میں شکایت کرتے ہیں کہ جس شخص نے یہ اسکول بنایا ہے وہ بدعاش ہے۔ اس کے بعد آپ کے (۱۵۱) اور (۱۱۰) پروٹیبو سکشنس اس کے لئے ناگ سانپ بن کر آتے ہیں۔ اس کو مقدمہ کی کشاکشی میں مبتلا کرتے ہیں۔ ایک دفعہ مقدمہ خارج ہو جاتا ہے تو مکرر مقدمہ دائر کرتے ہیں۔ ہوتا یہ ہے کہ پولیس سب انسپکٹر جو ہوتے ہیں وہ اوپر کے طبقہ سے ہی تعلق رکھتے ہیں۔ دیشمکھوں اور پٹیل پٹواریوں اور فیوڈل سکشن ان کے روٹس رہتے ہیں۔ اگر ان کے پاس گاؤں کا کوئی بھی بڑا آدمی اگر کچھ شکایت کرتا ہے تو اس کے لئے ان کے دل میں ہمدردی کی لہریں موجیں مارتی ہیں۔ عوام کی شکایت وہ لوگ نہیں سنتے۔ کس بھونڈے اور غلط طریقہ پر آپ کے پروٹیبو سکشنس استعمال ہو رہے ہیں اس کی میں نے ایک مثال آپ کے سامنے پیش کی۔ صرف اسکول کی تعمیر کرنے کے سلسلہ میں اس پر (۱۱۰) کے تحت مقدمہ چلایا جاتا ہے۔ میں پوری ذمہ داری سے کہتا ہوں پرچہ وغیرہ منگا کر آنریبل منسٹر دیکھ سکتے ہیں۔ اس طریقہ سے خود عدالتوں کو بھی متاثر کیا جاتا ہے۔ اگر (۱۱۰) کے تحت کوئی مقدمہ خارج ہو جاتا ہے تو پھر اس کے بعد پولیس انسپکٹر کانگریس کے پریسیڈنٹ سے لیکر منصفی تک سب لوگوں کو متاثر کرتا ہے۔ دراصل وہاں کے نام نہاد کانگریسی یہ چاہتے تھے کہ چنے کی پیداوار ہڑپ کر لی جائے۔ پی۔ ڈی۔ یف والے یہ چاہتے تھے کہ اس پیداوار کا نصف نکال کر اسکول کی تعمیر میں خرچ کیا جائے۔ کانگریس کے پڑپوزل کی پولس تائید کرتی ہے اور اس کے ساتھ ساتھ عدالتوں کو بھی متاثر کیا جاتا ہے۔ اس سلسلہ میں مزاحمہ بھی کیا گیا ہے۔ لیکن میں یہ عرض کروں گا کہ جہاں کہیں پروٹیبو سکشنس کا اس طرح بیجا استعمال ہوتا

ہے وہاں پولس کے عہدہ داروں کو اس کا ذمہ دار گردانا چاہیئے تاکہ اس طرح کے غیر ذمہ دارانہ حرکات عمل میں نہ آسکیں۔ اور اس کا انسداد ہو۔

شری بسن گوڑہ (لنکسگور) - مسٹر اسپیکر سر - پولیس ڈپارٹمنٹ کے بجٹ پر میرا ایک کانسی ٹیونسٹل آبجکشن ہے۔ اڈمنسٹریشن آف جسٹس کے مد میں دس لاکھ سات ہزار روپیہ جو بتائے گئے ہیں میں سمجھتا ہوں کہ وہ پورے ہائی کورٹ کے بنائے گئے ہیں۔ حالانکہ (۲۷-۷۱) میں صرف ہائی کورٹ کے جسٹس کی سیلیریز اور ان کے الاؤنس کے بارے میں چارجڈ (Charged) ہے۔ لیکن پورے ہائی کورٹ کے اکسپینڈیچر کی ووٹنگ اس میں نہیں آتی۔ کیونکہ یہاں ہم ڈسکشن کر سکتے ہیں اور اسٹیبلشمنٹ پر ووٹ نہیں دے سکتے۔ اس کا یہ مطلب ہو سکتا ہے۔ مگر کانسی ٹیونسٹل کے لحاظ سے میں سمجھتا ہوں کہ ہائی کورٹ کے جسٹس کی سیلیری اور ان کے الاؤنس کے بارے میں چارجڈ اکاؤنٹ ہو سکتا ہے۔ مگر دوسرے اکسپینڈیچر بھی اس میں آتے ہیں۔ اس طرح سے بجائے (۲۳۱۱۱۰) چارجڈ اکاؤنٹ ہو سکتے ہیں۔ باقی ادرا اکسپینڈیچر (Other expenditure) ہو سکتے ہیں۔ اس لئے میں سمجھتا ہوں کہ اس میں تبدیلی ہونا لازمی ہے۔

دوسری چیز یہ ہے کہ حال ہی میں گورنمنٹ کی اس پالیسی کا اظہار ہوا تھا کہ ہر نعلذہ پر ایک منصفی قائم کی جائے۔ لیکن ابھی تک اس کا انتظام نہیں ہوا۔ اور اس کے برخلاف گلبرگہ ضلع میں سے ایک منصفی کم کرنے کی پالیسی کا اظہار گورنمنٹ کی جانب سے ہوا ہے میں سمجھتا ہوں کہ یہ ایک تکلیف دہ چیز ہے۔ کیونکہ ہر تعلقہ کے ہیڈ کوارٹر پر ایک منصفی کا ہونا لازمی ہے تاکہ ہر تعلقہ میں کافی سہولت مل سکے۔ ورنہ رعایا کو تکلیف ہوگی۔ گلبرگہ ضلع میں تعلقہ جیورگی ایسا تعلقہ ہے اگر وہاں کی منصفی کو کم کیا جائے تو جیورگی کے لوگوں کو کم از کم ۸۰ میل کا فاصلہ طے کر کے گلبرگہ آنا پڑیگا۔ درمیان میں پل نہ ہونے کی وجہ سے بارش کے زمانے میں ان لوگوں کو بڑی تکلیف ہوتی ہے۔ شاہ پور سے یادگیر اور یادگیر سے ہوتے ہوئے گلبرگہ آنا پڑتا ہے۔ اس کی وجہ سے نہ صرف عوام کو بلکہ گورنمنٹ کو بھی زیادہ اکسپینڈیچر ہوتے ہیں۔ پولیس والوں کے آنے جانے کا خرچہ۔ گواہوں کو طلب کرنے کا خرچہ وغیرہ اس قسم کے اکسپینڈیچر سے زیادہ ہوں گے۔ میں آنریبل منسٹر سے عرض کروں گا کہ شاہ پور اور جیورگی کے لئے ایک منصفی شاہ پور میں قائم کی جائے تو اچھا ہوگا۔ اگر آنریبل منسٹر اس کے متعلق غور کریں تو اس تعلقہ کی رعایا کی تکلیف کم ہو جائیگی جو اب تک تکلیف اٹھا چکی ہے۔

تیسری چیز یہ ہے کہ حال ہی میں یہ بھی ظاہر کیا گیا تھا کہ تعلقہ اللہ۔

کام - سیڑم - تانڈور میں کورٹ لینگویج (Court language) مرہٹی قرار دی گئی ہے۔ اور بیدر ضلع میں سون پور - بیدر - ہمناباد - ظہیر آباد اور ملکھیر کو مرہٹی زبان کا علاقہ قرار دیا گیا ہے۔ میں کہنا چاہتا ہوں کہ حکومت سے یہ عرض

کرنا چاہتا ہوں کہ کرنائٹک کے تعلق سے حکومت حیدرآباد نا انصافی کر رہی ہے۔ اس واسطے کہ ہمارے پاس بیدر ضلع میں احمد پور اور نلنگہ چھوڑ کر پورے ضلع کرنائٹک کے تسلیم کئے گئے ہیں۔ اس طرح گلبرگہ کو بھی کنٹری ضلع تسلیم کیا گیا ہے۔ رائچور میں بھی عالم پور اور گدوال کو چھوڑ کر پورے ضلع کو کرنا ٹک تسلیم کیا گیا ہے۔ یہ چیز خود کانگریس کے رزولوشن میں درج ہے۔ اس کے باوجود میں نہیں سمجھتا کہ بیدر کو اس طرح سے مرہٹواڑہ اور تلنگانہ میں کیوں بشوارہ کیا جا رہا ہے۔ گلبرگہ جو خاص طور پر کنٹری ضلع ہے اس میں سے چار تعلقوں کی کورٹ لینگویج تلگو یا مرہٹی قرار دی گئی ہے۔ ہائی پاور کمیشن کے آنے سے پہلے ہی کرنا ٹک کی رعایا پر اس قسم کا انیائے کرنے کی ایک کانسپائریسی (Conspiracy) معلوم ہوئی ہے۔ اگر آپ اردو کو کورٹ لینگویج سے نکال کر دوسری ریجنل لینگویج کو اس کی جگہ قائم کرنا چاہتے ہیں تو میں آپ سے یہ صاف عرض کروں گا کہ احمد پور اور نلنگہ کو چھوڑ کر بیدر کی کورٹ لینگویج کنٹری رکھئے۔ پورے گلبرگہ ضلع میں کنٹری رکھئے اور رائچور میں عالم پور اور گدوال کو چھوڑ کر کنٹری لینگویج قائم کیجئے۔ اگر ایسا آپ نہیں چاہتے ہیں تو میں سمجھتا ہوں کہ یہ بالکل نا انصافی ہوگی۔ اس کا تصفیہ تو ہائی پاور کمیشن کو کرنا چاہیئے۔ اور بیہا شاواری پرانتھ کا باؤنڈری کمیشن جو ٹرنسے کرے اس میں کسی قسم کی تبدیلی نہ ہونی چاہیئے۔ اگر ایسا نہ ہوا تو کرنائٹک کی جتنا جواب تک بھی حیدرآباد حکومت کی نا انصافی برداشت کر رہی ہے وہ ان چیزوں کے خلاف پروٹسٹ کریگی۔ اور اپنے حقوق حاصل کرنے کے لئے بیس فل مینس (Peaceful means) اڈاپٹ کریگی۔ پہلے کی حکومت نے بھی کرنائٹک کی جتنائے لئے کوئی سہولت نہیں دی تھی اور آج کی حکومت میں بھی مہاراشٹرا اور آندھرا دونوں کے انٹیریس ہی زیادہ ہیں۔ کرنائٹک کے جو کچھ بھی گریونس اور ڈیمانڈس ہیں ان کو نظر انداز کیا جا رہا ہے۔ میں کچھ اور چیزیں دوسرے آٹم کے وقت عرض کروں گا لیکن فی الوقت کورٹ لینگویج کے بارے میں میں یہ صاف عرض کرنا چاہتا ہوں کہ ہائی پاور کمیشن کے تصفیہ تک اور حیدرآباد کاؤس انٹگریشن ہونے تک اسٹیٹس کو (Status Quo) میں قائم کیا جائے۔ اور ان علاقوں میں بتدریج اردو کو نکال کر کورٹ لینگویج کو کنٹری میں تبدیل کیا جائے۔ اگر اس کے خلاف کچھ ہوگا تو کرنائٹک کی جتنا اس کی ذمہ دار نہیں ہوگی بلکہ حیدرآباد اسٹیٹ کی حکومت اسکی ذمہ دار ہوگی۔

اس کے علاوہ ایک اور چیز مجھے کہنی ہے۔ کرنائٹک میں جو بیس ڈپوز ہیں وہاں لوگوں کے ٹھہرنے کا انتظام نہیں ہے۔ بہت سے آنریبل ممبرس ہمنہ آباد اور گلبرگہ تشریف لاتے ہیں۔ اور یاد گیری سے ہو کر شولا پور وغیرہ جاتے ہیں انہوں نے دیکھا ہوگا کہ جہاں جہاں بس اسٹانڈ ہیں وہاں لوگوں کے ٹھہرنے کے لئے کافی انتظام نہیں ہے۔ یاد گیری تعلقہ میں جس جگہ گورنمنٹ کے بسس آتے ہیں اور جس جگہ سے گزرتے ہیں وہاں ٹھہرنے کا انتظام نہیں۔ کم از کم وہاں ٹین شیٹس کا بھی انتظام نہیں ہے۔ جس کی وجہ سے بارش میں بہت تکلیف

ہوتی ہے۔ اس لئے یادگیر اور ہمنما آباد میں وہاں کی رعایا کو ٹھہرنے کے لئے انتظام ہونا چاہیے۔ تاکہ گرما۔ سرما اور بارش میں سہولت مل سکے۔ اس کے علاوہ یہ بھی میں عرض کروں گا کہ جہاں کہیں بے بس میں ہم جاتے ہیں.....

Mr. Deputy Speaker : The time is over.

شری شانتا بائی - مسٹر اسپیکر سر - میرے اٹھنے کے ساتھ میرے بھائی دیشپانڈے ہنس رہے تھے -

یہ آپ کی سہربانی ہے۔ کل سے پولیس بچٹ پر بارش کی طرح ہر شخص بچٹ کر رہا ہے۔ صرف مجھے پانچ منٹ دئے گئے ہیں۔ اس کی پابندی کرنا ہے۔ مجھے اس سلسلے میں تھوڑے ہی پائٹس رکھنا ہے۔ مرہٹی میں ایک کہاوت ہے -

“दर वर्षा प्रमाणे गणपती येतो”

اسی طرح ہر سال پولیس بچٹ پر سب سے زیادہ بچٹ ہوتی ہے اور اسی پر گالیوں کے گولے بارش کی طرح برسائے جاتے ہیں بچٹ میں پچھلے دو سال سے کمی ہورہی ہے۔ لیکن اس کے باوجود بعض آئریبل ممبرس جو ذمہ داری کے ساتھ ایک لاکھ عوام کی نمائندگی کرتے ہیں بار بار یہ دہراتے رہتے ہیں کہ پولس کے خرچہ میں کمی کرو۔ کیا میں تھوڑی دیر کے لئے پوچھ سکتی ہوں کہ پولس کو کم کرنا حقیقت میں ٹھیک ہوگا۔ پولس ہاری حفاظت کا کام کرتی ہے اس کو کم کریں تو بدامنی زیادہ ہونے کا امکان ہے۔ گزیشن وغیرہ پر اعتراض کیا جاتا ہے۔ اس قسم کے اعتراضات برابر دو سال سے کئے جارہے ہیں۔ میں یہ کہنا چاہتی ہوں کہ آپ لوگ ذمہ دار لوگ ہیں اس طرح کی باتیں نہیں کرنی چاہئے۔ اور میں پراتھنا کرتی ہوں کہ اس سال کے بچٹ کو آپ لوگ منظور کر لیجئے۔ میں آئریبل ہوم منسٹر کا شکریہ ادا کرتی ہوں کہ انہوں نے پولس ڈپارٹمنٹ میں عورتوں کی بھرتی کی ہے۔ چالیس عورتوں کا تقرر اس میں کیا گیا ہے۔ میرا کہنا یہ ہے کہ انکی ذمہ داری ان پر لادنی چاہئے۔ انکو کوئی ذمہ دارانہ کام دینا چاہئے۔ میں سمجھتی ہوں کہ سی۔ آئی۔ ڈی۔ میں عورتیں زیادہ بہتر طریقے پر کام کر سکتی ہیں اسلئے اس میں انکو زیادہ حصہ دینا چاہئے۔ اور سی۔ آئی۔ ڈی۔ میں انکو کام کرنے کا موقع دیا جائے تو وہ اچھی کارگزاری کر دکھائیں گی۔ میں ہر ماہ جیل کی وزٹ (Visit) کرتی ہوں۔ میں دیکھتی ہوں کہ بہنوں کو ۱۰۔۱۰۔۱۰۔۱۰ سال کی سزادی جاتی ہے۔ میں سمجھتی ہوں کہ اگر سی۔ آئی۔ ڈی۔ میں ہاری بہنوں کو لیا جائے گا تو وہ اچھی طرح سے جانچ کرینگی اور صحیح رپورٹ دیں گی۔ میں پراتھنا کرتی ہوں کہ ہاری چالیس بہنوں کو اس میں لیا گیا ہے لیکن اب اور زیادہ بہنوں کو لیا جائے۔ ہر ضلع میں انکے ناکے رکھنے چاہئیں۔ اگر اس پر اپوزیشن کی طرف سے اعتراض ہو تو میں یہ کہوں گی کہ عورتیں جتنا کام کر سکتی ہیں آپ لوگ نہیں کر سکتے۔

(Laughter) صحیح کہوں تو آپ لوگوں کو غصہ آسکا۔ گذشتہ دو سال سے اس بچٹ پر جو گالیاں اور برسات کی طرح باتوں کا جو چھڑکاؤ کیا جا رہا ہے

اس طرح اس سال نہیں ہونا چاہئے۔ میں آنریبل منسٹر صاحب کو پھر بار کباب دیتے ہونے کہوں گی کہ سی۔ آئی۔ ڈی۔ میں عورتوں کو زیادہ سے زیادہ بھرتی کرنا چاہئے۔ میں اپوزیشن پارٹی کے بھائیوں سے کہوں گی کہ بغیر کسی اعتراض کے اس سال کا بجٹ منظور کر دیں لیکن عورتوں کے لئے بجٹ میں گنجائش ہونی چاہئے۔ (Laughter) کیوں کہ عورتیں ہی دیش کے مسائل کو حل کر سکتی ہیں۔ ہر بات میں عورتیں آگے بڑھ رہی ہیں۔ میں بھی عورت ہوں اس لئے کہتی ہوں کہ عورتوں کو زیادہ موقع دینا چاہئے۔ (Laughter) بلکہ میں تو یہ کہوں گی کہ عورتوں کو انسپکٹرس اور آئی۔ جی۔ پی۔ کی پوسٹس (Posts) بھی دینا چاہئے۔ چالیس عورتوں کو لفٹ۔ رائیٹ (Left Right) کرنے کیلئے لیا گیا ہے یہ کافی نہیں ہے۔ میں کہوں گی کہ زیادہ سے زیادہ اونچے پوسٹ (Post) عورتوں کو ملنا چاہئے۔ میں اپوزیشن پارٹی سے کہوں گی کہ اس بجٹ کو منظور کر لیں تو آئندہ آپ کے مسائل ٹھیک طور پر حل ہو سکیں گے۔

శ్రీమతి. ఆరుట్ల కమలాదేవి : (ఆలేరు) :

అధ్యక్షా, మహాశయూ,

ఇదో మూడవ సంవత్సరం బడ్జెటు. పోలీసువైన కొద్దిగా డబ్బు తగ్గించారని చెప్పి మనం యీనాడు పోలీసు మినిస్టరుగారిని మెచ్చుకోవడం గాని, వారికి వందనాలర్పించడంగాని మన బాధ్యత కాదు. ఈ సంవత్సరం బడ్జెటులో పోలీసువైన ఖర్చు కొంత తగ్గించారు. నిజమే కాని ప్రతి సంవత్సరం ఏవిధంగా అయితే పోలీసుకు ఖర్చు పెంచుతూ వచ్చారో అదే విధంగా ఇప్పుడు కొద్ది కొద్దిగా తగ్గిస్తూ వచ్చారు. ఈ రోజున హోంమంత్రిగారు ఒక ప్రశ్నకు జవాబుచెబుతూ ౧౯౪౩వ సంవత్సరం పోలీసుకు ౫౦ లక్షలు ఖర్చు పెట్టబడిందని చెప్పారు. ౧౯౫౨వ సంవత్సరంలో ౫౯.౨ లక్షలవరకు యీ పోలీసు ఖర్చును పెంచుతూ వచ్చారు. ఏదో కొద్ది మొత్తము తగ్గించినంత. మాత్రమున పూర్తిగా పోలీసుపై ఖర్చు తగ్గించారని కాదు. ౧౯౪౩ వ సంవత్సరం నుండి ౧౯౫౩ వ సంవత్సరం వరకు అంటే. ఈ వది సంవత్సరాలలోను ౫౦ లక్షల నుండి ౫౯.౨ లక్షలవరకు పోలీసు ఖర్చును పెంచడం జరిగింది. పోలీసు యాత్రను అయిన తరువాత కూడా రక్షణకొరకు వరిపాలన తరువాతకూడా, చివరకు కౌంగ్రెసు పరిపాలనలోకూడా, మూడు సంవత్సరాల కౌంగ్రెసు ప్రభుత్వకాలంలోకూడా పోలీసుపై ఖర్చును పెంచుతూ వచ్చారు. దానిని బట్టి యీ సంవత్సరం కొద్దిగా తగ్గించినంత మాత్రమున నిజంగా పోలీసు ఖర్చును తగ్గించారా అనేది చూడాలి. అనాడు పోలీసులు కావలసినస్త్రీ యూనియన్లనుంచి తెప్పించుకోవచ్చారు. ఇప్పుడు వారిని తగ్గించడం వల్ల వదిలక్షల అరవైబదువేల డబ్బు మిగిలింది. 3 జెనరాలియన్లలో ఒకటి తగ్గించారు. అందువల్ల ౭ లక్షల ౫౪వేలు మిగిలాయి. కైల్వేలను సెంటర్ తీసుకోవడంవల్ల వైట్స్ పోలీసు ఖర్చు తగ్గి అందువల్ల కొంత డబ్బు మిగిలింది. ఈ విధంగా వీనిపైన మిగిలింది దాదాపు ౨౦ లక్షల డబ్బు. అంతేగాని, గ్రామాలలోపల పోలీసును తగ్గించారా, గ్రామాలలోని క్యాంప్స్ తగ్గించారా, అనేది ఆలోచించాలి. ప్రతి గ్రామంలోపల ఇదివరకు ఎంతమంది పోలీసులు ఉన్నారో ఇప్పుడు అంతమంది ఉన్నారూ. ఇదివరకు ఎన్ని క్యాంప్స్ ఉన్నాయో ఇప్పుడు అన్నీ ఉన్నాయి.

క్యాంప్స్ను తగ్గించలేదు, పోలీసును తగ్గించలేదు. ప్రజలను అసహ్యించుకునే పోలీసులు అతాగే ఉన్నారు. ౧౯౫౩ వ సంవత్సరం వరకు పోలీసుపై ఏదైతే ౫౯౨ లక్షలవరకు ఖర్చు వెడుతున్నారో అందులో నుంచి ౨౦ లక్షలు తగ్గించినంత మాత్రమున సరిపోదు. ౧౯౫౨ వ సంవత్సరములో అప్పటి అవసరము కోసము బయటించి పోలీసును తొప్పించుకొని పోలీసు ఖర్చును పెంచాము. ఇప్పుడు ఆ అవసరము అయిపోయింది. కాబట్టి తిరిగి ౧౯౪౩ వ సంవత్సరమునాటి లేక ౧౯౫౦ వ సంవత్సరము నాటి పోలీసు ఖర్చువరకు తొస్తే సరిపోతుంది. కాబట్టి, ౧౯౪౩, ౧౯౫౦ వ సంవత్సరాలలో ఎంతైతే పోలీసుకు ఖర్చువెట్టారో అంతవరకు తగ్గించాలి. అంతేగాని, ౨౦ లక్షలు తగ్గించినంత మాత్రమున సరిపోదు. నిన్న ఒక ప్రశ్నకు జవాబు చెబుతూ హోంమంత్రి ముహినుబాద్ లో ఒక పోలీసు సబ్-ఇన్ స్పెక్టరు రేప్ (Rape) చేసిన విషయం నిజమేనని ఒప్పుకొన్నారు. పోలీసులు ఇటువంటి అత్యాచారాలు చేస్తుంటే, యీ పోలీసు శాఖను సహార్షు చేయడం మంచిది గాదు. ఆడ పోలీసులను వేస్తే ఇటువంటి అత్యాచారాలన్నీ పోతాయని అంటున్నారు. ఆడపోలీసులను వేసినంత మాత్రాన ఇవి పోవు. ఈ నాడు అధికారంలో ఉన్న పార్టీ పాలనీ మారాలి. ఈ పార్టీయొక్క పద్ధతి మారాలి. ఆడపోలీసును పేయడం అవసరమే. ఆడ పోలీసులు కావాలని మేము కోరాము. ఇప్పుడు వున్న పోలీసులను తగ్గించి కొంతమంది ఆడపోలీసులను ఏర్పాటు చేయాలి. ఇప్పుడు ఉన్న పోలీసులను తగ్గించకుండా అదనంగా పోలీసులను ఏర్పాటు చేసి ఎక్కువ ఖర్చువెట్టడము కాదు. ఈ నాడు ఆడవారు మంతులై కూర్చున్నారు. ఈనాడు ఆడవారు మంతులై సీట్లలో కూర్చొని ఎంత చేస్తున్నారో, పోలీసులలో ఆడవాళ్ళను తీసుకొన్నా అంతే చేస్తారు. ఆడవాళ్ళు వచ్చినంత మాత్రమున పోలీసు పాలసీగాని, ప్రభుత్వ పాలసీగాని, మారదు. అయితే, ఇప్పుడు వున్న పోలీసును తగ్గించకుండా కొత్తగా ఆడ పోలీసులను ఏర్పాటు చేసి హెచ్చు డబ్బును పోలీసుపైన ఖర్చువెట్ట వలసిన వనితేదు. ఈనాడు వున్న పోలీసులను తగ్గించి కొంతమంది ఆడపోలీసులను నియమిస్తే అత్యాచారాలు కొంతవరకు తగ్గవచ్చును.

ఆర్. టి. డి. విషయం చూస్తే,—పోయిన సంవత్సరం స్ట్రైకిక్ (Strike) జరిగింది. ఆ సందర్భంలో పోలీసుకు ౯౫వేల రూపాయలు ఖర్చు వెట్టారు. పోలీసులను ఆ సందర్భంలో పిలిపించి ఆ ఖర్చు వెట్టారు. ఆర్. టి. డి. కి ఎంత ఆదాయం వస్తుంది? ఖర్చు పోగా ౩౨ లక్షల వరకు స్ట్రైమిగిలుతుంది. యిక్ వల్ల కొంత నష్టము వచ్చినా ౩౨ లక్షల వరకు పోగింది. వారు బోనసు కావాలని కోరితే, అందుకు అంగీకరించడం తేదు. వారు బోనసు కావాలని కోరినంత మాత్రాన ఇల్లెగల్ (Illegal) అంటూ ౧౬ రోజులు జీతం ఇవ్వలేదు. కాని వారు స్ట్రైకిక్ చేస్తే పోలీసులను పిలిచి వారికింద ౯౫వేల రూపాయలు ఖర్చు వెట్టడానికి మాత్రం ఒప్పుకొన్నారు. వారు మూడుమాసాలు బోనసు కోరితే ఒక సెల బోనసు అయినా ఇవ్వలేదు. స్ట్రైకిక్ చేసిన రోజుల డబ్బును కూడా ఇంతవరకు వారికి ఇవ్వలేదని విన్నాం.

ఆర్. టి. డి. లో సామానులు వెళ్తే వారు బామానీలను గురించి కొన్ని విషయాలు చెబుతాను. బస్సుల్లో నెకండుక్లాసు చార్జీలు వున్నాయి. ప్రజలు బస్సు చార్జీలనే ఇవ్వకేని స్థితిలో వున్నారు. అసలు బస్సు రోడ్లను తగ్గించాలి. చిన్న మూటను పైన పడవేయటానికిగాని క్రిందకు దించటానికి గాని బామానీలు ధెండు అణాలు తీసుకొంటున్నారు. సామాన్య ప్రజలు అసలే బస్సుచార్జీలు ఇవ్వకేని స్థితిలో ఉంటే యీ డబ్బును కూడా ఎట్లా ఇస్తారు. రైళ్ళలో పెద్ద-పెద్ద మూటలను

میں ہاتھ ہے یہ چیز ڈی - یس - پی - کی رپورٹ اور تفتیش میں خود ظاہر ہوئی ہے -

ڈسٹرکٹ کا ایریا بڑا ہونے کے باوجود وہاں پولس کم رکھی جاتی ہے - اورنگ آباد جسکا ایریا (۶۴۵۵) مربع میل اور پاپولیشن (۱۱۸۴۴۸۵) ہے وہاں پولس کی اسٹرنٹھ (۱۶۷۴) ہے - پرہنی میں جسکا ایریا (۴۸۴۶) مربع میل ہے - اور آبادی (۱۰۹۶۴۵) ہے - پولس کی اسٹرنٹھ ۸۶۱ ہے اس کے برعکس شہروں میں زیادہ پولس رکھی جاتی ہے - تاکہ یہاں جو عوامی تحریکیں اٹھتی ہیں انہیں کچلا جائے - میں تلنگانے کا حال بتلاتا ہوں - نظام آباد کا ایریا (۲۷۸۰) مربع میل اور آبادی (۷۷۳۰۷۷) ہے وہاں پولس کی اسٹرنٹھ (۸۶۴) ہے - اس سے عوام کی عزت و آبرو کا تحفظ نہیں ہو سکتا - میرا حکومت پر یہ الزام ہے - اور پھر آپ نے الگ الگ ڈویژنس رکھے ہیں - پرہنی نانڈیڑ نظام آباد میں ایک ایک ڈویژن ہے - بیدر گلبرگہ وغیرہ میں دو دو ڈویژنس ہیں - میرا یہ کہنا ہے جہاں دو دو ڈویژنس رکھے گئے ہیں وہاں دو کے بجائے ایک ڈویژن رکھی جائے - اس طرح کافی بچت بھی ہو سکتی ہے - تلنگانہ میں عوامی تحریکوں کو کچلنے کیلئے جو پولس اسٹیشن قائم کئے گئے تھے انہیں اٹھالینا چاہئے اور جہاں رابری (Robbery) اور ڈکیتی کی وارداتیں زیادہ ہوتی ہیں وہاں انہیں قائم کرنا چاہئے -

ایک اور بات مجھے یہ کہنی ہے کہ پولس کمشنرس آفس پر ۱۰ لاکھ روپے خرچ ہوتے ہیں یہ بہت زیادہ ہے - حیدرآباد اور سکندرآباد میں توہر قسم کی سہولتیں مہیا کی جاتی ہیں -

سٹی پولیس کے تحت ۴ ٹرکس - موٹر سیکلس ۳۱ - جیبس کارس ۶ - اور دیگر قسم کی کارس وغیرہ ہیں - اس کے باوجود انتظام برابر نہیں ہوتا - ان پر کافی پیسہ خرچ کیا جاتا ہے - ہر قسم کی سہولتیں حاصل ہیں - اور پھر مجھے یہ بھی کہنا ہے کہ جو جیب کارس ۱۲-۱۳ ہزار میں خریدی گئی تھیں انہیں ایک دو سال چلا کر پولیس کے عہدہ داروں کو ایک ایک ہزار دو دو ہزار میں اقساط پر دیا گیا - اس طرح انہیں یہ موٹریں مفت دی گئیں - اور حکومت کا پیسہ اس بے دردی سے پانی کی طرح بہایا جاتا ہے - ایسے ۳ - ۴ جیب کارس فروخت کئے گئے ہیں - میں آنریبل ہوم منسٹر سے درخواست کروں گا کہ وہ ان کارس کو حاصل کر کے پبلک آکشن کریں - اس سے حکومت کو فائدہ ہو سکتا ہے - اگر پولیس کے لوگوں کو ضرورت ہو تو وہ پبلک آکشن میں لے سکتے ہیں کیوں کہ مارکٹ میں ان جیب کارس کی قیمت ۶۵۰ ہزار سے کم نہیں ہے -

آرٹ ٹی - ڈی کے بارے میں مجھے کہنا ہے کہ پرہنی میں آر - ٹی - ڈی کے بسنس چلانے کی ضرورت ہے - آنریبل منسٹر کے ڈپارٹمنٹ نے خود اپنی رپورٹ میں یہ لکھا ہے اور یہ خود رپورٹ میں کہا گیا ہے - وہاں سٹاپسٹس عوام کو لوٹ رہے ہیں - لیکن کہا جاتا ہے

The question of extension of R. T. D. to Parbhani District is under consideration.

کہ یہ فائیو ایر پلان میں انڈر کنسیدریشن ہے - پرہنی میں سٹاپسٹس چلائے

جا سکتی ہے۔ جنتور میں ڈھو بنا کر - جنتور سے سیلو بسمت - جنتور سے پرہنی - جنتور سے انڈول سرویس چلائی جا سکتی ہیں۔ وہاں عوام کے پیسہ کو خرچ کر کے نئی روڈ بھی بنائی گئی ہے۔ لیکن مناپلیسٹس فائلڈ اٹھا رہے ہیں۔ میں آریبل منسٹر سے یہ مطالبہ کروں گا کہ وہ مناپلیسٹس کو جو پرمٹس دئے گئے ہیں وہ کینسل بھی کر سکتے ہیں۔ آپ نے انہیں جنم بھر کے لئے تو پرمٹ نہیں دیا ہے۔ یہ وہاں کے عوام کا مطالبہ ہے۔ اس بارے میں دلچسپی لیکر ضروری کارروائی کرنا چاہئے۔ مجھے یہ بھی کہنا ہے کہ جو ۱۱۰ نئے بسس خریدے گئے ہیں ان میں ہر ایک پر ۳۰۰ روپے کا نقصان ہوا ہے۔ آریبل منسٹر اس پر توجہ کریں۔ میں آخر میں یہی کہوں گا کہ پرہنی میں بس سرویس چلانے کے بارے میں حکومت جلد سے جلد کارروائی کرے۔

The House then adjourned for recess till Thirty five minutes past Five of the clock.

The House reassembled after recess at Thirty five minutes past Five of the clock.

[Mr. Deputy Speaker in the chair.]

శ్రీ వి. రామారావు : (కామారెడ్డి, రిజర్వుడు).

అధ్యక్షా, మహాశయా,

నేటి సమస్య పోలీసు సమస్య. ఈపోలీసు బడ్జెటుపై అనేక మంది గౌరవ సభ్యులు చర్చించారు. అయితే ఈ చర్చ చాలా తీవ్రంగా ఉన్నది. ఆసలు ఈ పోలీసు యొక్క డొర్నల్లీకి కారణమేమిటి? పోలీసు ఎవరికొరకు వుంచబడ్డది. అని కూడా మనం ఆలోచించ వలసి యున్నది. ఇదీ ఆలోచిస్తే మనకు ఒక విషయం తేటగా తేలుచున్నది. అదేమంటే యిప్పుడు రౌబు రాను ప్రతి సంవత్సరం పోలీసు తక్కువ అవుతోంది. ఈ సంవత్సరంకూడా తక్కువ అయినది. ఇదీ మనం ఎంతో గర్వించవలసిన విషయం. దీనిని గౌరవించడానికి బడులు మనం ద్వేషించడం, క్రిటిన్లైజ్ చేయడం ఎంతమాత్రం మంచి విషయం కాదన్నమాట. మన హైదరాబాద్ స్టేటులో అనేకమైన నటువంటి జాలుములు అల్లరులు జరిగినవి. అందువలన హైదరాబాదు స్టేటులో వుంచబడినటువంటి పోలీసు ఇండియాలో ఏ స్టేటులోనూ లేదన్నమాట. హైదరాబాదు స్టేటులో ఆర్మీ (Army) గాని, పోలీసుగాని చాలా ఎక్కువగా వుండటానికి కారణం హైదరాబాదు స్టేటులో అనేకమైన జాలుములు జరిగాయి. అవి వీటి జాలుములు అంటే రజాకార్లు, జాలుము, కమ్యూనిస్టుజాలుము ఇవిగాక హైదరాబాదు ఎక్స్‌ప్రెజ్ ఇండియా ప్రభుత్వములో పోరాడడానికి పిలిపితురీని పెంచారు. కాబట్టి హైదరాబాదు స్టేటులో పూర్వం ఆర్మీ, పోలీసు ఎక్కువగా వుండేది. సర్ ఇప్పుడు పోలీసు మన హైదరాబాదు స్టేటులో ఎంత వున్నదంటే ఇంకా ౨౫ లో ఆర్మీ ౨౫ వేల ఏల్లర, ౨౫-౨౫ లో ౨౫ వేల ఫైచెలుకు, ౨౫-౨౫ లో ౨౫ వేల ఏల్లర వుండే ౨౫-౨౫ లో ౨౫ వేలకు వచ్చింది. ౫౦-౫౦ లో ౨౫౫ దాకా వచ్చింది. కాబట్టి హైదరాబాదు స్టేటులో మొదట ఆర్మీ వున్నట్లు ఏకలా ఏ స్టేటులోనూ లేకుండా

వుండేది. ఆ ఆర్డీ అంతా యిప్పుడు రూపం లేకుండా పోయింది. ఆ నాడు, అంత ఆర్డీ ఎందుకొరకు పెట్టబడింది? మన ఇండియన్ యూనియన్‌తో హైదరాబాదు స్టేటు ఎదుర్కొనేందుకు పెట్టబడింది. అనంతరము ఇండియన్ యూనియన్‌తో హైదరాబాదు స్టేటు కలిసి పోయిన తరువాత ఆ ఆర్డీ రూపం లేకుండా పోయింది. అదే ప్రకారం ఆ నాడు పోలీసు కూడా మిలీటరీ, పాయగా, సర్వెభాన్ మరీయు రెగ్యులర్, ఇర్రెగ్యులర్ అంతా కలిపి దాదాపు ఒక లక్ష ఫోర్సు (Force) హైదరాబాదు స్టేటులో వుండేది. ఇది ఇండియన్ యూనియన్‌తో కొట్లాడడానికి ఆ ఎక్స్-రెజిమ్ (Ex-regime) పెట్టింది. ఆ ఎక్స్-రెజిమ్ పోలీసు తరువాత కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం హైదరాబాదు స్టేటులో ఏర్పడిన తరువాత అనేక చర్యలు తీసుకొని మెల్లమెల్లగా, దొర్లనాటలు తగ్గిన తరువాత, మిలీటరీని, పోలీసును తక్కువచేస్తూ వచ్చింది. అయితే ఈనాడు పోలీసు ఇప్పుడు ఎంత వున్నదంటే,—పోలీసు అంటే సివిల్ పోలీసు, తరువాత ఆరమ్డ్ పోలీసు—మొత్తం 30 పేలు పైన వున్నది. అనగా పూర్వం ఒక లక్ష ఉన్నది—యిప్పుడు దాదాపు 30 పేల వరకు వచ్చినది అన్నమాట. ఇది చాలా సంతోషించవలసిన విషయం. ఈ సంవత్సరం లోపల దొర్లనాటలు ఇంకా తగ్గిపోలే పోలీసుకూడా యింకా తగ్గిపోలేదు. పోలీసు ఎక్కువగా వుండటంవల్ల ట్రెజరీ బెంచెస్ కుగాని కాంగ్రెసు ప్రభుత్వమునకుగాని ఏవిధమైనటువంటి తాధం లేదు. పోలీసును వుంచడం వలన ప్రజలకు తాధం. పోలీసు బడ్జెటు అంటే ప్రజల బడ్జెటుని మనము అనుకోవలసివున్న దన్నమాట. అటు గౌరవ సభ్యులలో ఒకరు రూరల్ ఏరియాలో పోలీసు ఎక్కువగా వుండన్నారు. ఒకరు అర్బన్ ఏరియాలో పోలీసు ఎక్కువవుండన్నారు. అర్బన్ ఏరియాలో వుండటానికి కారణమున్నది. రూరల్ ఏరియాలో ఉండుటకు కారణమున్నది. ఇండియాలో రెండు చోట్లలోనే అర్బన్ ఏరియాలో ఎక్కువ వున్నది. ౧. హైదరాబాదు, ౨. కాశ్మీర్, ఈ పట్టణాల్లో పోలీసును ఎక్కువ పెట్టవలసి వచ్చింది. ఇండియాలో ఈ రెండు స్టేటులలో వున్నంత పోలీసు మిగతా ఏ స్టేటులోనూ లేదన్నమాట. తెలంగాణాలో కమ్యూనిస్టు యాక్టివిటీస్ (Communist activities) వలన ప్రజలకు ఎంతో నష్టం కలిగింది. ఆనరబుల్ ఆలేరు మెంబరుగారు మాట్లాడుతూ పల్లెప్రాంతాలలో పోలీసు క్యాంపు ఎక్కువగా వున్నాయని చెప్పారు. అవి ఏమీ తగ్గలేదని కూడా చెప్పారు. అవును ఎంతవరకైతే అక్కడ అల్లరులుంటాయో అంతవరకు అక్కడ పోలీసు వుంటుందన్నమాట. ఇంకొక విషయ మేమంటే ప్రక్క రాష్ట్రంలో ఎక్కువ ఏరియా వున్నదని, అక్కడ పోలీసు తక్కువవున్నదని చెప్పారు. ఆ లొక్కప్రకారం చూసినా మన పోలీసును చూచి గౌరవించ వలసినదే. ఎందుచేత నంటే మన స్టేటులో వున్నటువంటి పోలీసు చాలా ఎఫీషియంట్ (Efficient) పోలీసు అనుకో వాలి. ఎందుచేత ననగా మన హైదరాబాదు స్టేటులో వున్న క్రైములు చూడండి, ఇతర స్టేటులలోని క్రైములు చూడండి. మన హైదరాబాదు స్టేటులోని క్రైమును గురించి ఏమీ చెప్పారో చూడండి

“From the point of crime position, in Hyderabad, cognisable crimes reported in 1950-51 is 1,04,655 while the figures for the previous year is 1,11,084 which works out to 5.5 crime incidents per thousand of population in 1950-51. The figures for Madras for 1950 are 12.9 per thousand of population and in Madhya Pradesh, 7 per thousand of population.”

మన హైదరాబాదు స్టేటులో పోలీసును ఎక్కువ పెట్టడం వల్లనే క్రైముకూడా తగ్గిపోయాయనే విషయం తెలుసుకొని మనం సంతోషించవలసి యున్నది. అంతేకాకుండా మన హైదరాబాదు స్టేటులో డెకాయిటీస్ (Dacoities), రాబరీస్ (Robberies), మర్డర్లు (Murders) తగ్గిపోయాయి. ఔరంగాబాదులో చూచినట్లయితే ౧౯౫౨లో ౨౬ డెకాయిటీస్ వుంటే ౧౯౫౩ లో ౮ మాత్రమే వున్నాయి. ఈ ప్రకారం భీష్లో ౧౯౫౨లో ౨౧ వుంటే ౫౩ లో ౮ వున్నాయి.

| వర్షానికి | ౧౯౫౨ లో | ౧౫—౧౯౫౩లో | — | ౯ |
|------------------|---------|-----------|---|----|
| నాందేడ్ లో | ౫— | — | — | ౧౫ |
| గుల్బర్గా | ౪౪— | — | — | ౧౫ |
| ఉస్మానాబాద్ | ౩౦— | — | — | ౬ |
| బీదర్ | ౩౯— | — | — | ౬ |
| బీదర్ | ౩౫— | — | — | ౨ |
| రాయచూర్ | ౨౨— | — | — | ౩ |
| మహబూబ్ నగర్ | ౫౫— | — | — | ౭ |
| మెదక్ | ౩౦— | — | — | ౭ |
| నిజామాబాద్ | ౨౪— | — | — | ౭ |
| హైదరాబాదు జిల్లా | ౩౦— | — | — | ౭ |
| నరంగల్ ద. | ౧౭— | — | — | ౫ |
| నరంగల్ ఉ. | ౪౭— | — | — | ౫ |
| నల్ గొండ | ౩౦— | — | — | ౪ |
| కరీంనగర్ | ౩౬— | — | — | ౨ |
| హైదరాబాద్ నగరం | ౪— | — | — | — |
| కైత్యపోలీసు | ౫— | — | — | ౨ |

[MR. SPEAKER IN THE CHAIR.]

ఈ ప్రకారం ౧౯౫౨ లో క్రైస్తవులు ౫౦౦ వుంటే ౧౯౫౩ లో ౧౦౦౪ వున్నాయి. ఇంక తగ్గిపోయినందుకు మనం ఎంతో సంతోషించవలసి యున్నది. ఫోలీసు ఎఫ్.ఐ.సి.యంట్ అయినది, ఫోలీసు ఎఫ్.ఐ.సి.యంట్ కాకపోతే ఇంతమంది అప్రజీషివ్ సభ్యులు ఈ అసెంబ్లీలోకి రాలేకపోయే వారన్నమాట. ఫోలీసు తొలివిగాను, న్యాయంగాను పని చేసినందుననే న్యాయంగా ఎక్స్‌క్లస్వ్ జరిగి అప్రజీషివ్ సభ్యులు రాగలిగినారన్న మాట. కమ్యూనిస్టు చేతుల్లోనే ప్రభుత్వం వుంటే ఒక్క కాంగ్రెసు సభ్యుడు కూడా రాలేకపోయేవాడన్నమాట.

ఇంకొక విషయం. “What Communists have done to the Harijans?” అనేది. కమ్యూనిస్టులు హరిజనులకు మెహార్పానీ చేశామని చెప్పుకుంటున్నారు. నిజానికి హరిజనులకు కమ్యూనిస్టులు చేసినటువంటి నేవ ఏమిటి? మేము తెలంగాణాలో, ఈ అసెంబ్లీ పెట్టకపూర్వం, తిరిగి చూశాము. కమ్యూనిస్టులు హరిజనులకు అనేకమైనటువంటి మోసాలు చేశారని మేము గా. మెంబరు సికిందరాబాదు రిజర్వుడునీటు, S.R. బాబయ్య, D. రాజయ్య, దళితజాతీయారుకులు, దళితజాతీ సంఘాద్యతులు S. లక్ష్మయ్యగారి ధన సహాయంతో తెలంగాణాలో పర్యటనముచేసి అక్కడ హరిజనుల పరిస్థితులు చూసి తెలుసు కున్నాము. ఇక్కడ అప్పటినుంచి హైదరాబాద్ స్టేట్ దళితజాతీసంఘం స్థాపించి బాబూ జగజీవ్ రామ్ ఇక్స్‌క్లస్వ్ ప్రకారం తెలంగాణాలో పర్యటన చేశాము. అక్కడ ఈ కమ్యూనిస్టులు హరిజనులకు అనేకమైనటువంటి మోసాలు చేసి వాళ్ళను అనేక బాధలు పాలు చేశారు, కమ్యూనిస్టులు రాత్రులందు పోయి హరిజనవాడల్లో వుండి దొంగతనాలు చేస్తూ, లూటీలుచేస్తూ వుండి, తొల్లవారితో పోలిపోయేవారు. తరువాత కమ్యూనిస్టులు చేసిన ఆ దురంతాలకు గానూ ఫోలీసుల చేతుల్లో హరిజనులు పడిన అనేక కష్టాల పాలయ్యారు. ఈ ప్రకారం మొత్తం తెలంగాణాలో దాదాపు నూరు మంది యువకులు హరిజనులు చచ్చిపోయారు. వారి భార్యలు ముండా మోశారు. ఈ ప్రకారంగా హరిజనులను కమ్యూనిస్టులు అనేక విధాలుగా ఎక్స్‌ప్లాయిట్ చేసి అనేక కష్ట నష్టాలను కలిగించారు. ఒక డిప్యూటీ సర్జన్ జెబుతాను, నేను తెలంగాణాలో పర్యటన చేసి నప్పుడు ఆతరు సమీపంలో సిద్దంకి గ్రామానికి వెళ్ళాము.

శ్రీ. వీ. రామారావు : అందుకారకే చెబుతున్నాను. నిజానికి ఫోలీసు ఏమీ చేసింది? ఫోలీసు జాలుం చేసింది అక్కడ సభ్యులు అనేకముగా మాట్లాడారు. నిజానికి ఫోలీసు చేసినదేమిటి, అక్కడ హరిజనులలో కమ్యూనిస్టులు ఆడిన నాటకమేమిటో తేట తొల్లంగా చెప్పాలనుకుంటున్నాను. మేము సిద్దంకి గ్రామానికి పోయినప్పుడు అక్కడ హరిజనులంతా కూడా ఒక కమ్యూనిస్టు తీసుకు వచ్చారు. అతనిని త్రాచాము.

శ్రీ. వీ. రామారావు : అందుకారకే చెబుతున్నాను. నిజానికి ఫోలీసు ఏమీ చేసింది? ఫోలీసు జాలుం చేసింది అక్కడ సభ్యులు అనేకముగా మాట్లాడారు. నిజానికి ఫోలీసు చేసినదేమిటి, అక్కడ హరిజనులలో కమ్యూనిస్టులు ఆడిన నాటకమేమిటో తేట తొల్లంగా చెప్పాలనుకుంటున్నాను. మేము సిద్దంకి గ్రామానికి పోయినప్పుడు అక్కడ హరిజనులంతా కూడా ఒక కమ్యూనిస్టు తీసుకు వచ్చారు. అతనిని త్రాచాము.

श्री. वी. रामारावु : अందుकारके चेतुनुनुनुनु. निजानिकि फोलिसु एमि चैसिन्दि? फोलिसु जालुं चैसिन्दि अक्कड सभ्युलु अनेकमुगु माट्लाडारु. निजानिकि फोलिसु चैसिनदेमिटी, अक्कड हारिजनुलुओ कमुनिसुतुलु आडिन नाटकमेमिडु तैडु तैलुंगु चेष्पालनुकुणुतुनुनुनुनु. मेमु सिदुडुंकि गुरामानिकि पोयिनपुडु अक्कड हारिजनुलुंओ कूडुडु ओ कमुनिसुतु तिसुकु वच्चारु. अतनिनि त्राचामु.

श्री. वी. रामारावु : अందుकारके चेतुनुनुनुनु. निजानिकि फोलिसु एमि चैसिन्दि? फोलिसु जालुं चैसिन्दि अक्कड सभ्युलु अनेकमुगु माट्लाडारु. निजानिकि फोलिसु चैसिनदेमिटी, अक्कड हारिजनुलुओ कमुनिसुतुलु आडिन नाटकमेमिडु तैडु तैलुंगु चेष्पालनुकुणुतुनुनुनु. मेमु सिदुडुंकि गुरामानिकि पोयिनपुडु अक्कड हारिजनुलुंओ कूडुडु ओ कमुनिसुतु तिसुकु वच्चारु. अतनिनि त्राचामु.

श्री. वी. रामारावु : अందుकारके चेतुनुनुनुनु. निजानिकि फोलिसु एमि चैसिन्दि? फोलिसु जालुं चैसिन्दि अक्कड सभ्युलु अनेकमुगु माट्लाडारु. निजानिकि फोलिसु चैसिनदेमिटी, अक्कड हारिजनुलुओ कमुनिसुतुलु आडिन नाटकमेमिडु तैडु तैलुंगु चेष्पालनुकुणुतुनुनुनु. मेमु सिदुडुंकि गुरामानिकि पोयिनपुडु अक्कड हारिजनुलुंओ कूडुडु ओ कमुनिसुतु तिसुकु वच्चारु. अतनिनि त्राचामु.

اسوقت جبکہ ایک مطلق العنان حکومت تھی اور لوگوں کی لڑائی اقتدار میں تبدیلی لانے کیلئے تھی تو پولس کا سپریس (Suppress) ہو سکتا تھا۔ اسکو میں سمجھ سکتا ہوں لیکن اب جبکہ لوگ بے روزگاری اور بھوک کے خلاف آواز اٹھاتے ہیں تو انکا سپریشن کرنے۔ انہیں دبانے کا جو طریقہ حکومت نے اختیار کیا ہے وہ قابل مذمت ہے۔ اسلئے میں آنریبل منسٹر کی اسطرف توجہ دلانا چاہتا ہوں کہ بدلے ہوئے حالات میں پولس کے طرز عمل کو بھی بدلنے کی ضرورت ہے۔ کیونکہ جہاں عوام بھوکے ہیں جہاں وہ آگے بڑھتے ہیں اور یہ کہتے ہیں کارخانے والے ہمارے پیٹ پر ٹھوکر مارتے ہیں حکومت بجائے اسکے کہ انکو سہارا دیتی۔ انکو بندوق اور لائٹی سے مارتی ہے تو یہ بڑی شرمناک بات ہے۔ انکے رویئے کو بدلنا ضروری ہے۔ اس کے ساتھ ساتھ لوگوں میں یہ وشواس پیدا کرنا بھی ضروری ہے کہ پولس لا اینڈ آرڈر مینٹین کرنے کے لئے ہے۔ امن کا مطلب یہ نہیں ہے کہ لوگوں کے حقوق اور انکی مانگوں کو دبا یا جائے بلکہ جو سپورسواکٹیویٹیز (Subversive activities) تخریبی اعمال ہیں انکو دبا یا جائے۔ لیکن انکی جائز مانگوں کو اس طرح لا اینڈ آرڈر مینٹین کرنے کے نام پر دبا یا جائے تو وہ غلط ہے سرے سے غلط ہے۔ اسلئے حکومت سے مجھے یہ عرض کرنا ہے کہ پولس کے رویہ کو بدلنے اور ڈیموکریٹک میتھڈس (Democratic methods) جو عوام اختیار کرنا چاہتے ہیں انہیں اسکا موقع دیا جائے تب ہی لوگوں کو ڈیموکریٹک پرنسپلس پر بھروسہ ہو سکتا ہے۔

ایک اور نظریہ جو پولس ڈپارٹمنٹ میں ہے وہ یہ ہے کہ پولس ہلکی (Bulky) ہونا چاہئے۔ زیادہ ہونا چاہئے۔ یہ نظریہ بھی غلط ہے۔ میں یہ نظریہ ماننے والوں میں سے نہیں ہوں کہ پولس ہلکی ہونا چاہئے اور زیادہ ہونا چاہئے۔ بلکہ دراصل جو پولس فورس ہو وہ ایفیشنٹ ہونا چاہئے۔ وہ ناگہانی صورت حال کا مقابلہ کر کے اسپر قابو حاصل کرنے کے قابل ہونا چاہئے۔ لیکن آج یہ عام رجحان ہے اور یہ دیکھا جاتا ہے کہ پولس فورس کی تعداد کیا ہے۔ اس پر سے طاقت کا اندازہ لگاتے ہیں کہ ہماری پولس کتنی ہے میں کئی ایسی مثالیں بتلا سکتا ہوں کہ پولس زیادہ تعداد میں رہنے کے باوجود بھی چند لوگوں کا مقابلہ نہ کر سکی۔ اسلئے میں حکومت سے یہ اپیل کرنا چاہتا ہوں کہ لمیٹڈ فورس رکھیں لیکن وہ ایفیشنٹ ہو۔ انکی تنخواہیں زیادہ ہوں۔ انکے بہتے زیادہ ہوں ایسی صورت میں پولس امن قائم کر سکتی ہے اور لا اینڈ آرڈر مینٹین کر سکتی ہے۔

تیسری چیز مجھے انٹلیجنس ڈپارٹمنٹ (Intelligence Department) کے بارے میں عرض کرنا ہے۔ میں کہوں گا کہ یہ ایک فالتو ڈپارٹمنٹ ہے۔ انکا کام ہے سوائے اسکے کہ پولیٹیکل ورکرس کا نام توٹ کریں کہ کب میٹنگ ہونے والی ہے۔ کہاں ہونے والی ہے اسکی اطلاع دیں۔ آنریبل ہوم منسٹر یہ بتلائیں کہ انٹی نیشنل اکیٹیویٹیز کے ضمن میں انہوں نے کیا کام کیا ہے۔ انہوں نے کیا ان ارتھ (In earth) کیا ہے۔ آج ہم یہ کہتے ہیں کہ دیش میں کرپشن ہے۔

رشوت کا بازار گرم ہے۔ (یہ ایک انٹی نیشنل 'اکٹیویٹی' ہے خواہ کوئی بھی کرتا ہو) اسکو ان ارتھ کرنے کیلئے انٹلجنس ڈپارٹمنٹ نے کیا کام کیا۔ جس وقت کنٹرول تھابلاک مارکٹ میں مال فروخت ہوتا تھا تب انہوں نے کیا ان ارتھ کام کیا۔ آج ہم ان پر لاکھوں روپیہ صرف کرتے ہیں تو کس لئے؟ کیا اس لئے کہ مختلف پولیٹیکل پارٹیز اور کسان جو زمین داروں کے خلاف لڑتے ہیں اسکا ڈرٹ رکھا جائے۔ انکے کیریئرس (Carriers) کے ریکارڈس رکھے جائیں تاکہ انہیں پاسپورٹ نہ مل سکے کیونکہ انکے خلاف غلط ریکارڈ ہے۔ ان سب چیزوں کی جانب میں آنریبل منسٹر کو توجہ دلاؤں گا کہ ہمارے پولس ڈپارٹمنٹ میں ایک بڑی پری ورٹن لانے اور ایسے لوگوں سے قریب لانے کی ضرورت ہے۔

دوسری چیز میں آر۔ ٹی۔ اے کے بارے میں عرض کروں گا۔ اس کے تعلق سے مجھے یہ بتایا گیا ہے کہ کچھ کرایہ کی سواریوں پر اس قسم کی پابندیاں عائد کی گئی ہیں۔ ریجنل گروپس بنائے گئے ہیں اور اس کے تعلق سے اجازت نامے عطا ہوتے ہیں۔ جہاں تک مال گاڑیوں کا سوال ہے پرمٹ وغیرہ لیئے جا سکتے ہیں۔ لیکن جہاں تک ٹیکسی سواری گاڑیوں کو ریجنل طور پر پرمٹ دینے کا سوال ہے میں اس سلسلہ میں وضاحت چاہتا ہوں۔ جو ڈسٹرکٹ گروپس قائم کئے گئے ہیں وہ غیر سوزوں ہیں۔ مثال کے طور پر نظام آباد کے حد تک اجازت یافتہ جو اضلاع ہیں وہ محبوب نگر۔ نلگنڈہ۔ اور دوسرے ضلعے ہیں۔ حالانکہ اس کے اطراف کے اضلاع تو کریم نگر۔ عادل آباد اور ناندیڑ ہیں۔ جو بھی ٹیکسی سواری جاتی ہے اون ہی اضلاع کو جاتی ہے۔ مجھے یہ بتایا گیا ہے کہ اگر کوئی ٹیکسی نظام آباد سے ۳۰ میل کے فاصلہ پر مثلاً نرمل یا کورٹلہ جانا چاہے تو وہ اس روز نہیں جا سکتی۔ بلکہ دوسرے روز پرمٹ حاصل کر کے جا سکتی ہے۔ یہ گروپنگ سسٹم میری سمجھ میں نہیں آیا۔ پہلے تو یہ سوچنا چاہئے کہ اس طرح ریجنس قائم کرنے کی کیا ضرورت ہے؟ لیکن اگر ایسا کرنا ضروری ہی ہو تو ریجنس کنٹریجنٹ ایریاز کو ملا کر قائم کرنا چاہئے۔ آپ نے جو سسٹم قائم کیا ہے اس کی وجہ سے پبلک بھی تکلیف محسوس کر رہی ہے اور سواری والے بھی محسوس کر رہے ہیں۔ اس جانب آنریبل منسٹر توجہ کریں۔ ایک اور چیز کی جانب توجہ دلا کر میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں۔ اور وہ ہے آر۔ ٹی۔ ڈی کے بارے میں۔ اس سلسلہ میں بہت سی چیزیں کہی گئیں۔

میں دو چار چیزیں ہی کہوں گا۔ فیئر (Fair) کے سلسلے میں میں یہ سنجیشن دوں گا کہ ہم بھی بمبئی کی طرح یہاں پر و پائی فی میل کرایہ مقرر کر سکتے ہیں۔ کیونکہ آئندہ ایک سال میں تو او۔س (O.S.) ختم ہونے والا ہے۔ او۔س ایک آنہ جو لے رہے ہیں اس کو گھٹا کر بمبئی کی طرح آئی۔ جی و پائی کر دیں تو جو پیچیدگیاں بتاون سے پیدا ہونے والی ہیں وہ دور ہو سکتی ہیں۔ اس کے علاوہ فیئر میں وجہ سے ٹریفک میں اضافہ ہوگا۔ یہ جو کہا گیا ہے کہ چونکہ ٹریڈ چینل ڈس ایپر کمی کی (Trade channel disappear) ہوتا جا رہا ہے اس وجہ سے اس میں خسارہ ہو رہا ہے یہ غلط ہے۔ صحیح بات تو یہ ہے کہ ایک نامک ڈپریشن کی وجہ سے میٹارزنگ کی گھٹ رہا ہے۔ اور لوگ سوئروں میں سواری نہیں کر رہے ہیں۔ اس لئے

اگر کرایہ کم کیا جائے تو لوگ عام طور پر اس کو بستہ کر سگے کہ مسٹر میں سوار ہو کر جائیں۔ اس ڈیپارٹمنٹ میں کرپشن اور ان افسینسی کی وجہ سے جو نقصان ہو رہا ہے اس کی جانب بھی آنریبل منسٹر کو نوجہ کرنی چاہئے۔ یہ روز مرہ کی شکایت ہے کہ کنڈکٹس اور بس کے متعلقہ آدمی پیسہ کھا لیتے ہیں۔ اور ٹکٹ وغیرہ اجرا نہیں کرتے۔ اس کو دور کرنے کے لئے ہمیں کوئی نہ کوئی فارمولہ بنانا چاہئے یہ دیکھنا چاہئے کہ کرایہ جو دیا جاتا ہے اس کے ٹکٹس جاری کئے جاتے ہیں یا نہیں اس کی برابر چکنگ ہونا چاہئے۔ ایک اور چیز مجھے ایوا کوئی برابری (Evacuee property) کے سلسلہ میں کہنا ہے۔ لایق علی فارم پر کوئی نانچ سو مزدور تقریباً پندرہ سال سے کام کر رہے ہیں۔ لایق علی کے پاکستان جانے کے بعد وہ فارم ایوا کوئی پراپرٹی ہو گئی ہے۔ اور ایوا کوئی برابری کے قانون کے تحت اس فارم کو سندھیوں اور دوسرے ریفریجیز (Refugees) میں الاٹ کیا جا رہا ہے۔ میں یہ عرض کروں گا کہ اس سلسلہ میں حکومت حیدرآباد حکومت ہند سے سفارش کرے کہ اس فارم کو اون پانچ چھ سو مزدوروں کے حوالے کیا جائے جو پندرہ سال سے اس پر کام کر رہے ہیں وہاں کی اراضی کو ڈولپ (Develop) کئے ہیں۔ اس فارم کو کلکٹیو فارم کی شکل دیکر اون لوگوں کو وہاں رکھنا چاہئے تاکہ وہ لوگ بے روزگار نہ بننے پائیں۔ اگر حکومت حیدرآباد حکومت ہند کو اس سلسلہ میں سفارش کرے کہ اس کو کلکٹیو فارم کی شکل دی جائے تو مناسب ہوگا۔ یہ کہہ کر میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں۔

شری. وھی. ڈی. دیشا پانڈے:—میسٹر سپیکر سر، دو باتیں میں ہاؤس کے سامنے ارج کرنا چاہتا ہوں۔ پہلی بات یہ ہے کہ جنرل تریکے سے جو ڈیسکشن ڈیمانڈز پر چل رہا ہے ہاؤس کے بارے میں تاجو کے بعد ہم محسوس کر رہے ہیں کہ کچھ ڈیپارٹمنٹس پر بھس نہیں ہو سکتی، مسالین جیل ڈیپارٹمنٹ ہے ہاؤس کے اوپر آج کوئی بھس نہیں ہو سکی، ایسی طرح سے ریہیبیلیٹیشن کے مسئلے پر بھی کوئی راج ہاؤس کے سامنے نہیں آ سکی۔ چند آنرےبل ممبروں سے مشورہ کرنے کے بعد میری یہ گوارا ہے کہ آج ہاؤس کا وقت آٹھ بجایا ساٹھ بجایا جا تو مناسبت ہوگا۔

دوسری چیز یہ ہے کہ دو روز کے تاجو کے بعد ہم محسوس کر رہے ہیں کہ ڈیمانڈ وائیج ڈیسکشن رکھا جا تو جیسا مناسبت ہوگا تاکہ اہم بھس پر ہم فوکس کر سکیں۔ آج کے لیے جب ڈیمانڈ رکھی جائے گی تب ڈیمانڈ وائیج ڈیسکشن رکھا جاوے گا۔ لیڈر آف دی ہاؤس اس کو مانگے تو مناسبت ہوگا۔

مسٹر اسپیکر۔ بات یہ ہے کہ (۱۲۰) سے زیادہ موشنس فارورڈ کئے گئے ہیں۔ اگر انکو ووٹ پر رکھا جائے تو میں سمجھتا ہوں کہ آپ نے جو آدھا گھنٹہ بڑھانے کی خواہش کی تھی اس سے بھی زیادہ وقت لگ جائے گا۔ کیونکہ چھ بجے سے ایک گھنٹہ ہوم منسٹر کو جواب کیلئے دینا پڑے گا۔ اس کے بعد موشنس کو ووٹ پر رکھا جائے گا۔ اگر ہوم منسٹر کے لئے آدھ منٹ بھی رکھا جائے گا تو ایک گھنٹہ اس کے لئے بھی لگے گا۔ دوسری چیز جو آپ نے کہی اس پر آٹھ بجے جس روز ڈیمانڈس پیش ہونگے اس دن صبحوں کنسلڈ کریں گے۔

شری نہ گمبیراؤ بندو - مسٹر اسپیکر سر - میرے ڈیمانڈس پر جو بہت سے موشنس فار رڈکشن (Motions for reduction) آئے ہیں اون کے تعلق سے کل اور آج جو بحث ہوئی میں نے اوسکو کافی غور کے ساتھ سنا۔ میں نے یہ بھی محسوس کیا کہ بجز ایک دو اسپیکس کے عام طور پر تمام اسپیکس کا معیار کافی اونچا رہا۔ میں نے یہ بھی محسوس کیا کہ کئی آنریبل ممبرس نے اس بات کی کوشش کی کہ کچھ کنسٹرکٹیو ساجیشنس (Constructive suggestions) ہاؤز کے سامنے رکھے جائیں چنانچہ کافی محنت کے بعد انہوں نے کچھ ساجیشنس یہاں رکھے ہیں۔ میں سمجھتا ہوں کہ ایسی تقریروں سے ہارے پورے ہاؤز کا اسٹینڈرڈ بڑھنا ہے اور مجھے بڑی مسرت ہوئی۔ چنانچہ میں اسکے لئے ہاؤز کو مبارکباد دیتا ہوں۔ میں اون تمام چھوٹی چھوٹی چیزوں کا جو کٹ موشن کے ذریعہ پیش کی گئی ہیں الگ الگ جواب دینے کے بجائے یہ مناسب سمجھتا ہوں کہ میں نے جو ڈیمانڈس پیش کئے ہیں اور ہر ڈیمانڈ کے تعلق سے جو امپارٹنٹ نقاط الگ الگ ممبرس نے یہاں پیش کئے ہیں اونکے بارے میں عرض کروں۔ میں نے جو ڈیمانڈ نمبر (۸) پیش کیا ہے وہ سوٹر وھیکل ایکٹ (Motor Vehicle Act) کے تعلق سے ہے۔ سوٹر وھیکل ایکٹ آل انڈیا ایکٹ ہے۔ اس کے بارے میں سوالات کے سلسلے میں غالباً کئی مرتبہ میں نے یہ بتایا ہے کہ سوٹر وھیکل ایکٹ ایک پرانا ایکٹ ہے جس میں ترمیم جو ابھی حکومت ہند کے زیر غور ہے۔ چنانچہ ایک امینڈمنٹ ایکٹ اس کے تعلق سے پیش کیا جا رہا ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ وہ جلد ہی پیش ہوگا۔ اس ایکٹ کے تحت ریجنل ٹرانسپورٹ اتھارٹیز (Regional Transport Authorities) اور اسٹیٹ ٹرانسپورٹ اتھارٹیز (State Transport Authorities) کی باڈیز بنائی گئی ہیں۔ خود میں نے بھی یہ محسوس کیا ہے کہ دراصل اس میں کافی ردوبدل کی ضرورت ہے۔ لیکن اس وقت میں اس کے بارے میں اتنا ہی کہہ سکتا ہوں کہ ریجنل ٹرانسپورٹ اتھارٹیز اور اسٹیٹ ٹرانسپورٹ اتھارٹیز ایکٹ کے خاص براویژنسس کے تحت ہم پھورہیں کہ اسی طرح سے عمل کریں۔ کئی ممبروں نے کہا کہ ایک ہی راستہ پر کامپٹیشن (Competition) کرنے کی اجازت دینا چاہئے اور اس طرح کی آزادی دینا چاہئے۔ لیکن اس ایکٹ کی اسپرٹ یہ ہے کہ اس طرح کا کامپٹیشن زیادہ نہیں ہونا چاہئے۔ اس کا یہ مطلب نہیں کہ کسی کو موناپولی (Monopoly) دیدی جائے لیکن زیادہ کامپٹیشن نہیں ہونا چاہئے یہ خیال رکھنا ضروری ہے۔ دراصل سوٹر وھیکل ایکٹ کو کسی طرح متاثر کیا ہے تو اس قانون نے کیا ہے جو یہاں تھا۔ اور جس کے لحاظ سے آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کے موناپولی ایسے راستوں پر لائی گئی جو کہ نوٹیفائی کئے گئے تھے عام طور پر یہ کہا جاتا ہے کہ کراس کٹری روڈس (Cross country Roads) پر بھی عام طور پر پرمٹ دئے جاتے ہیں یہ چیز پبلک کی سہولت کے پیش نظر ضروری ہے کہ آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کی نوٹیفائی راستوں پر جب وہ لوگ آجائیں تو اونکو اس راستے پر سے گزرنے کی اجازت دیجائے۔ یہ اجازت چند قواعد اور شرائط کے تابع ہوتی ہے اور اون شرائط کے تابع ہی اس طرح پرمٹ دئے جاتے ہیں۔ یہ دیکھا گیا ہے کہ اس کی وجہ سے آر۔ ٹی۔ ڈی کی

آمدنی متاثر ہوتی ہے۔ گڈس و ہیکل (Goods vehicles) کے سلسلے میں آرٹی۔ ڈی۔ پریجٹ کرتے ہوئے ایک آریبل ممبر نے کہا کہ یا سر گورنمنٹ یہ پالیسی طے کرے کہ ہاؤٹ بسس کو پرمٹ دئے جائیں یا گورنمنٹ خرد اپنے طور پر جس طرح پیسنیجر بسس چلاتی ہے گڈس کیلئے بھی بسس چلائے۔ لیکن گورنمنٹ نے اس سلسلے میں یہ طے کیا ہے کہ گڈس و ہیکل ہاری طرف سے نہ چلائے جائیں۔ گو بہت سی بسس ہمارے پاس ایسی ہیں۔ لیکن وہ کام میں نہیں لائی جاسکتیں۔ اب یہ سرچا گیا ہے کہ اگر اوں کو پاسینیجر بسس میں کنورٹ (Convert) کیا جائے تو وہ بھی کام میں آسکتی ہیں۔ اس سلسلے میں یہ بھی کہا گیا کہ چونکہ انسپکٹروں کو پرمٹ دینے یا نہ دینے اور اس کی جانچ کرنے اور رپورٹ دینے کا اختیار ہوتا ہے اس لئے اس میں کافی بدعمل کی گنجائش ہے ایسی شکایتیں آتی ہیں اور میں اس قدر عرض کروں گا کہ جب کبھی کسی انسپکٹر کے بارے میں شکایت آتی ہے اس کی جانچ کی۔ ایسے کیس میں جن میں انکا تدارک کیا گیا ہے یا سزا دی گئی ہے۔ الیکشن کے مد کے لئے بھی میرا ایک ڈیمانڈ تھا۔ اس کے بارے میں بھی کہا گیا ہے۔ میں یہ وضاحت کرنا چاہتا ہوں کہ آریبل لیڈر آف دی اپوزیشن نے اس بارے میں سوال بھی کیا تھا انہوں نے یہ بھی کہا تھا کہ گورنمنٹ آف انڈیا سے جو رقم آئی ہے اوسکے وضع جانے کے بعد پھر اتنے ڈیمانڈ کی ضرورت نہ تھی۔ لیکن میں نے پہلے بھی کہا تھا اور اب بھی یہ وضاحتاً کہہ دینا چاہتا ہوں کہ کم از کم ہمارے بجٹ میں یہ طریقہ رہا ہے کہ گورنمنٹ آف انڈیا سے جو رقم آتی ہے وہ کل کی کل ایک طرف جمع کر دی جاتی ہے۔ ڈپارٹمنٹ ہر کتنا خرچ ہوتا ہے اوسکو علیحدہ بتایا جاتا ہے۔ اور گورنمنٹ آف انڈیا سے جو رقم آتی ہے اوسکو آمدنی کے مددات میں شامل کیا جاتا ہے۔ اور خرچ پورا پورا اس ڈیمانڈ میں بتایا جاتا ہے۔ سیونیسپالیٹی کے تعلق سے ایک آریبل ممبر نے جو کہا اوس سلسلے میں مجھے یہ عرض کرنا ہے کہ الیکٹورل رولس (Electoral Rolls) جو تیار ہوتے ہیں وہ اسی ڈپارٹمنٹ کی جانب سے تیار ہوتے ہیں۔ اس ڈپارٹمنٹ کا بالراست تعلق اگرچیکہ الیکشن کمشنر سے ہوتا ہے لیکن اوسکو ہاری طرف سے چلایا جاتا ہے۔ اس سلسلے میں خرچہ وہ بھی برداشت کرتے ہیں۔ ہم بھی برداشت کرتے ہیں۔ جو خرچہ اس مد کے تحت بتلایا گیا ہے وہ عملہ کا خرچہ ہے اور چھپوائی کا خرچہ ہے الیکٹورل رولس کی جانچ پڑتال کرنا۔ اوس میں رد و بدل کرنا اور اس کو ٹھیک ٹھاک کرنا یہ بھی اسی ڈپارٹمنٹ کا کام ہے۔ جب کبھی الیکشن ہوتے ہیں اوسکے الیکٹورل رول کی پرنٹنگ وغیرہ کے لئے رقم کی ضرورت ہوتی ہے اس وجہ سے کچھ رقم اس کے لئے رکھی گئی ہے۔ ایک آریبل ممبر نے اس سلسلے میں یہ بھی پوچھا تھا کہ کیا عنقریب کوئی الیکشن ہونے والے ہیں۔ وہ تو کنٹینجینسیز (Contingencies) پر منحصر ہے۔ لیکن عام طور پر جو خرچہ ہوتا ہے وہ عملہ پر ہوتا ہے اور الیکٹورل رولس کی چھپوائی وغیرہ کے لئے ہوتا ہے۔

اس سلسلہ میں بحث کرتے ہوئے یہ بھی کہا گیا کہ کانگریس پارٹی اور سنسٹرس کا عمل یہ ہے کہ وہ اپنی پوزیشن کا جو انہیں حاصل ہے ناجائز استعمال کرتے ہیں اور الیکشن پر اثر ڈالنے کی کوشش کرتے ہیں لیکن میرے سامنے جو واقعات ہیں ان کے تحت میں یہ تسلیم کرنے کے لئے تیار نہیں ہوں کہ سنسٹرس اپنی پوزیشن کا ناجائز طور پر اثر ڈالنے کی کوشش کرتے ہیں۔ ہاں یہ ضرور ہے کہ جو پوزیشن انہیں اپنی پارٹی کے لیڈر ہونے کی حیثیت سے حاصل ہے وہ زائل نہیں ہو سکتی۔ یہ صحیح نہیں ہے کہ محض سنسٹر بننے سے وہ الیکشن پر اثر ڈال سکتے ہیں۔ یہ بھی کہا گیا کہ سنسٹرس سرکاری اخراجات سے الیکشن پر اثر ڈالنے کے لئے جاتے ہیں۔ یہ صحیح نہیں ہے۔ سنسٹر جب الیکشن پرپزس (Election purposes) کے لئے جاتے ہیں تو اس کے اخراجات یا تو وہ خود برداشت کرتے ہیں یا ان کی پارٹی برداشت کرتی ہے۔ اس کی تمیز سنسٹر کو ہوتی ہے کہ کون سے اخراجات کا بار سرکار پر عائد ہونا چاہیئے اور کون سے اخراجات کا بار پارٹی یا خود کو برداشت کرنا چاہیئے۔ جیسا کہ آنریبل ممبرس جانتے ہیں کہ یہاں اور سنٹرل گورنمنٹ میں یہ ہوتا ہے کہ جب کوئی لیڈر الیکشن کے مقام پر جاتے ہیں تو ان کا کام ہے کہ اپنی پارٹی کی حمایت کریں۔ جب وہ وہاں جاتے ہیں تو یہ تو نہیں کہہ سکتے کہ تم دوسری پارٹی کو ووٹ دو۔ ظاہر ہے کہ وہ اپنی پارٹی کی حمایت میں کچھ کہتے ہوں گے۔ میں نہیں سمجھتا کہ اس میں کوئی ایسی بات ہے جو قابل اعتراض ہو۔

श्री. व्ही. डी. देशपांडे:—मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ कि अभी सिद्धिपेठ में अिलेक्शन होनेवाला है और हमने सुना है कि डिप्टि मिनिस्टर शंकरदेव साहब अभी वहां जाकर लोगों को अनाज और जमीनात तकसीम करने का काम करनेवाले हैं। यह काम सोशल डिपार्टमेंट की तरफ से किया जानेवाला है सौ अभी इसी वक्त यह काम क्यों लिया जा रहा है क्या यह फेयर अिलेक्शन है? आपको एक दो दिन में यह बात देखने को मिलेगी कि वहां पर अनाज और जमीन तकसीम की जायेगी।

श्री. दगंबरराव पेंडो:—अखर अिलेक्शन के सलसले में ये तु कभनाही पूरुंका के गुरनमन्ट ने अब तक कया कया हे और आंन्दे कया कया करुंकी - ये ضرुर कया जांरुंका -

श्री. व्ही. डी. देशपांडे:—अैन अिलेक्शन के वक्त सोशल सर्विस डिपार्टमेंट की तरफ से किस तरह वहां के लोगों को अनाज और जमीन बटाना यह कहांतक ठीक है। इसका असर वहां की अव्वाम पर क्या होता है ?

श्री. नरेंद्र:—यह अिलेक्शनक है।

श्री. व्ही. डी. देशपांडे:—यह अिलेक्शनक नहीं है। भोनगौर गढवाल, सिद्धिपेठ आदि के अिलेक्शन में क्या हुवा जरा देखिये वहां भी अिलेक्शन के वक्त ही इस तरह से अनाज वगैरा बांटा गया। मैं कहना चाहता हूँ इसमें कोबी अिलेक्शनक नहीं है। अैन अिलेक्शन के वक्त अैसा जानबुझकर किया जाता है।

Constitutional

اس زمانے میں یہ بات نہوسکی اور کانسٹی ٹیوشنل لا () لاگو ہو گیا اور ٹرانسفر آف پراپرٹی ایکٹ بھی لاگو ہو گیا۔ law جس طرح ہنہوستان کے دوسرے حصوں میں یہ قوانین لاگو ہوئے یہاں بھی لاگو ہو گئے اس کے بعد ہم کوئی آرڈیننس نکال سکتے تھے اور نہ کوئی ایسا قانون بنا سکتے تھے جو اس ایکٹ اور ان قوانین کو متاثر کرے اور کوئی ایسا فیصلہ کسی ایسے عہدہ دار کی طرف سے نہیں کیا جاسکتا تھا جو ڈیشل عہدہ دار نہ ہو۔ کسی عاملہ کے آفیسر کو ایسا اختیار نہیں دیا جاسکتا تھا۔ جب یہ دقت محسوس کی گئی تو کافی بحث و مباحثہ کے بعد ہم نے مناسب سمجھا کہ ایسے اشخاص کو جنہیں نا جائز طور پر پولیس ایکشن سے پہلے یا پولیس ایکشن کے بعد بیدخل کیا گیا ہے انہیں رلیف (Relief) کے طور پر دو تین طریقوں سے مدد کی جائے۔ ایک یہ کہ آپسی سمجھوتے کے تحت ایسا کر سکتے ہیں چنانچہ کئی کیسیس میں اس طرح کا عمل کیا گیا ہے اور کالیابی ہوئی ہے۔ قبضہ واپس دلایا گیا ہے۔ البتہ کچھ ایسے کیسیس ہیں کہ جن لوگوں کے قبضے ہو گئے ہیں وہ چھوڑنے کے لئے تیار نہیں ہیں۔ اس کے بعد ہم نے مناسب سمجھا کہ ایک ایسے شخص کو جو ان امور سے دلچسپی رکھتا ہے اور تجربہ رکھتا ہے اس کام کے لئے مقرر کیا جائے۔ چنانچہ ملا عبدالباسط صاحب کو جو ایک زمانے میں مجسٹریٹ تھے اور قانون کے جاننے والے ہیں اسپیشل ایڈوکیٹ (Special Advocate) مقرر کیا گیا۔ وہ ری ہیبیلیٹیشن کے بارے میں بہت کچھ کوشش کر چکے ہیں اور دلچسپی سے ان امور کی جانب متوجہ ہیں۔ ان مقدمات کے لئے رسوم کی معافی کا بھی فیصلہ کیا گیا ہے۔ میں اتنا کہہ سکتا ہوں کہ ایسے مقدمات کی تعداد زیادہ نہیں ہے۔۔۔

شری سید حسن (حیدرآباد۔ سٹی)۔ کئی ہزار کیسیس ہیں ایک صاحب کیسے فیصلہ کر سکتے ہیں۔

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ میرے سامنے جو کیسیس آئے ہیں وہ ہزاروں کی تعداد میں نہیں ہیں۔ مجھے یہ سنکر تو وہ مقولہ یاد آتا ہے جو ایک مرتبہ اکبر یار جنگ بہادر نے کہا تھا۔ جب اون کے اجلاس پر یہ کہا گیا کہ اس سلسلہ میں ہزاروں نظائر ہیں تو انہوں نے جواب دیا کہ ہزاروں نظائر کے دیکھنے کی تو مجھے فرصت نہیں ہے البتہ ایک نظیر دیدیجئے۔ میں دیکھ لوں گا۔ اسی طرح ہزاروں کیسیس ہیں کہنے سے تو کام نہیں چلے گا۔ تفصیلی طور پر جانچ کرنے کی ضرورت ہوتی ہے۔ آفیشل اور نان آفیشل لوگوں کے ذریعہ یہ کام عثمان آباد اور بیدر میں کیا گیا ہے۔ کلکٹروں نے کوشش کی ہے اور جو لوگ اضلاع تعلقے اور دیہات چھوڑ کر حیدرآباد چلے آئے ہیں اون کو آر۔ ٹی۔ ڈی کی بس میں اسپیشلی (Specially) لیجا کر ہم نے وہاں پھر سے بسایا ہے۔ جہاں تک تفصیلی رپورٹس کا تعلق ہے اون کی بنا پر میں کہہ سکتا ہوں کہ اب صرف چند مسائل تصفیہ طلب رہ گئے ہیں۔ وہ اتنے زیادہ نہیں ہیں کہ ان کی تعداد کو ہزاروں کی تعداد کہا جائے۔ جہاں تک ملا عبدالباسط صاحب کا تعلق ہے وہ

دلچسپی سے کام کر رہے ہیں۔ اب چالیس کیسیں ان کے پاس ہیں۔ اس کے باوجود کیسیں کی تعداد اور کام کے اعتبار سے حکومت کو اگر یہ معلوم ہو کہ ایک صاحب سے کام نہیں چلے گا اور کسی کو مقرر کرنے کی ضرورت ہے تو یقیناً کسی اور کو بھی مقرر کیا جائے گا۔ قبضہ دہانیوں کے کام کے ساتھ ساتھ جو دیگر لوگ متاثر ہوئے ہیں، بیوائیں وغیرہ جو پولیس ایکشن کے بعد یا اس زمانے میں جب کہ گڑ بڑ تھی تو اون کو بیوہ فنڈ کے طور پر امداد دی جا رہی ہے اور یتیم بچوں کی پڑھائی کا انتظام کیا گیا ہے۔ وکٹوریہ میموریل آرفنج (Victoria Memorial Orphanage) میں ان کو رکھا گیا ہے۔ اس طرح سے کام کیا جا رہا ہے۔ یہ دراصل پانچ لاکھ کی جو مدد ہے اس میں ڈھائی لاکھ کی منظوری چاہی گئی ہے۔ اس کی وضاحت میں نے پہلے بھی کی ہے اور اب بھی کہتا ہوں کہ چھ مہینے کی حد تک یہ رقم مانگی گئی ہے۔ گورنمنٹ آف انڈیا سے جو نئی منظوری آئے گی تو اس رقم کو لیں گے۔ اگر اس طرح ڈیمانڈ پیش نہ کیا جاتا تو رقم لیاپس (Lapse) ہو جاتی۔ یہ پوری رقم اس کام کے لئے خرچ ہوگی۔

اس کے بعد ایک چھوٹی سی مدد ہے جو معلوم ہوتا ہے کہ اکس کریمنل ٹرائبیس (Ex-criminal Tribes) کے بارے میں ہے۔ یہ ۵۰ ہزار کی مدد ہے۔ اب تک جو خرچہ ہوا ہے یہ اس سے کم ہے۔ اب جو خرچہ ہوگا وہ صرف نگرانی کی حد تک ہوگا۔ لنگل سٹلمنٹ کریمنل کالونی (Lingal Settlement criminal colony) کا اس طرح انتظام کیا گیا تھا کہ وہ پولیس کی نگرانی میں رہیں سوہاں کے قبائلیوں کو تعلیم دینے اور اون کو روزگار کے حاصل کرنے کے طریقے بتانے کے لئے ایک چھوٹا سا عملہ رکھا گیا تھا۔ اب یہ زیر غور ہے کہ اس کو سوشیل سروس ڈپارٹمنٹ کے تفویض کرنا چاہئے۔ جس طرح کوپا جاتی کے لئے کیا گیا ہے۔ اسی طرح لنگال میں بھی یہ کوشش کی گئی ہے۔ جب یہ تصفیہ ہو جائے تو اس مدد کے تحت جو رقم رکھی گئی ہے وہ سوشیل سروس ڈپارٹمنٹ کے تحت منتقل کر دی جائے گی۔

سری. ڈی. ڈی. دیشپانڈے :- یہ جو ۶۶ ہزار रुपये اکس کریمنل ٹرائبیس کے لئے مانگے جا رہے ہیں اس میں کچھ کام اب تک ہوا ہے یا نہیں؟ اب جیسے آپ سوشل سروس ڈپارٹمنٹ میں جمل کرنا چاہتے ہیں تو اس سے پہلے اس کے لئے کیا کام ہوا ہے یہ میں جاننا چاہتا ہوں۔

سری ڈی. ڈی. دیشپانڈے :- اس کی منظوری کے بعد سوشیل سروس ڈپارٹمنٹ ان کی تعلیم وغیرہ کے سلسلہ میں کام کرے گا۔ اب بھی روپ میکنگ (Rope making) میٹ میکنگ (Mat making) وغیرہ کا کام ان کو سکھایا جاتا ہے۔

سری. ڈی. ڈی. دیشپانڈے :- وینکٹ رام راؤ۔ کریمنل ٹرائبیس ایکٹ (Criminal Tribes Act) منسوخ ہونے کے بعد اس کی کیا ضرورت ہے؟

شری ڈگمبر راؤ بندو - وہ ختم ہو گیا ہے لیکن اوس سے بالکل علیحدہ اسپرٹ (Spirit) میں ہی بی چوول اینڈرس بل (Habitual Offenders Bill) اس ہاؤز کے سامنے آچکا ہے جو اب سلکٹ کمیٹی میں ہے۔ وہ آج کل میں یہاں آجائے گا۔ اوس کے تحت بھی اس کی گنجائش ہے کہ ایسے لوگوں کو جو لنگل میں ہیں، گو وہ اکس کریمنل ٹرائبس کے افراد ہوں، ہی بی چوول اینڈرس کہنا درست نہیں ہے۔ اب سوشیل سرویس ڈپارٹمنٹ کے تحت جس طرح کو یا لوگوں کے لئے کام کیا جاتا ہے اسی طرح یہ کام بھی ہوگا۔ میں سمجھتا ہوں کہ یہ جو خیال ہے بہت مناسب ہے۔

آرٹی۔ ڈی۔ کے تعلق سے دو ڈیمانڈس ہیں۔ ایک ڈیمانڈ نمبر ۶۱ اور دوسرا ڈیمانڈ نمبر ۹۳۔ ڈیمانڈ نمبر ۹۳ چھتیس لاکھ دو ہزار کیپٹل اکسپنڈیچر کیلئے ہے۔ آنریبل ممبرس بجٹ کا تفصیلی معائنہ کئے ہونگے تو انہیں معلوم ہوا ہوگا کہ ریونیوارننگس (Revenue earnings) میں سے ہم نے اس کیلئے کوئی زیادہ رقم پرووائیڈ نہیں کی ہے جو ہمارے اخراجات سے بڑھکر ہو۔ صرف کیپٹل اکسپنڈیچر کے طور پر یہ رقم بتلائی گئی ہے۔ اس میں وہ تمام اسکیمس ہیں جن کے تحت بسس میں اضافہ ہونا ہے شلٹرس (Shelters) بنائے جاتے ہیں، پبلک ایمنیٹیز (Public amenities) پرووائیڈ کئے جاتے ہیں انکے لئے گنجائش نکالی گئی ہے۔ پہلے ہی اس پر توجہ کیجانی ضروری تھی۔ بس شلٹرس اور دوسرے ایمنیٹیز کیلئے خرچہ کیا گیا ہے۔ لیکن حالات کے لحاظ سے زیادہ توجہ نہیں ہو سکی یہ شکایت عام طور پر رہتی ہے کہ ریونیو انکم کے جو مددات ہیں اور جن سے کافی آمدنی بنتی ہے ان میں لیبر کو بھی کچھ حصہ ملنا چاہئے۔ فطرتاً یہ ضرور خواہش رہتی ہے۔ لیکن گورنمنٹ کا یہ نظریہ رہتا ہے کہ جو ریونیوارننگ ڈپارٹمنٹس ہیں ان میں بونس دینا یا لیبر کو بھی حصہ دار بنانے کا کوئی طریقہ نہیں ہو سکتا۔ ہاں جو سہولتیں دیگر ڈپارٹمنٹ کے لوگوں اور گورنمنٹ سروٹس کو دی جاتی ہیں وہی سہولتیں آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کو بھی ضرور دیجائیں گی۔ اسلئے ایسا کوئی ڈیمانڈ مناسب نہیں۔ کچھ مطالبات ٹرائیونل کے حوالے کئے گئے ہیں اور اپیلیٹ کورٹ میں ہیں۔ اور زیر تصفیہ ہیں کچھ ایسی چیزیں ہیں جنکے بارے میں آر۔ ٹی۔ ڈی۔ لیبرس یونین کے لیڈرس کے متفق ہونے پر کچھ راستہ نکالا گیا ہے۔ اس کا ذکر میں نے اس سے پہلے کیا ہے۔ اس سلسلے میں بھی کچھ ہو رہا ہے۔ میں امید کرتا ہوں کہ اس کا کچھ نہ کچھ راستہ نکل آئیگا۔ لیبر یونین کی جو مانگیں تھیں حکومت نے انہیں دوسرے تہہ تسلیم کر لیا۔ کچھ تو ہماری گورنمنٹ بننے کے فوراً بعد ہی منظور کی گئی۔ اور اسٹرائیک کے بعد کچھ مانگیوں کا تصفیہ ہوا۔ اس کی وجہ سے بھی کافی رقم کا بوجھ ڈپارٹمنٹ پر پڑا۔ اسکے ساتھ حال ہی میں کچھ تجویزیں مان لی گئیں۔ ظاہر ہے کہ ہمارا جو گراس ارننگ (Gross earning) ہے اس میں کوئی خاص کمی نہیں ہوتی ہے۔ لیکن نٹ انکم میں جو کمی دکھائی دیتی ہے اس سلسلے میں دوسرے شعبے بھی ہیں اس میں ایک یہ بھی ہے کہ ہمارے اخراجات بڑھ گئے ہیں۔ کیونکہ اب اور ٹائم (Overtime) بھی دیا جاتا ہے۔ فیکٹری ایکٹ لاگو ہو چکا ہے اس کی وجہ سے کام کے گھنٹوں کا تعین

ہو چکا ہے۔ اس سے بڑھ کر کوئی کام نہیں ہو سکتا۔ اگر کوئی کرنا ہے تو اسکو اور ٹائم دینا پڑتا ہے۔ اس طرح جو چیزیں ہوئی ہیں ان کی وجہ سے خرچہ بڑھنا لازمی ہے۔ یہ بھی ایک سبب ہے جسکی وجہ سے ہم دیکھتے ہیں کہ ارننگس میں کچھ کمی ہوئی ہے۔ اس میں بھی صداقت ہے۔ انفرنجمنٹ (**Enfringement**) دونوں طریقوں سے ہوتا ہے۔ پانسجریس تو اوور لوڈ (**Over load**) ہوتے ہیں۔ محض اس خیال سے کہ ریٹ زیادہ ہونے کی وجہ سے آمدنی کم ہو رہی ہے یہ تصور صحیح نہوگا۔ دوسری طرف یہ کہنا بھی اس قدر صحیح نہیں ہے کہ سلمپ (**Slump**) کی وجہ سے ایسا ہو رہا ہے۔ ہاں اس کی وجہ سے کسی قدر آمدنی متاثر ہوئی ہے کیونکہ میں نے فیگرس دئے تھے کہ سلمپ کی وجہ سے یو۔ بی اور دوسرے اسٹیٹس میں کیا اثر ہوا۔ اور خود ریلوے میں کیا ہو رہا ہے۔ وہ فیگرس دیکھنے کے بعد یہ سمجھ سکتے ہیں کہ اس کا کیا اثر ہو رہا ہے۔ لیکن یہ کہنا صحیح نہیں کہ صرف اسی سبب کی وجہ سے اثر پڑ رہا ہے۔ باوجود اس کے کہ بسن اور لوڈ ہوتے ہیں آمدنی کم ہوتی ہے۔ ایسی صورت میں یہ سمجھنے کی کافی گنجائش ہے کہ اس میں کافی لوپ ہولس (**Loopholes**) ہیں۔ جسکی وجہ سے جو پیسہ گورنمنٹ کی ٹریژری میں آنا چاہئے وہ دوسروں کے جیب میں چلا جا رہا ہے یہ تمام چیزیں ایسی ہیں جنکی طرف ڈپارٹمنٹ متوجہ ہے اور حال ہی میں ہمنے اس کے لئے ایک بورڈ بھی کانستٹیوٹ (**Constitute**) کیا ہے۔ وہ بورڈ ان تمام مسائل کے تعلق سے سوچ رہا ہے کہ کیا کیا جا سکتا ہے۔ اور آئندہ آرٹی۔ ڈی۔ کو کس طرح چلایا جائے انریبل ممبرس نے جو سنجیشنس دئے ہیں ان پر ہمدردانہ غور کیا جا سکتا ہے۔

ایک چیز یہ کمی گئی کہ اگر ریٹ میں کمی کردی جائے تو ہماری آمدنی ممکن ہے بڑھ جائے گی۔ اوسکو وزک اوٹ (**Warkout**) کر کے دیکھا گیا اب آئی جی کرنسی میں فی میل ۳۔۵ پائی ریٹ ہے۔ بمبئی میں ۹ پائی آئی۔ جی فی میل لیا جاتا ہے۔ یہ ورک اوٹ کیا گیا کہ ہم بھی وہی ریٹ لیں تو کیا ہوگا۔ معلوم ہوا ہے کہ اس سے سالانہ ۳۶ لاکھ روپے کی کمی ہوگی۔ اسکا مطلب یہ ہے کہ اب ہم جو پرافٹ لے رہے ہیں وہ بالکل ختم ہو جائے گا۔ اور آرٹی۔ ڈی کو نقصان میں چلانا پڑے گا۔ یہ حساب کر کے دیکھا گیا۔ پھر بھی میں ہاؤز کو یہ اطمینان دلانا چاہتا ہوں آر۔ ٹی۔ ڈی لاس میں نہ چلے بلکہ کم از کم اوسکی آمدنی اور خرچ برابر ہوں اسکا لحاظ کرتے ہوئے پبلک کے فائدہ کیلئے جو بھی کیا جا سکتا ہے اسپر ضرور غور کیا جائے گا۔ مجھے یہ بھی پتہ چلا کہ بمبئی میں جہاں ۹ پائی فی میل کرایہ لیا جاتا ہے وہاں بھی اسپر غور کیا جا رہا ہے کہ اس کو بڑھا کر ۱۰ پائی فی میل کرنا چاہئے کیونکہ اس شرح کے رکھنے سے نقصان ہوتا ہے۔ ایسی صورت میں میں سمجھتا ہوں کہ ہمیں اسپر کافی احتیاط کے ساتھ غور کرنے کی ضرورت ہے۔ اگر اس میں جسٹیفیکیشن (**Justification**) ہو کہ واقعی کمی کیجانی چاہئے تو ضرور اس پر غور کیا جا سکتا ہے۔

اب میں ان ڈیمانڈس کی طرف آتا ہوں جن کے متعلق جیسا کہ میں نے کہا انہیں ایک ایک گروپ سمجھنا چاہئے۔ جیل ڈپارٹمنٹ اور جوڈیشل ڈپارٹمنٹ۔ جوڈیشیل ڈپارٹمنٹ کے بارے میں آنریبل ممبرس کا اور خود میرا بھی یہ خیال ہے کہ جوڈیشری، ڈیموکریسی کی بون (Back bone) ہے۔ اور جہاں جوڈیشیل ڈپارٹمنٹ ایفیشینٹ ہو اور لوگوں کو اس پر اعتاد ہو تو میں سمجھتا ہوں کہ وہاں ڈیموکریسی کے پنپنے کی کافی امید ہے۔ یہ عام طور پر سمجھا جاتا ہے۔ اسٹانڈرڈ کے بارے میں کہا گیا۔ یہ واقعہ ہے کہ ہم جس دور سے گذر رہے ہیں اس کے لحاظ سے لوگوں میں جو معیار پیدا ہو جانا چاہئے تھا اس میں کمی ہے پھر بھی میں یہ نہیں سمجھ سکتا کہ اسٹینڈرڈ بالکل ہی گرا ہوا ہے حال ہی میں چیف جسٹس حیدرآباد نے تفصیلی دورہ کر کے منصفیوں کا معائنہ کیا۔ اور پورے حالات دیکھنے کے بعد وہ جس نتیجہ پر پہنچے اس کے لحاظ سے انہوں نے سنجیشن تیار کئے ہیں۔ ان میں سے کئی سنجیشن پر عمل بھی ہو رہا ہے۔ انہوں نے پہلی بات یہ کہی کہ محض جوڈیشیل آفیسرس ہی نہیں بلکہ ہمارے پاس کے لائرس (Lawyers) اور قانون کا پیشہ کرنے والوں کا اسٹینڈرڈ جب تک نہ بڑھگا عدالتوں کا اسٹینڈرڈ بھی بڑھنا مشکل ہے۔ اس لئے انہوں نے بارہا اصرار کیا کہ جب تک انگریزی میں کام نہ لوگوں کو رغبت پیدا نہیں ہو سکتی۔ ان لوگوں کو انگریزی بات کرنا نہ بھی آئے تو کم از کم وہ اس قابل تو ہو جائیں کہ آئندہ پیروی تو کر لیں سکیں۔ اور کچھ سمجھ تو لیں۔ وہ یہ سمجھ لیں کہ لا رہورٹ میں کیا لکھا ہے۔ سپریم کورٹ یا دوسرے ہائیکورٹس کے کیا ججمنٹس (Judgments) ہیں انہیں معلوم ہونا چاہئے۔ کیونکہ اس کا کرنٹ لٹریچر (Current literature) جو کچھ بھی ہے وہ انگریزی ہی میں ہے۔ آج کوئی دوسری زبان ایسی نہیں ہے جس میں پورا لٹریچر ہو۔ ہمارے پاس عدالتوں میں آئین دکن یا دکن لا رہورٹ یا جو کچھ بھی ہیں وہ پرانے اصولوں پر ہیں۔ وکلاء صاحبان اور جس اتنا اسٹینڈرڈ تو رکھیں کہ انگریزی میں جو ججمنٹس آتے ہیں انہیں سمجھ جائیں۔ کرنٹ ججمنٹس کیا ہیں؟ کس مسئلہ پر سپریم کورٹ نے کیا کیا ہے؟ امتحان وہ انگریزی میں پاس کریں یا نہ کریں یہ الگ بات ہے۔ لیکن ان کا معیار اتنا بلند ہونا چاہئے کہ یہ چیزیں سمجھ سکیں۔ اور اگر معیار اتنا بلند نہ ہو تو یہ عدالتوں پر اثر کئے بغیر نہیں رہ سکتا۔ وکلاء جب بحث کی تیاری کر کے آتے ہیں تو اس کا اثر لازماً عدالتوں پر پڑتا ہے۔ وہ سمجھتے ہیں کہ کیا مسائل ہیں اور کس طرح ان کا فیصلہ کرنا چاہئے۔ اگر مباحث ہی پیدا ہوں تو ظاہر ہے کہ کوئی ایسا فیصلہ جس کو اسٹینڈرڈ سمجھ سکیں، نہیں ہو سکتا۔ یہ باتیں ایک دوسرے پر اثر کرنے والی ہیں۔ لائرس کا بھی اسٹینڈرڈ بڑھانے کی ضرورت ہے۔ امتحان کی حد تک چیف جسٹس نے ایک دو گروپس میں ناکام رہنے والوں سے متعلق جو طے کیا ہے اس کا مطلب یہ نہیں تھا کہ ان لوگوں کو فائدہ نہ پہنچے۔ لیکن انہیں کم از کم اتنی انگریزی تو آجائے کہ کرنٹ لٹریچر سے وہ واقف ہو سکیں۔

جب تک بہ نہ معلوم ہو ہمارا اسٹینڈرڈ نہ بڑھ سکے گا۔ قانونی کتابوں کی فراہمی کے سلسلے میں اسٹینڈرڈ کمیٹریز (Standard commentaries) لارپورٹ وغیرہ کے لئے ہم نے راستہ نکالا ہے۔ اور کچھ ماہ اس کے لئے رکھا گیا ہے جس سے ہر عدالت میں قانونی کتب خریدی جاسکتی ہیں۔ چیف جسٹس نے ۳۳ عدالتوں کی ایک فہرست بنائی ہے جہاں عدالتوں کے مکانوں کا یہ حال ہے کہ جج چھتری لیکر بیٹھتے ہیں کیونکہ ان پر بھی اوپر سے پانی ٹپکتا ہے۔ یہ ایسا مسئلہ ہے۔ جسکا تعلق مالیات سے ہے اور اس کے لئے ہمیں کوئی نہ کوئی راستہ نکالنا پڑتا ہے۔ گورنمنٹ نے یہ سوچتے ہوئے ایسی ۷ عدالتوں کو، جہاں بیٹھنا بھی نامکن تھا، تعمیر کرنے کا پروگرام بنایا ہے۔ اور میں امید کرتا ہوں کہ اس سال یہ انتظام ہو جائے گا۔

طلبانہ وغیرہ جیسے امور سے متعلق کچھ باتیں کہی گئیں۔ اس سے بڑھکر میں یہ کہتا ہوں کہ گواہوں کے بارے میں بھی پوچھا جاسکتا ہے۔ حالات اتنے بدلے ہوئے ہیں کہ ہم کو پھر سے تمام چیزوں پر نظر ثانی کرنے کی ضرورت ہے۔ یہ ایک ایسا مسئلہ ہے جو گورنمنٹ آف انڈیا کے زیر غور ہے۔ میں یہ بھی کہہ سکتا ہوں کہ ہمارے کرائمینل پروسیجر کوڈ کے سلسلہ میں اور دوسرے جوڈیشل پروسیجرس کے سلسلہ میں حکومت ہند کے پاس اس طرح کی یوجنا ہے۔ ہوم منسٹر کی جانب سے اس طرح کہا گیا ہے۔ اور میں سمجھتا ہوں کہ جلد ہی پروسیجرس میں بھی تبدیلی ہو جائیگی جس کی وجہ سے جو جو پیچیدگیاں معلوم ہوتی ہیں وہ رفع ہو سکتی ہیں۔ اس وجہ سے میں سمجھتا ہوں کہ ہمیں جوڈیشل ڈپارٹمنٹ کے تعلق سے مایوس ہونے کی وجہ نہیں ہے۔ ہمارے پاس آج کم از کم ایسے لوگ ہیں جن پر کافی بھروسہ ہونا چاہیے۔ وہ مستعد ہیں۔ سمجھدار ہیں اور حیدرآباد کے جوڈیشل ڈپارٹمنٹ کی ترقی ان کے پیش نظر ہے۔

ایک بات جو مجسٹریٹس کے تعلق سے کہی گئی اور میں بھی اس میں صداقت دیکھتا ہوں۔ وہ یہ کہ جب ان کے سامنے کوئی واقعہ آتا ہے تو خود ان کو انیشیٹیو (Initiative) لینا چاہیے۔ یہ بات نہیں ہوتی۔ مجسٹریٹ کو ایسے اختیارات ہیں۔ پروسیجر کوڈ میں ہیں۔ میرا تجربہ ہے کسی جگہ ایسا ذکر آیا تو تذکرے میں نے کہا کہ یہ بات ہے۔ آپ کو اختیار ہے اور آپ ایسا کر سکتے ہیں تو انہوں نے یہ کارروائی شروع کر دی مجسٹریٹ کو جو کرائمینل کوڈ کے تحت اختیارات ہیں ان کو پبلک کے مفاد کے لئے استعمال کرنا چاہیے ورنہ پہلے زمانہ میں یہ رجحان تھا کہ جو چالانی مقدمات ہوتے ہیں ان میں لازمی طور پر سزا ہونی چاہیے اور کوئی استغناء کا مقدمہ ہو تو وہ خارج ہونا چاہیے۔ عام طور پر یہ سمجھا جاتا تھا کہ جو لوگ استغناء داخل کئے ہیں وہ کاسیاب ہوں گے۔ بہر حال مجسٹریٹس کو میں نے اس بارے میں توجہ دلائی ہے کہ مجسٹریٹ کو اپنی یہ ذمہ داریاں سمجھنا چاہیے جو مقدمات استغناء کے ہوتے ہیں یا معمولی مقدمات ضرور وغیرہ کے ہیں ان میں اگر کوئی

سچائی معلوم ہو تو کڑی سے کڑی سزا دجانا ضروری ہے۔ کیونکہ اگر مجسٹریٹ اس طرف رجوع نہوں تو ظاہر ہے کہ پبلک سوریل (Public morale) پر یہ بھی اس کا برا اثر پڑتا ہے۔

شری عبدالرحمن (سلک پیٹھ)۔ عدالتوں کی زبان کے تعلق سے حکومت کی کیا پالیسی ہے؟

شری دگمبر راؤ بندو۔ معاف کیجئے۔ میں کہنے والا ہی تھا۔ زبان کے تعلق سے کچھ غلط فہمی ہوئی ہے۔ جیسا کہ میں نے کہا معیار اونچا کرنے کے لئے ہمارے چیف جسٹس کا یہ رجحان ہے کہ لائٹس کو انگریزی جاننا چاہئے اور جوڈیشل افسرس کے لئے تو یہ لازمی ہے کہ انگلش میں فیصلے لکھیں۔ بیانات لینے کے سلسلے میں اڑوس پڑوس کے اسٹیٹس میں جو عمل ہوتا ہے ایسا عمل یہاں نہیں ہوتا۔ دراصل یہ پروسیجر ہونا چاہئے کہ گواہ جس زبان میں بولتا ہے اسی زبان میں بیان قلمبند کیا جائے تب ہی ہمکو اصلیت معلوم ہوسکتی ہے۔ اس کا ایک ڈبل ریکارڈ اس طرح تیار ہونا چاہئے کہ ایک تو گواہ کی لینگویج میں ہو اور دوسرے انگلش میں ہو کیونکہ پریسائڈنگ آفیسر (Presiding officer) انگریزی سمجھتا ہے۔ دوسرے سررشتہ دار، پیشی کا اہلکار یا ٹرانسلیٹر ہوگا وہ اس زبان میں بیان قلمبند کریگا جس زبان میں کہ گواہ بولتا ہے۔ ہائیکورٹ سے اس بارے میں کافی مراسلت کے بعد یہ مان لیا گیا ہے کہ پبلک انٹرسٹ کس میں ہے گواہ کو بھی یہ معلوم ہونا چاہئے کہ میں نے جو بیان دیا وہ ٹھیک ہے کیونکہ آخر میں تو یہ لکھا جاتا ہے کہ ”گواہ نے بیان سنکر صحت تسلیم کی“، ظاہر ہے کہ اسی لینگویج میں یہ بیان لکھا جانا چاہئے۔ اس حد تک غور کیا گیا اور یہ طے کیا گیا کہ جہاں پر جو لینگویج بولی جاتی ہے اس میں بیان قلمبند کرنا چاہئے۔ اس کی ڈبل انٹری (Double entry) ہو البتہ پریسائڈنگ آفیسر بیان کو انگلش میں نوٹ کرسکتا ہے۔ لیکن جو اصل بیان ہوتا ہے وہ اسی زبان میں قلمبند ہونا چاہئے اس میں ایک دقت یہ ہے کہ ہر جگہ ہر لینگویج کا انتظام تو نہیں ہوسکتا۔ اس وجہ سے یہ سمجھا گیا کہ جس ایریا میں جو کورٹ کام کرتا ہے اسی لحاظ سے یہ عمل ہونا چاہئے۔ تب کورٹس کے لحاظ سے غور کیا گیا۔ فرض کیجئے کہ ریلوے مجسٹریٹ کا کورٹ ہے یا حیدرآباد کا کوئی کورٹ ہے یا اسپیشل مجسٹریٹ کا کورٹ ہے جہاں پر ریاست بھر کے مقدمے آتے ہیں تو وہاں پر کوئی لینگویج رکھی جائیں؟ تو وہاں کے لئے سب لینگویجس رکھی گئی ہیں جیسے ہندی ہے۔ اردو ہے تلگو۔ مرہٹی اور کٹڑی ہیں۔ ریلوے مجسٹریٹ کے پاس ان سب لینگویجس کا انتظام ہوگا۔ حیدرآباد میں خاصکر اردو ہندی اور تلگو کا انتظام ہوگا۔ تو ایسی کوئی خاص تشویش نہ ہونا چاہئے جس کی وجہ سے یہ خیال پیدا ہو جائے کہ کسی لینگویج کو دبانے کی کوشش ہو رہی ہے۔ اس میں لینگویجک پراویس (Linguistic provinces) کا کوئی مسئلہ نہیں ہے بلکہ ولجین اور

تعلقوں کے لحاظ سے جہاں پر جو زبانیں بولی جاتی ہیں ان کا انتظام کیا گیا ہے۔ چنانچہ ضلع نانادیڑ میں ایک تعلقہ ایسا ہے کہ جہاں پر تین زبانیں بولی جاتی ہیں نو وہاں ان کا انتظام کیا گیا ہے۔ اس کا پریس نوٹ عنقریب ہی شائع ہونے والا ہے۔

شری سرن گروہ انعامدار (اندولہ - جیورگی) - ضلع گلبرگہ تعلقہ سیڑم اور النہ میں کنڑی کا انتظام ہے۔ میں نہیں سمجھتا کہ النہ اور سیڑم میں کنڑی بولنے والے ہیں۔

شری دگمبر راؤ بندو - دونوں انتظامات ہیں تاکہ کسی کو بہ احساس نہو۔ النہ میں کنڑی میں انتظام رکھا گیا ہے اور فیگرس دیکھ کر ہی رکھا گیا ہے۔ معلوم یہ ہوا کہ سنہ ۱۹۵۱ء کے سانس کے لحاظ سے ہائیکورٹ نے ایسا عمل کیا۔ لیکن جب ہائیکورٹ کو توجہ دلائی گئی تو ہائیکورٹ اور حکومت کے ارکان نے بیٹھ کر غور و خوص کیا اس امر کے پیش نظر کہ لنگوسٹیک پریفرنس دینا نہیں ہے بلکہ عوام کو سہولت دینا ہے اس لحاظ سے جہاں پر دو لینگویجس بولی جاتی ہیں وہاں دو کا انتظام کیا گیا اور جہاں تین بولی جاتی ہیں وہاں تین کا انتظام کیا گیا۔ اس طرح سے.....

श्री व्ही. डी देशपांडे :- किसी लैंग्वेज को रेकगनायिज करने के लिये क्या परसेट्रेंज रखा गया है ?

شری دگمبر راؤ بندو - عام طور پر یہ خیال رکھا گیا ہے کہ کم سے کم ۳۰ پرسنٹ تک کسی لینگویج کے جاننے والوں کی آبادی ہوگی تو اس کا بھی لحاظ کیا جائے۔ لیکن بعض جگہ کچھ ایسا ہوتا ہے کہ ایک دو ہی مواضعات ہیں جیسا کہ آرییل ممبر نے سمجھایا تھا انہیں کسی اور تعلقہ سے متعلق کر دیں تو کوئی ذقت ہوگی۔ اس تعلق سے آرییل ممبرس کو تشویش کی ضرورت نہیں ہے۔

श्रीमती आशातात्री बाघमारे :- किनवट, माणिकगड, राजूरा येथे मराठी सुरूं केले आहे काय ?

श्री दिगंबर राव बिदू :- कोठे ?

श्रीमती आशातात्री बाघमारे :- किनवट व माणिकगड राजूरा येथे मराठी सुरूं केले आहे काय ?

شری دگمبر راؤ بندو - کنوٹ اور راجیورہ دونوں میں مرہٹی ہے۔ البتہ بوتھ جو بائی لنگویل (Bi-lingual) ہے وہاں انتظام نہیں کیا گیا ہے کیونکہ ایسا انتظام نہیں کیا جا سکتا تھا۔ لیکن ہمارے سامنے یہ چیز تھی کہ پبلک کا مفاد ملحوظ رہے اور جیسا کہ میں نے کہا جہاں دو لینگویجس ہیں وہاں عموماً دونوں لینگویجس کا انتظام کیا گیا ہے۔ حیدرآباد میں تو ہندی - اردو - تلگو - مرہٹی - کنڑی پانچوں زبانوں کا انتظام کیا گیا ہے۔

श्री कृष्ण राम विठ्ठल :- क्या یکم اپریل سے اس پر عمل ہوگا ?

شری دگمبر راؤ بنامو۔ ہاں وہ نوٹیفیکیشن آجائے گا۔ میں سمجھتا ہوں کہ جوڈیشل ڈپارٹمنٹ کے تعلق سے ایک اہم چیز رہ گئی تھی جس کی یاد دہی کے لئے میں آئریبل ممبر کا مشکور ہوں۔

شری عبدالرحمن۔ میں اس سلسلہ میں مبارکباد بھی دیتا ہوں کہ حکومت اس ضمن میں بہت اچھی پالیسی اختیار کر رہی ہے۔

شری دگمبر راؤ بندو۔ اس کے بعد جیل ڈپارٹمنٹ کے تعلق سے یہاں کچھ کہا گیا ہے۔۔۔

شری شرن گوڑہ۔ میرا ایک کانسٹیٹیوشنل آبجیکشن (Constitutional objection) ہے۔ ہائی کورٹ کے اخراجات ۱ لاکھ ۷۰ ہزار روپیہ بتلائے گئے ہیں۔ سارلیز کے بارے میں چارجڈ اکاؤنٹ (Charged account) ہوسکتا ہے لیکن دوسرے اخراجات کے متعلق میرا اعتراض تھا کہ ان پر ووٹ نہیں دیا جاسکتا۔

شری دگمبر راؤ بندو۔ وہ ووٹبل (Votable) ہے۔ اور اسی لحاظ سے ان پر کٹ موشنس بھی آئے ہیں۔

شری جی. ڈی. دیشپانڈے:- اُنکا کہنا ہے کہ سب سے پہلے چیف جسٹس اور اُنکے آفیسرز تک ہی چارجڈ ہونا چاہیے لیکن یہاں اُنکے باقی آفیسرز کو بھی چارجڈ بتایا گیا ہے یعنی کل ہائیکورٹ کا خرچہ چارجڈ بتایا گیا ہے جیسا نہیں ہونا چاہیے تھا۔ اِسکے لئے دو ہسٹری بنانے چاہیے۔

شری دگمبر راؤ بندو۔ ایسا نہیں ہے بلکہ ہائی کورٹ جو ہوتا ہے اس کا ایک خاص پوزیشن رکھا گیا ہے اور پورے جوڈیشل ڈپارٹمنٹ پر اڈمنسٹریشن اور فنانس کے نقطہ نظر سے ہمارا کنٹرول ہے۔ دوسری ماتحت عدالتوں پر اڈمنسٹریٹیو کنٹرول ہے۔ ہائی کورٹ جس بھی جب مقرر ہوتے ہیں انہیں سپریم کورٹ کے مشورہ سے پریسڈنٹ مقرر کرتے ہیں اور اُس پر راج پریسڈنٹ کی بھی رائے لی جاتی ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ گورنمنٹ کی رائے لی جاتی ہے۔ کانسٹیٹیوشن کے تحت ہائی کورٹ سپریم کورٹ کے تحت سمجھے جاتے ہیں۔ دوسری جو عدالتیں ہیں ان کے تعلق سے ہاؤز کے سامنے ڈیمانڈس رکھے جاتے ہیں۔ کیونکہ فنانس بھی ہمارے پاس سے ہی جاتا ہے۔ چونکہ آل انڈیا اسکیم کے تحت اس طرح کا عمل ہوا ہے میں سمجھتا ہوں کہ وہ ٹھیک ہی ہوا ہے۔

جیل ڈپارٹمنٹ کے تعلق سے میں یہ عرض کر رہا تھا کہ کچھ چیزیں ایسی کہی گئی ہیں کہ جس کے بارے میں کم از کم آئریبل ممبرس آف دی ہاؤز کو میں سمجھتا ہوں کہ کوئی شکایت نہ ہونی چاہئے تھی۔ میں یہ دیکھتا ہوں کہ جو اصلاحی چیزیں جیل میں کی گئی ہیں ان سے فائدہ ہوا ہے۔ ممکن ہے کچھ تاح تجزیے ان دنوں کے پہلے کے ہوں گے اور ابھی ان کا اثر ذہنوں پر ہو۔ لیکن میں دعوت دیتا ہوں کہ وہ جیل جائیں۔ لیکن برے معنوں میں نہیں۔۔۔۔۔

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :- क्या व्हिजीटर के तौर पर नहीं रखा जा सकता ? जिसके लिये सिर्फ जल ही जाना पड़ेगा ?

(Laughter)

श्री. दगंबर राऊ बन्दो - आप दोनों طریقوں سے جا سکتے ہیں - آپ قریب سے دیکھنا چاہتے ہیں تو جیل جا کر بھی دیکھ سکتے ہیں - (Laughter) اس کا موقع مل سکتا ہے - لیکن مجھے یقین ہے کہ آنریبل ممبر پھر سے جائیں ، چاہے کسی حیثیت سے جائیں تو ان کو یقیناً فرق نظر آئے گا اس کے بعد وہ مطمئن ہو جائیں گے کہ کم از کم ہم نے کچھ قدم ترقی کی طرف اٹھایا ہے اور جو ایمینیٹیز دئے گئے ہیں اس کے متعلق میں نے الگ الگ اوقات میں قیدیوں سے بات چیت کر کے بھی پوچھ لیا ہے - حال ہی میں اگر کیکارل فارم کھولا گیا وہاں پر بھی کوئی ایسے لوگ ہیں جنہیں لائف سنٹنس (Life sentence) ملا ہے یا کافی بڑی مدت کی سزا میں لاک اپ (Lockup) ہیں اور ان کے متعلق یہ جانچ کرنے کے بعد کہ وہ بھاگ نہ جائیں گے اور ان کے لئے وہاں بیمار کس کا انتظام کر کے کھیت کے کام پر لگایا گیا ہے - انہوں نے بہت خوشی سے کام کیا ہے اور میں نے دیکھا ہے کہ اپنی محنت سے قیدیوں نے چار پاؤلیاں تیار کی ہیں - انہوں نے کافی اچھا کام کیا ہے وہ دیکھنے کے قابل ہے - میں کوئی ایسی چیز تو آپ کے سامنے رکھنا نہیں چاہتا کہ محض تعریف ہی تعریف ہو - لیکن میں ضرور یہ چاہتا ہوں کہ آپ سنٹرل جیل جا کر دیکھیں - سکندر آباد جیل جا کر دیکھیں - یہ دیکھنے کے بعد اور اطمینان کرنے کے بعد مجھے یقین ہے کہ آنریبل ممبر اس معاملہ میں میری تائید کریں گے - اور وہ سمجھینگے کہ ہم نے جو اقدام اٹھایا ہے وہ اچھا اور ترقی کی طرف ہے

श्री. गोपिंडी गंगारेड्डी (निर्मल आम) :- तालूकेजात में जो रिमांडच रखे जाते हैं और अُنको जो तकलीफ होती है उसके बारे में आपने कुछ नहीं बताया ।

श्री. दगंबर राऊ बन्दो - جن لوگوں کو زیر دریافت رکھا جاتا ہے ان کے بارے میں

श्री. गोपिंडी गंगारेड्डी :- जिन लोगों को तालूकेजात में रखा जाता है अُنके बारे में ।

श्री. दगंबर राऊ बन्दो - میں تعلقہجات کے ریلوں کے بارے میں کہہ رہا ہوں - تعلقہ منصفی میں ہم نے لاک اپس (Lock ups) دئے ہیں پہلے وہ لاک اپس تحصیل کے تحت تھے - تعلقہ جیل میں اور کو ہی رکھا جاتا ہے جن کے مقدمات چل رہے ہوں - اگر تعداد کافی پڑے جائے تو ڈسٹرکٹ میں منتقل کیا جاتا ہے - تمام مقدمات پر تو اور ان کے لئے مکان کا انتظام نہیں ہو سکا - لیکن ہر جگہ جس طرح پرووائڈ (Provide) کیا گیا ہے اسی طرح اونکو بھی پرووائڈ کیا گیا ہے - بہتہ اور کھانے پینے کی چیزوں میں کوئی فرق نہیں ہے - البتہ بعض جگہوں پر عمارتوں کی تکلیف ہے - اس کے لئے یہ سوچا جا رہا ہے کہ عارضی طور پر ہم کیا کر سکتے ہیں -

شری کے۔ ایل۔ نرسمہا راؤ (یلندو۔ عام)۔ ری فارمس آنے کے بعد بھی قیدیوں سے برقداز سے لے کر آفیسرز تک کے گھروں پر کام لیا جاتا ہے۔

شری دگمبراؤ بندو۔ میں نے ایسی شکایت نہیں سنی ہے۔ البتہ کھیتوں پر کام لیا جاتا ہے۔ باؤلیوں پر کام لیا جاتا ہے۔ پانی وغیرہ نکالنے کے لئے۔ یا جیل کے برتن اور کپڑے وغیرہ دھونے کا کام لیا جاتا ہے۔

شری کے۔ ایل۔ نرسمہا راؤ۔ آفیسرز ذاتی کاموں کے لئے اون کو آرڈرلی (Orderly) کے طور پر رکھ لئے ہیں۔

شری دگمبراؤ بندو۔ سیرے پاس ایسی کوئی شکایت نہیں ہے۔

شری اے۔ راجندرہ ریڈی۔ اپوزیشن کے ممبرس میں کوئی نان آفیشیل ویزیٹرز جیلوں کے لئے نہیں لئے گئے اسکی کیا وجہ ہے؟

شری دگمبراؤ بندو۔ میں نہیں سمجھتا کہ ایسا ہو سکتا ہے۔ بات یہ ہے کہ دونوں طرف سے اچھی اسپرٹ ہونی چاہئے۔ اگر آپ کو ہم پر اعتقاد ہے تو ہم کو بھی آپ پر اعتقاد ہو سکتا ہے۔ لیکن ابتداء ہی اس سے ہوتی ہے کہ آپ ہم سے بے بھروسہ رہتے ہیں۔ ایسی صورت میں ہم بھی آپ سے بے بھروسہ رہینگے۔ یہ چیزیں ایک دوسرے پر موقوف ہیں۔ اگر ہم ایک دوسرے کو سمجھ سکیں اور یہ اسپرٹ ہو کہ ہم کس حد تک مل کر کام کر سکتے ہیں تو یقیناً ہم بہت آگے بڑھ سکتے ہیں۔ جہاں اختلافات ہوتے ہیں اونکو تو چھوڑ دیجئے۔ لیکن آج حالات ایسے ہیں کہ ہم کئی معاملات میں متفقہ طور پر کام کر سکتے ہیں۔

ایک اور چیز یہ بھی کہی گئی کہ جیل ڈپارٹمنٹ میں سندھی لوگ ہی ہیں۔ میں نے اس کا جواب پہلے بھی دیا تھا۔ مجھے افسوس ہے کہ آپ انکے متعلق اس طرح سے سوچ رہے ہیں۔ یہ وہ لوگ ہیں جو ایک زمانے میں سندھ کے جیل ڈپارٹمنٹ میں تھے۔ اور گورنمنٹ آفیسرز تھے۔ اونکی بدقسمتی تھی کہ ملک کی تقسیم ہو گئی اور وہ یہاں آنے کے لئے مجبور ہو گئے۔ گورنمنٹ آف انڈیا نے جس طرح الگ الگ جگہوں پر اون کو آباد کیا یہاں بھی اون لوگوں کو بھیجا۔ یہاں پر جیسے حالات پولس ایکشن کے بعد تھے اون کے تحت یہ مناسب سمجھا گیا کہ یہاں پر اونکو ضم کر لیا جائے۔ چنانچہ پبلک سروس کمیشن کے مشورے سے اون کو الگ الگ جگہوں پر رکھا گیا۔ میں اس سلسلے میں یہی کہوں گا کہ ہم کو وسعت دلی کے ساتھ دیکھنا چاہئے۔ میں ہاؤس سے اپیل کرتا ہوں کہ یہ لوگ سندھی ہیں یا پنجابی ہیں اس نقطہ نظر سے نہیں سوچنا چاہئے بلکہ کام کے لحاظ سے معیار کے لحاظ سے اونکی ذاتی قابلیت کے لحاظ سے سوچنا چاہئے۔ اگر کوئی آدمی نا اہل ہے تو ضرور اسکے بارے میں الگ طور پر سوچا جاسکتا ہے۔ محض سندھی ہونے کی بنا پر اون کے خلاف مہرچنٹا یا سمجھنا مناسب نہیں۔

پولس کے تعلق سے آنریبل ممبرس نے جو رجسٹریس رکھے ہیں وہ وہی رجسٹریس ہیں جن کے بارے میں حکومت خود بھی غور کر رہی ہے۔ اس وجہ سے جو رجسٹریس آئے ہیں میں ان کو ویلکم (Welcome) کرتا ہوں اور خاص کر میرے دوست لیڈر آف دی اپوزیشن نے کانسٹیبل کے تعلق سے جو خیال ظاہر کیا ہے اوسکو ویلکم کرتا ہوں۔ اس کے پہلے انہوں نے کبھی اونکے متعلق غور نہیں کیا تھا۔ میں اس کی وجہ سے کانسٹیبل کو بھی قابل مبارکباد سمجھتا ہوں کہ کم از کم آج آنریبل لیڈر آف دی اپوزیشن یہ سمجھنے لگے ہیں کہ وہ بھی انسان ہیں۔ اون لوگوں کو بھی آسائش کی ضرورت ہے۔ اونکے لئے بھی کچھ نہ کچھ کرنے کی ضرورت ہے۔ مجھے اونکے اس کہنے سے کافی نشفی ہو گئی۔

شری ڈی. ڈی. دیشپانڈے :- پچھلے وقت میں میں نے کہا تھا کہ کانسٹیبل کو بٹر ہاؤسنگ ملے اور ان کا پے سکیل بھی بٹر ہو اسیا کہا تھا اسے سرف جیادہ ڈیٹیل میں کہا ہے۔

شری ڈگمبر راؤ بندو :- دونوں بھی قابل مبارک باد ہیں۔ ہمیشہ پولیس کے بارے میں بحث کرتے رہے دو تین چیزیں زیادہ کہی جاتی ہیں۔ ایک تو یہ کہا جاتا ہے کہ وہ لوگ ان افیشنٹ (Inefficient) ہیں۔ کرپٹڈ (Corrupted) ہیں۔ انہیں اپوزیشن پارٹیز کو سپرس (Suppress) کرنے کے لئے استعمال کیا جاتا ہے۔ میں اس سلسلہ میں یہ کہوں گا کہ حکومت کی پالیسی ایک بنیاد پر ہوتی ہے۔ اگر حکومت کی پالیسی کرپٹسزم (Criticism) کے قابل ہے تو ہاؤز اس پر کھلے طور پر کرپٹسزم کر سکتا ہے۔ لیکن اگر کوئی آدمی غلط کام کرتا ہے تو اس کی اتنی ذمہ داری ہم پر نہیں ڈالی جاسکتی جتنی کہ ڈالنے کی کوشش کی جاتی ہے۔ اور اس کو ایسا رنگ دیا جاتا ہے کہ پالیسی کے طور پر حکومت نے یہ کام کروایا ہے۔ جیسا کہ دس آدمیوں میں سے دو آدمیوں نے کوئی غلط کام کیا ہو تو یہ کہنا کہ دس آدمیوں نے یہ کام کیا ہے۔ آپ دوسروں پر الزام لگانے کی کوشش کرتے ہیں اور یہ کہتے ہیں کہ ایسے لوگوں سے آپ یہ کام کراتے ہیں۔ میں تو یہ سمجھتا ہوں کہ یہ ہم پر شبہ ہے۔ ہمارے کیپرکٹر پر دہبہ لگانے کی کوشش ہے۔ حکومت کو ذلیل کرنے کی کوشش ہے۔ دراصل اگر پولیس کے تعلق سے حکومت حیدرآباد کی یہ پالیسی ہوتی کہ پولیس کے ذریعہ کمیونسٹ پارٹی یا کسی دوسری پارٹی کو دبایا جائے تو ہاؤز جانتا ہے کہ کمیونسٹ پارٹی پر سے جو بیان (Ban) اٹھا دیا گیا وہ نہ اٹھتا اور برابر یہی بتا یا جاتا کہ اس بیان کو کنٹینیو (Continue) کرنا چاہیے۔ اور جن لوگوں پر مقدمات تھے وہ نہ اٹھائے جاتے۔ آنریبل ممبرس آفندی اپوزیشن کے ذمہ دار کارکن جانتے ہیں کہ محض ہماری کوشش کی وجہ سے یہ مقدمات اٹھائے گئے۔ ہم یہ محسوس کر رہے تھے کہ ٹیکنیکلی (Technically) تو یہ مقدمات چل سکتے ہیں لیکن ذاتی طور پر میں خود بھی ان مقدمات سے مطمئن نہیں تھا اس لئے ہم نے یہ مناسب نہیں سمجھا کہ بلا وجہ ان لوگوں کو سالہا سال

تک جیلوں میں سڑایا جائے۔ جو لوگ بوڑھے اور بیمار ہیں ان کی زندگی خواہ مخواہ جیلوں میں ختم کر دی جائے۔ ہم نے اس کے معافی ہیرمینٹیئرین پائٹ آف ویو (Humanitarian point of view) سے سرچا۔ چنانچہ بہت سے مقدمات اٹھائے گئے۔ ڈیشینیوز (Detenues) کی حیثیت سے جو لوگ جیلوں میں نہرے ان کے جیل سے چھوٹنے کے بعد ان پر آرمس ایکٹ (Arms Act) کے تحت مقدمے چلائے جارہے تھے۔ لیکن ہم نے یہ مناسب سمجھا کہ چونکہ وہ لوگ پہلے ہی دو ایک سال جیلوں میں رہ چکے ہیں اس لئے ان پر مقدمات چلانا مناسب نہیں۔ ہمارے اصرار پر گورنمنٹ آف انڈیا نے اس کو تسلیم کیا کہ ہم اس پوزیشن میں ہیں کہ یہ مقدمات اٹھائے جائیں۔ کئی مقدمات ایسے ہیں جن کے بارے میں میں نے یہ کہا تھا کہ کسی معیار پر ان کو جانچنا چاہیے اس کے بارے میں کوئی اسٹینڈرڈ ہونا چاہیے۔ اور بھی کئی ایسے مقدمات ہیں جو وتھڈرا (Withdraw) کرنے کے قابل ہیں یا متعلقہ لوگوں کی رہائی عمل میں لائی جاسکتی ہے ان کے بارے میں بھی سرچا جارہا ہے۔ اگر حکومت کی یہ پالیسی ہوتی کہ اپوزیشن کو سپرس کیا جائے تو یہ چیزیں نہیں ہوتیں۔ ہم نے جو کچھ کیا وہ اس بات کا ثبوت ہے کہ ہمارے دل میں کڑی چیز نہیں ہے۔ ہمارے دل بالکل صاف ہیں۔ ہماری پالیسی سنٹرل گورنمنٹ کی پالیسی ہے۔ اور پالیسی آتی ہے ان قوانین کے ذریعہ جو اس وقت موجود ہیں۔ اس لئے نیک نیتی سے ہمارا یہ فرض ہو جاتا ہے کہ جو قوانین ہیں ان پر خود بھی عدل کریں اور دوسروں سے بھی عدل کروائیں۔ ہم حتی المقدور اسی طرح کی کوشش کر رہے ہیں۔ میں ان کا دعویدار نہیں ہوں کہ ہم اس میں سے فیصہائی کاسباب ہو گئے ہیں۔ بلکہ ہم اس ڈائرکشن میں چلنے کی کوشش ضرور کر رہے ہیں۔ ایک صاحب نے یہ کہا کہ اگر اسی طرح دبانے کی پالیسی جاری رہے تو نتیجہ یہ ہو جائیگا کہ ہوم منسٹر کو ہٹنا پڑیگا۔ میں ایک چیز صاف کر دینا چاہتا ہوں کہ میں ایسا آدمی واقع ہوا ہوں کہ مجھ پر ڈرانے اور دھمکانے کا اثر نہیں ہوتا۔ اگر کوئی یہ سمجھتا ہے کہ محض اس طرح سے ڈرانے سے میں ہٹ جاؤں گا تو یہ بات غلط ہے۔ البتہ اگر میری پالیسی اور ہاؤز کی پالیسی میں اختلاف ہے اور باوجود اس کے کہ میرا ضمیر صاف ہے اور میں سمجھتا ہوں کہ ٹھیک راستے پر ہوں لیکن ہاؤز اس کو نہیں مانتا اور یہ خیال کرتا ہے کہ یہ آدمی مناسب نہیں تو ایسی صورت میں مجھے یہاں سے نکل جانے میں بالکل کوئی رنج نہیں ہوگا۔ میں اس معاملہ میں بالکل صاف ہوں۔ یہ بھی کہا جاتا ہے کہ کیا پالیسی ہے کہ ہر وقت دفعہ (۱۴۳) نافذ کیا جاتا ہے۔ یہ پالیسی خود کریمینل پوسٹیجر کوڈ میں موجود ہے۔ اس کا منشا یہ ہے کہ ایسے تدابیر اختیار کئے جائیں جن کی وجہ سے کوئی سنگین معاملہ واقع ہونے نہ پائے۔ انسدادی تدابیر اختیار کرنے کے لئے یہ دفعات وضعات کئے گئے ہیں۔ کانسٹیبل ٹیچن میں مطلق ایسی لبرٹیز (Liberties) نہیں دی گئی ہیں۔ اس میں یہ بتایا گیا ہے کہ Reasonable restrictions for the security of the State, for the maintenance of Public order.

اس میں یہ تمام چیزیں ہیں - دفعہ (۱۴۴) کانسی ٹیرس کی چوکھٹ میں ٹھیک بیٹھتا ہے - اس وجہ سے آج تک اس کو کسی نے چیلنج نہیں کیا - اگر کوئی ممبر یہ سمجھتے ہیں کہ یہ دفعہ غلط ہے تو وہ ایک رٹ اپلیکیشن (Writ application) عدالت میں دے کر دیکھیں کہ ہائی کورٹ کیا طے کرنا ہے - مجسٹریٹ کو یہ اختیار دیا گیا ہے کہ انسدادی تدابیر اختیار کرنے کے لئے دفعہ (۱۴۴) نافذ کرنے کی ضرورت پڑے تو نافذ کرے - اس میں گورنمنٹ کی پالیسی کا کیا سوال ہے - کیا ممبرس یہ چاہتے ہیں کہ گورنمنٹ یا ہوم منسٹر کو جب تک اطلاع نہ دی جائے کر فیو نافذ نہیں کرنا چاہئے - اگر ایسا ہوتا ہے ان کے نام میں بیجا مداخلت ہوگی ہمارا کام یہ ہے کہ اون کے اختیارات کی تعظیم کریں - ہم سیول ڈس او بیڈینس (Civil disobedience) گاندھی جی کی ستیہ گرہ کے اصول پر کرتے ہیں لیکن اس کی جو اصل اسپرٹ ہے اوس کو دور رکھنا چاہتے ہیں - گاندھی جی نے کبھی یہ نہیں بتایا کہ راستہ چلنے والے لوگ عمداً قانون توڑیں اور پھر شکایت کریں کہ پولیس نے اون کو گرفتار کیا - گاندھی جی نے کبھی شکایت نہیں کی کیونکہ پولیس نے انہیں گرفتار کیا - آپ ایک طرف تو قانون توڑیں اور پھر شکایت کریں - جب آپ نے سمجھ بوجھ کر یہ کیا ہے تو اوس کا نتیجہ بھی بھگتنا پڑیگا - اگر کسی آدمی نے قانون توڑا ہے تو محض اس وجہ سے کہ اوس نے پیس فلی (Peacefully) قانون توڑا ہے - کوئی مار پیٹ نہیں کی - یا ہتھیار ہاتھ میں رکھ کر قانون میں توڑا اس لئے پولیس اوس کے متعلق کوئی کارروائی نہ کرے - اگر ہم ایسا طے کرتے ہیں تو پھر یہ ہو جائیگا کہ ہر اسمبلی یا پارلیمنٹ کے بنائے ہوئے قانون کو کوئی بھی توڑ سکتا ہے - ایک ہیومنسٹ نے ایک بڑے مزے کی بات لکھی ہے انہوں نے لکھا ہے کہ بعض قفل ایسے ہوتے ہیں جو بند تو ہوتے ہیں کنجی کے بغیر لیکن کھولنے کے لئے کنجی کی ضرورت ہے لیکن میں نے ایک ایسا قفل بنا یا ہے جس کو کھولنے کے لئے کنجی کی ضرورت نہیں ہوتی لیکن بند کرنے کے وقت کنجی کی ضرورت ہوتی ہے - اسی طرح قانون جو ہم بناتے ہیں وہ اس طرح تہڑنے کے لئے نہیں بنائے جاتے - اگر کوئی یہ کہتا ہے کہ میں پیس فلی قانون کو توڑنا چاہتا ہوں تو توڑیے اس کا نتیجہ بھی بھگت لیجئے - اس وقت پھر یہ شکایت کرنا کہ پولیس نے کیوں گرفتار کیا نا وا جی ہوگا جو کچھ ہوگا قانون کے لحاظ سے ہوگا - ہمیں اوس میں انٹریٹ (Interest) نہیں ہے - لیکن ہم یہ چاہتے ہیں کہ جو قانون ہے اوس کے سب پابند ہو جائیں آفیسرس بھی پابند ہو جائیں اور عوام بھی پابند ہو جائیں کچھ ایسے آفیسرس ہو سکتے ہیں جو خود قانون کی خلاف ورزی کرتے ہیں اون کے لئے بھی ہم کو راستہ ڈھونڈنا ضروری ہے ...

شری کے - وی - رام راؤ - کیا مجسٹریٹ بغیر پولیس کے مشورہ کے دفعہ (۱۴۴)

لاگو کر سکتا ہے ؟

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ پولیس رپورٹ کرتی ہے کہ حالات ایسے ہیں کہ اس دفعہ کولاگو کرنے کی ضرورت ہے۔ جب عدالت مطمئن ہو جاتی ہے کہ واقعی ایسے حالات ہیں تو یہ دفعہ لگایا جاتا ہے۔

لیکن یہ انسدادی دفعات ہیں جو آئندہ چل کر سنگین جرائم سرزد ہونے کے امکانات کو روکنے کے لئے رکھے گئے ہیں۔ اگر ان کو بروقت استعمال نہ کیا جائے تو اس کا مطلب یہ ہوگا کہ کریمنل پروسیجر کوڈ (Criminal procedure code) کو ہم بدل رہے ہیں۔۔۔۔۔

श्री व्ही डी. देशपांडे: महाविरा पुलिस देती है, तो जिम्मेवारी भी पुलिस को ही लेना चाहिये।

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ رپورٹ پیش کرنا ان کا کام ہے۔ مجسٹریٹ تو خود اپنے طور سے یہ کام نہیں کر سکتے ان کا فرض ہے کہ وہ اس طریقہ سے عمل کریں۔ جو کوئی قانون کی زد میں آنے کی کوشش کریگا اوس کو اوس کا نتیجہ بھگتنا ہی پڑیگا۔ گاندھی جی نے قانون کو توڑنے کی کوشش کی تھی یہ کہا جائے تو کوئی ٹھیک بات نہیں ہوگی لیکن اوس کے ساتھ ساتھ یہ بھی تو دیکھنا چاہئے کہ گاندھی جی نے اوس زمانے کے قانون کو توڑنے کی جو کوشش کی اوس کے نتیجے میں انہیں بھی تو جیل جانا پڑا تھا۔ کہا گیا کہ جھوٹے مقدمات لگائے جاتے ہیں میرا خیال یہ ہے کہ سو میں ایک آدمہ شخص بھی ایسا نہیں ہوگا جو یہ اعتراف کرے کہ مجھ پر سچا مقدمہ قائم کیا گیا ہے۔ جس کسی پر الزام لگایا جائے وہ یہی کہتا ہے کہ الزام جھوٹا ہے۔ مقدمہ صحیح نہیں ہے۔ اور لوگوں کی شکایات سننے کے بعد بہت سے لوگ اون کی ہمدردی میں تائید کرنے اور اون کی شکایتیں لانے کے لئے کھڑے ہو جاتے ہیں۔ میں برابر اون کی ٹیک دلی کا اعتراف کرتا ہوں۔ اون کی پبلک اسپرٹ کی تعریف کروں گا۔ وہ پبلک ورکر (Public worker) ہونے کی حیثیت سے ایسا خیال رکھتے ہیں کہ پبلک کے کسی فرد کو کسی قسم کی تکلیف نہ ہونے پائے۔ کسی مصیبت زدہ آدمی کی مصیبت کی داستان سننے کے بعد وہ اوس کی مدد کے لئے آمادہ ہو جاتے ہیں یہ سب ٹھیک ہے۔ لیکن میں اوس پبلک ورکر سے اوس ہمدرد سے جو اوس مصیبت زدہ کی امداد کے لئے آمادہ ہو کر آیا ہے اور اوس کی وکالت کر رہا ہے یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا اوس نے ایک جج (Judge) کی حیثیت سے اون واقعات کو سنا ہے کیا وہ اس سے مطمئن ہے کہ اس میں صداقت ہے۔ کیا اوس نے اپنے طور پر انکوائری (Enquiry) کر لی ہے۔ اگر اوس نے ان سارے مراحل کو طے کر لیا ہے اور وہ اوس کی بے گناہی کا یقین رکھتا ہے تو پھر میں یقین دلاتا ہوں کہ ضرور اون کی وکالت کا لحاظ ہوگا۔ اور مجھے بھی اعتماد ہوگا کہ ایک آنریبل ممبر ہیں انہوں نے خود اپنے طور پر انکوائری کر لی ہے اور وہ اس سے مطمئن ہو کر یہاں آئے ہیں تو یقیناً وہ سب گناہ ہوگا۔ لیکن حقائق پر غور کئے بغیر، حالات کا غیر جانبداری کے ساتھ مشاہدہ کئے بغیر، معاملہ کی تحقیق و تصدیق کئے بغیر محض کسی کے کہنے سننے پر آپ اوس کی وکالت کریں،

اوس کی شکایت کو ہوم منسٹر کے پاس یا چیف منسٹر کے پاس پہنچا دیں اور کہیں کہ اس پر بھروسہ کیا جائے تو میں صاف صاف کہتا ہوں کہ اس پر میں تیار نہیں ہوں۔ البتہ میں آپ کو اطمینان دلانا چاہتا ہوں کہ اگر کوئی ایسی چیز ہو جس سے خود آپ مطمئن ہو چکے ہوں اور اس کا ثبوت آپ کے پاس ہو کہ واقعی کوئی بے گناہ ہے تو ضرور اس کا لحاظ کیا جائے گا۔ میرے پاس جتنے ریپریزنٹیشن (Representations) آئے ہیں ان میں بہت تھوڑے ایسے ہیں کہ جن میں خود اپنے طور پر کوئی انکوائری (Enquiry) کی گئی ہو۔ اگر ایسے کیس آئے ہیں تو میں نے خود انکوائری کرائی ہے ایک نہیں دو دو تین تین مرتبہ انکوائری کرائی گئی ہے لیکن ہر کیس میں تو اس طرح سے نہیں کیا جا سکتا۔ کہیں کسی موقع پر غلط کام ہوا ہے تو میں نے فوری ایکشن (Action) لیا ہے لیکن اس کی چرچا نہیں کی۔ کام کر کے ڈھول نہیں پیٹا۔ یہ ڈنکا نہیں بجایا کہ ہم نے نہ کیا وہ کیا۔ اس طرح کرنے سے دوسری طرف جو اثر ہوتا ہے اس کا بھی لحاظ کرنا ضروری ہے۔ جن کا کردار ٹھیک ہوتا ہے جو امن و امان کے طالب رہتے ہیں ان کو بھی طمانیت دینا ضروری ہوتا ہے۔ یہاں تو سب کو یکجا لا کر عام طور پر الزامات لگائے جاتے ہیں۔ اس طرح کا عمل رہا تو کوئی پولیس ڈپارٹمنٹ میں نوکری کرنا پسند نہیں کریگا۔ میں خاص طور پر لیڈرس آف دی اپوزیشن سے کہوں گا کہ اس کو پارٹی کوئسٹن (Party Question) نہیں بنانا چاہئے۔ دراصل یہ پارٹی کوئسٹن نہیں ہے۔ اڈمنسٹریشن (Administration) کی افیشینسی (Efficiency) کو بڑھانا جس طرح اس طرف کی پارٹی کا کام ہے اسی طرح آپ لوگوں کا بھی کام ہے۔ اپوزٹ سائیڈ (Opposite side) میں بیٹھنے والوں کا بھی کام ہے کہ وہ اڈمنسٹریشن کی افیشینسی کو بڑھانے کی کوشش کریں۔ اس بارے میں دونوں کو ایک ساتھ کوشش کرنی چاہئے۔ یہ نہ کریں اور بلاڈنڈ چارجس (Blind charges) لگائیں تو میں کہوں گا کہ ڈی مارالائیز (Demoralise) کرنے کے مترادف ہوگا۔ ممکن ہے کہ آج جو ٹریڈری بنچس پر بیٹھے ہوئے ہیں وہ کل اپوزیشن میں آجائیں اور جو اپوزیشن میں ہیں وہ ٹریڈری بنچس پر آجائیں ایسی صورت میں آپ کو اسی مشنری سے کام لینا پڑیگا۔ قانون تو یکدم آپ بدل نہ سکیں گے۔ اسی قانون کے تحت اڈمنسٹریشن کو چلانا پڑیگا۔ یہ تو نہیں ہوگا کہ چین میں جس طرح یکدم مشنری کو بدل دیا گیا ویسا ہی یہاں بھی بدل دیا جائے۔ آپ پر لازم ہوگا کہ اسی مشنری سے کام لیں جیسا کہ ہم نے لیا ہے۔ پھر اوس وقت کیا ہوگا؟ ایک آنریبل ممبر آف دی اپوزیشن نے کہا کہ پی۔ ڈی۔ ایف کے لوگوں کو ملازمت میں نہیں لیا جاتا میں اون آنریبل ممبر کے حلوامات کے لئے کہتا چاہتا ہوں کہ کئی لوگوں نے شکایت کی کہ کانگریس کے اسٹرگل (Struggle) میں جن لوگوں نے حصہ لیا ہے اون کو ملازمت میں نہیں لیا جاتا یہ کیوں؟ لیکن وہ کیا جانتے ہیں کہ اگر کوئی پالیٹکس (Politics) میں آجائے تو پھر وہ گورنمنٹ کے اڈمنسٹریشن کے کام کا نہیں رہتا۔ یہ فنڈامینٹل چیز ہے کہ وہ اڈمنسٹریشن

(Administration) کے لئے بالکل ان فٹ (Unfit) ہوتا ہے۔ یہ ایک مانا ہوا پرنسپل (Principle) ہے۔ ہمیں ڈس آنسٹی (Dishonesty) اور کرپشن کے خلاف فائٹ اوٹ (Fightout) کرنا ہے ہمیں افیشینسی کو بڑھانا ہے۔ ڈیٹرمینیشن (Determination) کے ساتھ سوچنے کی ضرورت ہے۔ اگر مجموعی طور پر ایک لائٹی سے ہانکنے کی کوشش کی جائے تو اس کے برے اثرات سرویس پر ہومے بغیر نہیں رہ سکیں گے۔ بار بار یہ کہنا کہ سرویس ایفکٹیو (Effective) نہیں ہیں یہ چیز کچھ ٹھیک نہ ہوگی۔ میں اون آرڈرل ممبرس کو جو اوس طرف بیٹھے ہوئے ہیں دعوت دینا ہوں کہ وہ سنجیدگی کے ساتھ ان امور پر غور کریں۔ اپنے کہنے کے طریقے کو بدلیں۔ اپنی باتوں کے انداز کو بدلیں۔ جب آپ کو ڈپارٹمنٹس پر شبہ ہے اور حکومت کے عمل پر اعتراض ہے تو میں پہچھتا ہوں کہ عدالت میں کیوں نہیں جاتے تو اس بات پر چڑ جاتے ہیں اور کہا جاتا ہے کہ عوام کو عدالت کا راستہ بتایا جاتا ہے۔ پھر میں کونسا راستہ بتاؤں۔ پولیس کا کوئی شخص انکوٹیری کرنے کے لئے جاتا ہے تو آپ کہتے ہیں کہ وہ تو سب ایک جھاڑ کے پتے ہیں۔ ظاہر ہے کہ آپ کو ان پر اعتماد نہیں ہے۔ اور نہ اعتماد ہو سکتا ہے۔ بعض مرتبہ کہا جاتا ہے کہ پولیس والوں نے فلاں فلاں جرم کا ارتکاب کیا ہے، وہ جرائم قابل دست اندازی ہیں۔ میں جب انوسٹی گیشن (Investigation) کرانا ہوں تو وہ صحیح ثابت نہیں ہوتے اور آپ کو اس پر بھروسہ نہیں ہوتا۔ اب کیا کیا جائے۔ اس پر میں کہتا ہوں کہ عدالت کا دروازہ کھلا ہوا ہے جائے استغاثہ کیجئے۔ اگر ثبوت موجود ہے تو پریشانی کی کوئی وجہ نہیں ہے۔ یہی راستہ ہو سکتا ہے جو عوام کو میں دکھا سکتا ہوں۔ آج عدالتیں اگریکیٹیو گورنمنٹ کے ماتحت نہیں ہیں۔ یہاں یہ بات اطمینان بخش ہے کہ پہلے ہی سے عدلیہ عاملہ سے الگ ہے۔ پھر بھی اوس زمانے کی گورنمنٹ کے عدلیہ پر ان ڈائرکٹلی (Indirectly) پریشر (Pressure) ہو سکتا تھا لیکن آج ایسے بھی اسباب نہیں ہیں۔ ہائی کورٹ کے جس کو اس کی ضرورت نہیں ہے کہ وہ ہمارے پاس آکر خوشامدہ کریں۔ وہ سپریم کورٹ کے تحت ہیں۔ میں یہ ماننے کے لئے تیار نہیں ہوں کہ وہ اپنی ذاتی مرضی یا حکومت کے دباؤ سے جو چاہیں کر سکتے ہیں۔

ایک مرتبہ اسمبلی میں خون آلود کپڑے پہنچانے کی کوشش کی گئی تھی میں نے اوس وقت بھی یہ کہا تھا کہ جب آپ کے پاس اتنا ثبوت موجود ہے تو عدالت میں کیوں نہیں جاتے۔ جب آپ وہ کھلا ہوا راستہ اختیار نہیں کرتے تو ہم یہ سمجھنے پر مجبور ہیں کہ آپ کے پاس کوئی ثبوت نہیں ہے خالی باتیں ہیں۔ کہا جاتا ہے کہ ایک غریب آدمی کہاں سے شہادت لاسکتا ہے۔ لیکن جب آپ یہ کہتے ہیں کہ فلاں آدمی اچھا نہیں ہے تو اس پر کیسے بھروسہ کر لیا جائے۔ بہت سے لوگ اس طرح کہتے ہیں کہ ہم پر بھروسہ کیا جائے لیکن میں پہچھتا ہوں کہ آپ نے بھی اس کی صداقت کا کچھ اطمینان کر لیا ہے یا نہیں؟ اگر آپ نے اطمینان کر لیا ہے تو کیا مواد ہے؟

کیا ثبوت ہے کہ وہ گنہگار نہیں ہے؟ یا اگر آپ پولیس بر الزام لگاتے ہیں تو آپ کے پاس کیا ثبوت ہے کہ وہ مورد الزام قرار دینے کے قابل ہے۔ اگر مجھے ان امور کا اطمینان نہیں دلا سکتے تو میں مجبور ہوں۔

کریپشن (Corruption) کے بارے میں بھی بہت کچھ کہا گیا ہے۔ تفصیلات نو آب کے سامنے پیش کرنے کا موقع نہیں ہے لیکن صرف اس قدر کہوں گا کہ یہاں جو ٹریبیونل (Tribunal) قائم ہے اس کے ذریعہ جو مقدمات فیصل ہوئے ہیں ان میں ۱۳ گزیٹیڈ آفیسرس اور (۸) نان گزیٹیڈ اس طرح جملہ (۲۱) اشخاص ڈسمس (Dismiss) ہرچکے ہیں۔ ایک آئربیل ممبر نے دریافت کیا کہ انٹی کریپشن (Anti-corruption) کا کیا کام ہوا ہے۔ اس نعلق سے میں کہوں گا کہ انٹی کریپشن کمیٹن کی جو رپورٹ آئی ہے اس میں کئی چیزیں پیش کی گئیں ہیں۔ انکی سفارشات کی جانچ کرنے کی ضرورت ہے۔ وہ مسئلہ کیا بینٹ (Cabinet) میں آیا ہے۔ اسمبلی کے اجلاسوں کی وجہ سے وقت نہیں سلا کہ اس پر ڈسکس (Discuss) کیا جائے۔ مجھے امید ہے کہ بہت جلد اس مسئلہ کا تصفیہ ہو جائیگا۔ ہم نے اس کے لئے گنجائش رکھی ہے کہ انٹی کریپشن برانچ (Anti-corruption Branch) کو وسیع کیا جائے۔

سی۔ آئی۔ ڈی۔ کے سلسلے میں بھی کہا گیا۔ کمیونسٹ آرمڈ اسٹریگل (Communist Armed Struggle) کے بند ہونے کے بعد، مختلف لوگوں نے خلاف قانون جو آرس رکھے تھے اونکو برآمد کرنا کوئی معمولی کام نہ تھا۔ یہ کام سی۔ آئی۔ ڈی کی مدد ہی سے کیا گیا ہے۔ جو آرس برآمد ہوئے ہیں انکی تفصیل یہ ہے۔

ARMS

| | |
|-----------------------|----|
| .333 rilles | 20 |
| B. L. Guns | 2 |
| Bombs | 2 |
| B. L. Revolvers | 6 |
| B. L. Pistols | 1 |
| M. L. Pistols | 4 |
| Sten guns | 2 |
| Italian rifles | 1 |
| Winchester rifle | 1 |
| Repeating rifle | 1 |
| .410 automatic pistol | 1 |
| Revolvers | 4 |
| M. L. guns | 17 |
| Swords | 13 |
| Spear | 1 |
| Sub-machine gune | 1 |
| Hand-gune | 1 |
| Tommy cartridges | .. |

یہ اس سال کی تعداد ہے۔ اس سے پہلے کے بہت سے آرسس ہیں مین صرف سی - آئی۔ ڈی کی طرف سے جو کام ہوا ہے.....

شری کے۔ ایل۔ نرسمہا راؤ۔ یہ سب واپس کئے ہوئے آرسس کی تعداد تو نہیں ہے۔

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ اون کا حساب الگ ہے۔ میں یہ کہہ رہا ہوں کہ خفیہ طور پر جن لوگوں نے ہتھیار اپنے قبضے میں رکھے تھے اون کو سی۔ آئی۔ ڈی نے برآمد کیا ہے۔ میں نے اس کا حوالہ اس لئے دیا کہ حالات سے آریبل ممبرس باخبر رہیں۔ اور یہ اعتراض کیا گیا کہ سی۔ آئی۔ ڈی یہ دریافت کرتی پھرتی ہے کہ آریبل ممبرس کہاں رہتے ہیں کیا کرتے ہیں۔ ظاہر ہے کہ پولیشیکل پارٹیز کیا کام کرتی ہیں وہ دیکھتی ہے۔ ہر ایم۔ ایل۔ اے کے بارے میں انکے پاس ریکارڈ رہتا ہے۔ منسٹروں کے بارے میں بھی وہ مواد رکھتے ہیں۔

یہ کیوں سمجھا جا رہا ہے کہ کسی خاص پارٹی.....

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے: جس तरह अबतक आपने अपने पुलिस डिपार्टमेंट में अँटी कम्युनिस्ट ब्रँच रखी है, वैसे ही अँटी काँग्रेस, अँटी हिंदुमहासभा, अँटी सोशलिस्ट क्या अँसे भी ब्रँचस रखी गयी हैं?

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ اگر آپ وہ چیزیں بھول جائیں تو معلوم ہوگا کہ جو کچھ بھی ہو رہا ہے معقولیت کے ساتھ ہی ہو رہا ہے۔ آپ آج کے زمانے کی طرف دیکھئے.....

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے: जिस तरह पहले हालात में अँटी कम्युनिस्ट ब्रँच सी. आय. डी. में अलग रखी गयी थी, वैसे अब रखने की जरूरत नहीं है।

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ مجھے افسوس اس کا ہے کہ آریبل ممبر نے غور سے نہیں پڑھا۔ صفحہ ۱۱۱ پر دیکھئے۔ اینٹی کمیونسٹ اسکیم اس زمانے میں تھی جب کہ آپ نے آرماڈریولٹ (Armed revolt) کیا تھا۔ جب کبھی ہوگا اس کے.....

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے: जो बजट हमारे सामने पेश किया गया है उसके पेज नंबर ३४६ पर अँटी कम्युनिस्ट ब्रँच के लिये आज भी खर्चा बताया गया है। मैं यह समझता हूँ कि आज भी खुस ब्रँच पर अलग तीर पर खर्चा किया जा रहा है।

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ وہ اس وقت کے حالات کے لحاظ سے تھا۔

شری. ترند (کاروان): जो अन सोशल अलिमेंट्स (Unsocial Elements) हैं उनके खिलाफ अलग ब्रँच रखना पड़ता है। और बराबर सी. आय. डी. की निगरानी उनपर रहती है।

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے: आज के हालात में अँटी कम्युनिस्ट के तीर पर अलग ब्रँच रखना सँ ठीक नहीं समझता हूँ।

شری داچی شنکر راؤ (عادل آباد)۔ کیا اینٹی آریا سماج اسکیم بھی ہے۔

سری ڈگمبراؤ بندو - وہ سب ہیں جن سے خطرہ ہو سکتا ہے اون کے بارے میں جو رپورٹس سپیا کرنا ہے وہ برابر کام کرتے رہتے ہیں - اور رکھے جاتے ہیں - میں آنریبل ممبرس کو اس جانب توجہ دلانا چاہتا ہوں کہ جب ہمیں پولس بجٹ میں کمی کرنے کی جانب توجہ دلائی جاتی ہے تو دیکھنا چاہئے کہ ہم کن حالات سے گزر رہے ہیں - پاک امریکن پیکٹ (Pak-American Pact) کے بارے میں حکومت ہند کیا کر رہی ہے - ہماری سرحدات پاکستان اور تبت سے ملی ہوئی ہیں - اور حیدرآباد ابک ایسا اسٹیٹ ہے جہاں کمیونسٹ پارٹی نے آرمنڈ ریپولٹ کیا - اور حیدرآبادھی ایسی ریاست تھی جس کی اس زمانے کی حکومت نے گورنمنٹ آف انڈیا کے خلاف آرمنڈ ریپولٹ کیا - اسکو پیش نظر رکھنا چاہئے - اسکے برخلاف آپ کہتے ہیں کہ آرمنڈ فورسز کم کر دیجئے پولیس کے ناکے برخاست کر دیجئے - میں یہ چاہتا ہوں کہ آپ حقیقت پسندی سے کام لیں - میں ضرور اس پر کسی قدر اطمینان کے ساتھ کہنے کے لئے تیار ہوں - شائد آنریبل ممبرس آف دی کمیونسٹ پارٹی یا پی۔ڈی۔ ایف کی شائد یہ مرضی نہ ہو کہ اس قسم کی حرکات کریں - لیکن حیدرآباد میں بہت سے ایسے عناصر ہیں جن کی روک تھام کی جانی ضروری ہے - اور امن قائم رکھنا ضروری ہے - خصوصاً ایسے وقت جب کہ پوری دنیا اور ہمارے پاس بھی ٹنشن (Tension) ہے - یہ خطرہ سے خالی نہوگا کہ ہم فورسز نکال دیں - اگر جرائم کم ہوں تو ہم بٹالینس (Battalions) نکال سکتے ہیں اور خرچہ کم کر سکتے ہیں ہم خود خرچہ کم کرنا چاہتے ہیں - کچھ آنریبل ممبرس نے جو سبیشنس دئے ہیں وہ خود ہمارے سامنے ہیں - اس سے بھی مزید خرچہ کم کیا جا سکتا ہے - لیکن ہم ایسی کوئی چیز کرنے سے مجبور ہیں جسکی وجہ سے امن کو خطرہ ہو - میں اس سے بڑھکر ہاؤز کا ٹائم لینا نہیں چاہتا - میں اسپیکر صاحب کا مشکور ہوں کہ انہوں نے مجھے کچھ ٹائم زیادہ دیا - اور میں ہاؤز کا بھی مشکور ہوں -

*Demand No. 8—Charges on account of Motor Vehicles Acts,
—Rs. 16,22,000.*

State Transport Authority (District Inspectors).

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the State Transport Authority in the City.

Shri Annajirao Gavane (Parbhani) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Policy of Government in respect of Road permits and amenities to passengers.

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Taxation on vehicles.

Shri Syed Akhtar Hussain (Jangaon) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Offices of the Motor Vehicles Inspectors in the Districts.

Shri Gopidi Ganga Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of R.T.A. in the Districts.

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The question is :

“ That a sum not exceeding Rs. 16,22,000 under Demand No. 8 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

*Demand No. 16—General Administration C—Elections—
Rs. 5,85,500.*

Govt's. failure to disburse the Expenses incurred by the village officials during the last general elections.

Shri Gopidi Ganga Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Inadequate arrangements for payment of allowances in connection with elections etc.

Shri P. Vasudev (Gajwel): I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Misuse of funds by the Government in connection with the elections.

Shri Viswanath Rao Soore (Lakshetipet—General): I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Bye-elections.

Mr. Speaker: The question is:

“That the grant under Demand No. 16 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Mr. Speaker: The question is:

“That a sum not exceeding Rs. 5,85,500 under Demand No. 16 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

Demand No. 18.—Administration of Justice —Rs. 43,94,000.

Providing free legal advice to poor litigants.

Mr. Speaker: The question is:

“That the grant under Demand No. 18 be reduced by Rs. 100.”

The motion was negatived.

Speedy and less expensive method of administration of justice.

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 18 be reduced by Rs. 100.”

The motion was negatived.

Administration of the Judicial Department.

Shri Sharangowda Inamdar : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Delay in disposal of Cases

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 18 be reduced by Rs. 100.”

The motion was negatived.

Working of the Judicial Department.

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 18 be reduced by Rs. 100 ”.

The motion was negatived.

Inadequate Legal aid to the accused in capital cases and protection against harrassment of the witnesses by the Police.

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 18 be reduced by Re. 1 ”.

The motion was negatived.

Reorganisation of Courts and the Policy of Languages therein

Shri Abdur Rahman : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Regional and Urdu languages in the Courts

Shri Annajirao Gavane : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Delay and heavy expenses in administering Justice.

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 18 be reduced by Rs. 1 ” .

The motion was negatived.

Mr. Speaker : The question is :

“ That a sum not exceeding Rs. 48,94,000 under Demand No. 18 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh . ”

The motion was adopted.

*Demand No. 19—Jails and convict settlements—Rs. 25,82,600.**Jail Reforms.*

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100 ” .

The motion was negatived.

Jail Reforms with special reference to the need to make Jails self-supporting

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100 ” .

The motion was negatived.

Inefficiency and maladministration in Jail Administration of the State

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100 ” .

The motion was negatived.

Appointments, duties and responsibilities of administrative officials in the Jail Department

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100 ” .

The motion was negatived.

Jail industries and measures for their Development.

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100 ” .

The motion was negatived.

Maladministration and implementation of the reforms

Mr. R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Dept.

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100 ” .

The motion was negatived.

• *Conditions of Jail Industries*

Shri P. Vasudeo : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Conditions of prisoners in Jails and matters Pertaining to remissions and Parole

Shri A. Ramchandra Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Misadministration in Jails in respect of persons under remand and in lock-ups

Shri Gopidi Ganga Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of Jails and Convict Settlements

Shri A. Ramchandra Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The question is :

“ That a sum not exceeding Rs. 25,82,000 under Demand No. 19 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending the 31st day of March 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh ” .

The motion was adopted.

*Demand No. 20—Police—Rs. 3,29,39,000
Economy in Police Expenditure*

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 75,00,000 ”.

The motion was negatived.

Shri V. D. Deshpande : I demand a division, Sir.

The House then divided.

Ayes.....49

Noes .. 77

The motion was negatived.

Reduction in Armed Police and Economy in Police Expenditure

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 21,00,000 ”.

The motion was negatived.

Repatriation of Police Officers on Deputation

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 21,000.”

The motion was negatived.

Excesses of Police on the Public

Shri M. Buchiah : (Sirpur) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Malpractices of Police in the day to day administration

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100 ”.

The Motion was negatived.

Malpractices and heavy corruption in District Police Force.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100 ”.

The motion was negatived.

Working of the Police Motor Transport Section.

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of Government to eradicate and to raise the standard of efficiency of the District Police Force.

Shri Ankush Rao Ghare (Partur) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Railway Police

Shri Ankush Rao Ghare : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The New organization of the City Police

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House, to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The establishment charges of the City Police, Hyderabad.

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion, was by leave of the House, withdrawn.

Working of the Police Training Centre at Bidar and Amberpet

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was by leave of the House, withdrawn.

The working of the Anti-corruption Branch.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100 .”

The motion was negatived.

The Administration of the Police Department

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100 .”

The motion was negatived.

The amalgamation of H.S.R.P. with the Armed Police Force

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

*The New Organization of the City Criminal Investigation
Branch.*

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The recruitment of Policy of the Government in the Department.

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Reorganization of the District Police.

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The policy of the Department in curbing civil liberties in the name of maintenance of law and order and detection of Crime.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100 .”

The motion was negatived.

Reorganization of the Department

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100 .”

The motion was negatived.

Working of the District Criminal Investigation Department.

Shri Bhagwan Rao Boralkar : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the village Patels

Shri Bhagwan Rao Boralkar : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The working of District Subordinate Officers

Shri Bhagwan Rao Boralkar : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of the Police to control the activities of unsocial elements.

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100. ”

The motion was negatived.

The necessity of associating the public with the Police by the introduction of a system of compulsory police training in schools and colleges, volunteer assistants, home guards, etc., for the preservation of internal peace

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100. ”

The motion was negatived.

Salaries, T.A. and D.A. paid to the Police Officers and Constables

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1 ”.

The motion was negatived.

Taking of forced labour by Police

Shri R. B. Gurumurthy (Khammam General): I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure to release Political Prisoners

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1. ”

The motion was negatived.

Use of Police Force to put down Strikes and settle Land Disputes

Shri K. L. Narsimha Rao : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of City Police and economy in their expenditure

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The Motion was negatived.

Working of Police Station Houses in Karimnagar district and instituting of false cases on public workers in Jagtial and Peddapalli taluqs

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Repression and instituting false cases by Police in Bhir, Osmanabad and Nanded districts.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re 1.”

The motion was negatived.

Police repression and institution of false cases in Nalgonda

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re 1.”

The Motion was negatived.

Repression in Telangana

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1 ”.

The motion was negatived.

*Misuse of powers and corruption by Police Officers in
districts*

Shri Viswanath Rao Soore : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Closing down of Armed Police camps in the Villages in Telangana

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1. ”

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

*Redution in numberof police-subdivisions and 81 Police station
houses*

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1. ”

The motion was negatived.

Reduction and working of Seth Sendhis and Police Patels

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1. ”

The motion was negatived.

Working of Criminal Settlements

Shri Uppla Malsur (Suryapet-Reserved): I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of Police Force in Warangal district

Shri B. Krishniah (Koammam-General): I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Government's failure to give proper training to the Police Officers in Detecting Crimes

Shri K. Ananth Reddy: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Rash and rude attitude of the Police officers towards Public

Shri K. Venkat Rama Rao: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The necessity of enforcing strict discipline in the low paid Officers and Police Constables

Mr. Speaker: The question is:

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was, negatived.

Economy in Railway Police

Mr. Speaker: The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Economy in and working of the C.I.D.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Failure of the “X Branch” to control corruption

Shri B. Krishniah : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Scales of pay, housing conditions and recruitment and training of Police Forces

Shri Pendem Vasudev : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of “Police Prosecution Officers”

Shri A. Lakshminarsimha Reddy (Wardhannapet) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Harrassment of Harijans by Police

Shri P. Lakshminah (Nalgonda-Reserved): I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Behaviour of Police Officers

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

*Malpractices and High-handedness of the Village and district
Force*

Shri Viswanathrao Soore : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Police Department in Districts and Rural Areas

Shri Viswanathrao Soore : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Necessity of efficient Police Force

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Police Department

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Necessity of purchase of Arms and Ammunition

Shri Annajirao Garwane : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Administration of the Police Department

Shri Syed Hassan : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Corruption and High-handedness of the District Police Officers.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Failure of the District Police to maintain Law and Order

Shri Bhujang Rao (Jintur) : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The necessity of opening New Police Station houses in Telengana

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Mr. Speaker : The question is :

“That a sum not exceeding Rs. 3,29,39,000 under Demand No. 20 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

*Demand No. 61—Receipt from R. T. D.,—Working expenses—
Rs. 2,53,88,000*

Working of the R.T.D.

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House,

Failure of the Department to provide amenities to the Public

Shri Sharangowda Inamdar : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

High rates of transport and corruption in the Department

Shri M. Buchiah : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Necessity of opening new bus routes in the Districts

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Necessity of having an efficient inspection staff in the Department

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Reduction in the Bus fares to I. G. 6 pies per mile.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Association of the public with the R. T. D. Administration through an Advisory Committee as in the Railway Department

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Inadequate number of buses on the existing routes and opening of new routes

Shri Syed Akhtar Hussain : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Granting of Bonus to R.T.D. Employees.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Store purchases by the R.T.D. and the need for an Investigation Committee

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Over-loading of busses and various inconveniences to the passengers regarding shelter, drinking water, urinals, etc.

Mr. Speaker : The Question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Corruption in the Road Transport Department.

Shri Viswanathrao Soore : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Amenities to the staff and their general working conditions.

Shri Ch. Venkatram Rao (Karimnagar) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of the Government to give bonus to the R.T.D. Workers.

Mr. Speaker : The Question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Mr. Speaker : The Question is :

“That a sum not exceeding Rs. 2,53,88,000 under Demand No. 61 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

*Demand No. 75—Evacuee Department—Rs. 1,58,300.**The Working of Evacuee Department.*

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of Evacuee Department to speedily settle Evacuee disputes

Shri Abdur Rahman : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Policy of the Government regarding Evacuee Property

Shri Viswanath Rao Soore : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Arrangements made by Government to run the M.C.S. Farm in Nizamabad.

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The Question is :

“That a sum not exceeding Rs. 1,58,300 under Demand No. 75 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

Demand No. 80—Grant for Rehabilitation of displaced persons before, during and after Police Action—Rs. 2,50,000.

Rehabilitation of displaced persons.

Mr. Speaker : The Question is :

“That the grant under Demand No. 80 be reduced by Rs. 100.

The motion was negatived.

Working of the Rehabilitation Department.

Shri Annajirao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Rehabilitation Department.

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mismanagement of the Rehabilitation Fund.

Mr. Speaker : The Question is :

“That the grant under Demand No. 80 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Rehabilitation of displaced persons.

Shri K. Venkatrama Rao: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The Question is :

“That a sum not exceeding Rs. 2,50,000 under Demand No. 80 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

Demand No. 81—Welfare of ex-Criminal Tribes in the State—Rs. 55,000.

Inadequate funds provided for the welfare of ex-Criminal Tribes.

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Neglect of welfare of the ex-Criminal Tribes in the State.

Shri Uppala Malsur : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The Question is :

“That a sum not exceeding Rs. 55,000 under Demand No. 81 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

*Demand No. 93—Capital Outlay on Road Transport Schemes
outside the Revenue Account—Rs. 36,22,000*

Capital Outlay on Road Transport Schemes in Karnatak

Shri Sharangowda Inamdar : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of Government to establish a bus depot in Parbhani district.

Mr. Speaker : The Question is ;

“ That the grant under Demand No. 93 be reduced by Rs. 100. ”

The motion was negatived.

Capital Outlay on Road Transport Scheme

Shri V. D. Deshpande : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Necessity of plying buses in Parbhani district.

Shri Bhujang Rao : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The Question is :

“ That a sum not exceeding Rs. 36,22,000 under Demand No. 93 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh. ”

The motion was adopted.

*The House then adjourned till Half Past Two of the Clock on
Wednesday, the 17th March, 1954.*

1

1

1